शैल-सूत्र

ISSN 24558966

वर्ष 15 अंक : 2, अप्रेल–जून 2022

मलयालम अंक

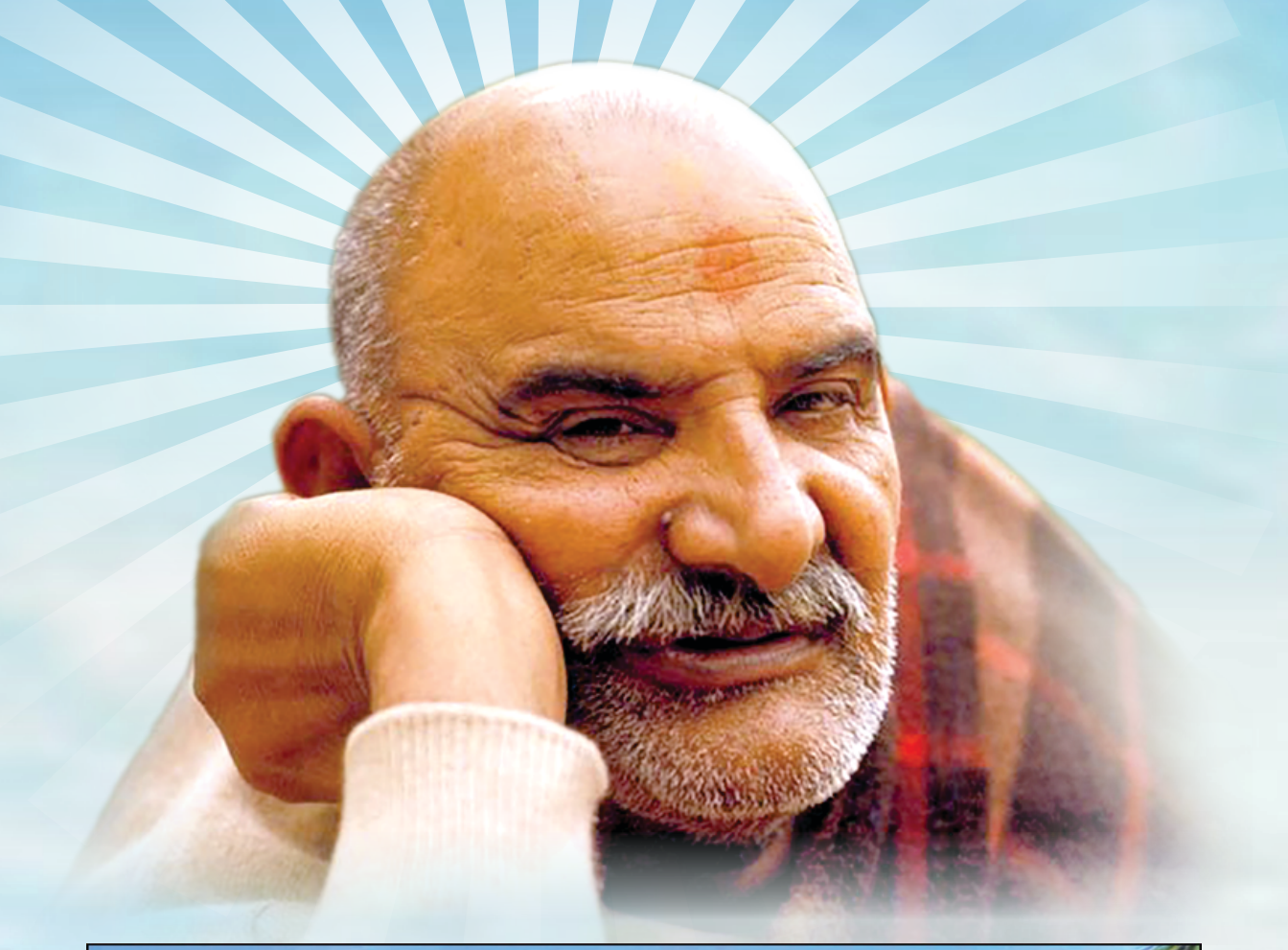

GREEN WORLD PUBLIC SCHOOL
SHAKTI FARM (UDHAM SINGH NAGAR)
Mob.: 9412945360, 8433437600
10th TOPPER
12th SCIENCE TOPPER
Saksham Singh
95.4%
Akansha Agrawal
89.8%
Ayushi Sheel
88.2%
Mithun Sarakr
Physical Edu. 96
English-90, Physics-91
Harneet Kaur
Physical Edu-96
Eng.-95
Sourav arya
Physical Edu-95
IIT Jee Mains
Priya Mehta
English - 90
Himanshu Sahni
Physical Edu-96
OTHER QUALIFICATION
Vaibhav Singh
Selected for MBBS Haldwani
Arjun Ray
Inspire Award 2020-21
Sourav Singh
Inspire Award 2020-21
Chandan Devnath Inspire
Award 2019-20
Abhay Dev Inspire
Award 2019-20
Gopal Sardar
Selected Sainik School Kalibanga Rajasthan
Vivek Singh
Selected for PO SBI
KILKAARI UNIQUE PLAY SCHOOL
Green World Educational Society Shakti Farm Uttarakhand
has brought a Unique Play School KILKAARI
सितारगंज, शक्तिफार्म क्षेत्र में अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित Play School की व्यवस्था

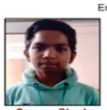

इस अंक के अतिथि सम्पादक केरल के विद्वान सेवा निवृत्त प्रो. डॉ आरसू हैं

सम्पादन परामर्श

डॉ. प्रभा पंत-09411196868

सम्पादक

आशा शैली -9456717150, 7078394060/ 7055336168,

सह सम्पादक/समन्वयक

चन्द्रभूषण तिवारी

-9415593108/8707467102

सह सम्पादक/शोध प्रबंधक

डॉ. विजय पुरी-09816181836

बालोद्यान

पवन चौहान-09805402242

विधि-परामर्श

प्रदीप लोहनी-09012417688

प्रचार सचिव

डॉ. विपिन लता 9897732259

पत्रिका को अक्तूबर-दिसम्बर 2020 अंक में हिमाचल कला संस्कृति एवं भाषा अकादमी के आर्थिक सहयोग के लिए सम्पादक मण्डल आभारी है।

सम्पादकीय कार्यालय एवं पत्र व्यवहार का पता-

-साहित्य सदन, इन्दिरानगर-2

पो.-लालकुआँ, जिला-नैनीताल (उत्तराखण्ड) पिन-262402

मो.-09456717150, 7078394060, 7055336168,

Email-asha.shaili@gmail.com

मूल्य-एक प्रति 25/-,
वार्षिक 100/-,
आजीवन 1000/-,
संरक्षक सदस्य 5100/-

संरक्षक सदस्य:-

डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र-09412992244, शिव बाबू मिश्र -09412750094, अर्श अमृतसरी-09716317725, डॉ. नवीन कुमार श्रीवास्तव- 09212444369, प्रकाश चन्द्र लोशाली -9456114762, राजकुमार जैन 'राजन' 09828219919, केशव कुमार पटेल-9919352975, डॉ. विमला व्यास-9452780735, डॉ. शीला त्रिपाठी-9453257279, बृजेश चन्द्र श्रीवास्तव-9451023854, अरविंद कुमार यादव -9125628814, श्रीमती ममता पाण्डेय-9453770833, मौजी लाल पटेल-9936380977, ए.के. पवार-9810059715, डॉ. ए.जे. अब्राहम- 9447375381, **डॉ. श्रीमती उषा मिश्रा-9450610608, श्री चंदन प्रताप सिंह-7317559999, श्री सर्वेश सिंह शौनक-7007164024, श्री रूप चन्द शर्मा-9935353480, डॉ. मदन मोहन ओबेराय,** राम मूरत चौहान-**9415885622,** डॉ. नीतिका नैन-9536379106,

परामर्श:-

डॉ. श्यामसिंह 'शशि'-09818202120,
डॉ. धनंजय सिंह-09810685549
डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक' -07417619828

विशेष सहयोगी

पंकज बत्रा (लालकुआँ) -9897142223, निर्मला सिंह बरेली, -9412821608 सत्यपाल सिंह 'सजग' (लालकुआँ) -09412329561, राधेश्याम यादव -80066722221, दर्शन 'बेज़ार' (आगरा) -9760190692, डॉ. राकेश चक्र (मुरादाबाद) -9456201857, सूरत भारती, (हि.प्र.) -09418272934 कृष्णचन्द्र महादेविया, (मगडी हि.प्र.) -09857083213 , डॉ. वेदप्रकाश प्रजापति 'अंकुर' (हल्द्वानी) -9412943042, स्नेहलता शर्मा (लखनऊ)-9450639976 सुषमा भण्डारी, (दिल्ली)-09810152263, निरुपमा अग्रवाल (बरेली) -9412463533, आलोक भूषण त्रिपाठी-8423099899

1.शैल-सूत्र में प्रकाशित रचनाओं के प्रति सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

2.लेखक अपने विचार प्रेषण के लिए स्वतन्त्र है।

3. शैल-सूत्र परिवार के सभी सदस्यों के पद अवैतनिक हैं।

4.प्रत्येक कानूनी विवाद का निपटारा पत्रिका के सम्पादकीय कार्यालय का विधि क्षेत्र होगा।

भारतीय स्टेट बैंक शाखा तरुवाला, पाँवटा साहब (हि.प्र.) कोड सं. IFSC; SBIN 0000703 खाता सं 30116574461 में जमा करायें।

स्वामी, प्रकाशक, तथा मुद्रक आशा शैली (इन्दिरा नगर-2, लालकुआँ, जि. नैनीताल) ने एच.जे. इंटरप्राइजेज़, खानचन्द मार्केट, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित कराया। सम्पादक आशा शैली (इन्दिरा नगर-2, लालकुआँ, जि. नैनीताल-262402)

विधा	लेखक	पृष्ठ
अतिथि सम्पादक	डॉ आरसू (सेवानिवृ त्त प्रोफेसर)	
वैचारिकी:-		
धरोहर:-स्त्रियों का शबरीमला आट्टुकाल मन्दिर	-डॉ शीला गौरभि	7
लेख:- केरल के शास्त्रीय नृत्य.....	-डॉ. शीबा शरत एस.	13
कहानी:-ऑक्सीजन: अम्बिकासुतन मंगाट	**-अनुवाद: डॉ सुप्रिया पी.**	17
तुझमें समाते हुए: रेखा के,	-अनुवाद: डॉ. श्रीजा प्रमोद	19
साक्षात्कार:- इंसान केवल कविता से नहीं जीते (मलयाली सिने गीत लेखक रफीख अहमद से विजय सी.एच. का)	-अनुवाद: डॉ. शीला कुमारी	23
व्यक्तित्व: कुमारन आशान: मलयालम के सुधारवादी कवि	-डॉ. शीना एप्पन	26
कविताएँ: जागृत नारी (मलयालम) मूल: प्रो. विष्णु नंपूतिरी	-अनुवाद: डॉ. शीला गौरभि	29
मछुआ और अइडेंटिटी-जोसफ	-अनुवाद: डॉ नवीना जे नरीतूक्किल	30
गीत: सपनों के संदेसे भेजो	-बृजराज किशोर 'राहगीर'	31
इतना मत कर प्यार बावरी	-रश्मि लहर	31
मौन कितना बोलता है	-गोपाल कृष्ण शर्मा 'मृदूल'	32
सफर चल रहा है अनजाना	-डॉ. रूपचन्द शास्त्री 'मयंक'	32
ग़ज़लें: हीरालाला यादव, विज्ञान व्रत, आशा शैली		33
लता जौनपुरी, हरदीप बिरदी		34
लघुकथायें: अमानत-उर्मिकृष्ण, वामाग्रन्थि-कुसुम पारीक		35
शुक्र है- विजय कुमार,		36
संजीवनी-शोभना श्याम, नई सोच-क्षमा सिसोदिया		37
शोध: भारत में धार्मिक	नालंदा पाण्डेय	38
लघुकथा समय-अंजना छलोत्रे 'सवि'		41
भारत दर्शन:धार्मिक सहष्णुता की मिसाल...	डॉ. शीना एप्पन	42
आलेख: औरंगजेब के सपने और छत्रपति संभाजी का बलिदान	डॉ.उमेश प्रताप वत्स	46
समीक्षा: एक केरलीय इयित्री का स्वर	डॉ आरसू	50

समाज में शख्स बनकर नहीं बल्कि शख्सियत बनकर जियो, शख्स एक दिन विदा हो जाता है लेकिन शख्सियत जिन्दा रहती है। प्रेषक-डॉ. महेंद्र प्रताप पाण्डेय 'नन्द'

सम्पादकीय

अप्रैल-जून 2022

मलयालम साहित्य की हवा और रोशनी

उत्तराखंड की पत्रिका 'शैल सूत्र' का मलयालम विशेषांक प्रकाशित हो रहा है। देवभूमि के रूप में यह पत्रिका प्रसिद्ध है। तीर्थस्थान हरिद्वार और ऋषिकेश यहाँ बसे हैं। नैनीताल, भीमताल, कौसानी जैसे स्थान प्राकृतिक सुषमा के लिए सम्पूर्ण विश्व में जाने जाते हैं। प्रकृति के सुकुमार कवि कहे जाने वाले सुविख्यात रचनाकार सुमित्रानंदन पंत यहाँ पले बढ़े थे और उत्तराखण्ड की पहचान हैं। हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में उत्तराखण्ड का अवदान महत्वपूर्ण है।

पिछले पन्द्रह वर्षों से उत्तराखंड से निरन्तर प्रकाशित 'शैल सूत्र' पत्रिका की सम्पादिका आशा शैली की साहित्यिक सोच का दायरा बहुत विशाल है। सुदूर दक्षिण के राज्य केरल की भाषा मलयालम की हवा और रोशनी की खूबियों को इधर की साहित्यिक रचनाओं के जरिए वे अवगत होना चाहती हैं। इतना ही नहीं उत्सुक हिंदी पाठकों को भी उन्होंने उसके रसास्वादन का मौका प्रदान किया है। यह सम्पादक के साहित्यिक विवेक का द्योतक है। मूल मलयालम भाषी जो हिन्दी प्रदेश में रहते हैं उनको भी जोड़ने का प्रयास सम्पादिका ने किया है। यह उत्तर और दक्षिण को जोड़ने का सार्थक प्रयास है।

इस अंक में दो मलयालम कहानीकारों के भाव संसार से हिन्दी पाठक रूबरू होने का अवसर मिलेगा। कवि रफीक अहमद के साक्षात्कार के सहारे आज की मलयालम कविता की प्रवृत्तियों का परिचय भी उनको मिलेगा। कविवर कुमारन आशान पर केन्द्रित लेख से उनको मलयाली कविता की अंतर्दृष्टि मिलेगी। दर्शन और कविता का संगम जिनकी रचनाओं की खूबी है।

सर्वधर्म समभाव के तीर्थाटन केन्द्र शबरी मला को जानने के लिए भी पाठकों को अवसर प्रदान करना एक उपलब्धि है। टी एस पोन्नम्मा गाँधी युगीन चेतना को आत्मसात करने वाली एक सात्विक कवयित्री हैं। उनकी कविता के आइने में केरल की प्रकृति, संस्कृति और दंतकथाएं छलकती हैं। डॉ शीना एप्पन का सहयोग इस अंक के लिए एक वरदान सिद्ध होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

मेरा मानना है कि अनुवाद भाषाओं को जोड़ने वाला वह पुल है जो किसी भी राष्ट्र की संस्कृति, चिंतन और युग को भी पास-पास लाता है। साहित्यिक पत्रकारिता की विधा इस दिशा में कारगर भूमिका निभा सकती है। 'शैल सूत्र' पत्रिका का मार्ग अनुकरणीय एवं आदरणीय है। भाषा बहुलतावाद के नए आयामों को तलाशने के लिए यह एक मंच प्रदान करता है। घड़े में रखे दिए के समान हमारी कई भाषाएं अंधकार में पड़ी रहती हैं। प्रकाश के सामने दीवारें बनाना विवेकसंगत नहीं होगा। मिलके चलना, मिलके सोचना हमारा रास्ता बनें। उदारचरित लोग ही संस्कृति के संतरी बन सकेंगे।

-डॉ आरसु
पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
कलिकट विश्वविद्यालय, केरल
मोबाइल:9847762021

1. Dr. L.C. Sharma, IIRD Complex,
Bye-pass Road, shanan,
Sanjauli, Shimla-6 (H. P.)
mo. 09418014761
iirdsml@gmail.com

2. अंजना छलोत्रे 'सवि',
द्वारा श्री विजय देशमुख, माधव कालोनी, सोडलपुर रोड, टिमरनी, जिला हरदा-461228 (म.प्र.)
मो. 08461912125
anjana.savi@gmail.com

3. श्री कृष्ण चन्द्र महादेविया
गाँव महादेव, तह. सुन्दर नगर,
मण्डी (हि.प्र.) 175018

4. डॉ. विजय पुरी,
ग्राम पदरा, डा. हंगलोह, त. पालमपुर, कांगड़ा (हि. प्र.) 7018516119, 9816181836

5-श्रीमती शिवा धरावेश,
20/7, दुर्गा कालोनी तरुवाला,
पाँवटा साहिब, जि. सिरमोर-173025 (हि.प्र.)
मो. 08894892999

6. चन्द्रभूषण तिवारी
ग्राम टी.टी.अब्दलपुर, डाकघर हरिसेन गंज, (मऊआईमा) प्रयागराज-212507
मो. 9415593108, 8707467102
cbtiwari04091966@gmail.com

7. दिनेश पाठक 'शशि'
28, सारंग विहार, रिफ़ाइनरी नगर,
मथुरा- (उत्तर प्रदेश) 9412727361,
ईमेल- drdinesh57@gmail.com

8. श्रीमती पूर्णिमा ढिल्लन
फ्लैट नं.-401, बिल्डिंग-5, अशोक अस्टोरिया,
गोवर्धन विलेज, गंगापुर रोड, नासिक-422222
मो. 7767943298

9. केरल
Dr. A. J. Abraham,
ANCHANIYIL A.K.G.
Unichira road,
Changampuzha nagar, post-Kochi-33', Kerala. 9447375381

10- Dr. Sumangala Mummigati
'Chinmay' 4th Cross,
Shreepad Nagar,
Near Rani Chennamma Nagar,
Dharwad, Karnatak.
mo-7619164139

11. डॉ. परमानन्द तिवारी (प्राचार्य)
शास. तुलसी महाविद्याल अनूपपुर,
जिला अनूपपुर (म.प्र.)
मो. 9424931012
Email...hegtdcano@mp.gov.in

प्रयागराज (इलाहाबाद) और हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग-5

-चन्द्र भूषण तिवारी

सुमित्रा नन्दन पंत एक मानवतावादी कवि थे। उन्होंने खड़ी बोली में ही सौंदर्य के साथ प्रगतिशील काव्य रचना की और अपने आलोचकों के सामने कभी नहीं झुके। उनके प्रमुख काव्य-संग्रहों में पल्लव, युगांत, लोकायतन जैसी लोकप्रिय पुस्तकों के नाम हैं। पंत जी, हरिवंश राय बच्चन के प्रिय मित्रों में से थे। उन्होंने बच्चन के साथ संयुक्त रूप से 'खादी के फूल' नामक कविता संग्रह भी प्रकाशित करवाया था। सुमित्रानंदन पंत को प्रकृति का सुकुमार कवि भी कहा जाता है।

पंत जी को पद्मभूषण (1961), ज्ञानपीठ (1968), साहित्य अकादमी और सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार जैसे उच्च श्रेणी के सम्मानों से विभूषित किया गया था।

छायावादी कवियों में सबसे लोकप्रिय स्थान महादेवी वर्मा का है। इनका जन्म फ़र्रुख़ाबाद में सन् 1907 में हुआ था। जीवन में शिक्षा का आरम्भ हुआ ही था कि इनका विवाह कर दिया गया पर महादेवी वर्मा सदा ही एक सन्यासिन की तरह रहीं। यही कारण था कि उन्हें आधुनिक युग की मीरा भी कहा जाता है।

महादेवी वर्मा ने प्रयागराज में क्रास्थ्वेट स्कूल के छात्रावास में रह कर पढ़ाई पूरी की। यहीं पर इनकी मित्रता सुभद्रा कुमारी चौहान से हुई जिन्होंने महादेवी वर्मा को लिखने के लिए बहुत प्रेरित किया। आगे चल कर महादेवी वर्मा ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और फिर प्रयाग महिला विद्यापीठ के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। महादेवी वर्मा इसी विद्यालय की कुलपति भी हो गयी थीं।

महाकवि निराला ने उन्हें 'हिंदी के विशाल मंदिर की सरस्वती' कह कर संम्बोधित किया था। मानवीय भावनाओं को और जीवन की जटिलता को बहुत गहराई से समझने के कारण महादेवी वर्मा छायावाद की प्रमुख कवियत्री के रूप में उदित हुई थीं। साहित्य सेवा के साथ उन्होंने समाज सुधार और स्वतंत्रता आंदोलन की प्रेरणा भी महात्मा गाँधी से ली और उस दिशा में सदैव कार्यरत रहीं।

नारी जीवन से प्रेरित हिंदी की प्रसिद्ध पत्रिका, 'चाँद' का सम्पादन भी महादेवी वर्मा ने ही सन् 1923 से सम्भाला था। हिंदी साहित्य में नारीवाद की नींव भी महादेवी वर्मा ने ही रखी। उन्हीं की कोशिशों का नतीजा था कि भारत में पहली बार महिला कवि सम्मेलन (15 अप्रैल 1933) सुभद्रा कुमारी चौहान की अध्यक्षता में, प्रयाग महिला विद्यापीठ में आयोजित किया गया था।

प्रयागराज की मशहूर साहित्यिक आत्मा की एक झलक महादेवी वर्मा की विख्यात कविता, 'अतृप्त' में देखने को मिलती है। इनकी प्रमुख काव्य कृतियों में नीहार, रश्मि, दीपशिखा, सांध्यगीत और अग्निरेखा जैसे लोकप्रिय संग्रहों के नाम उल्लेखनीय हैं। महदेवी वर्मा का गद्य साहित्य, निबंध लेखन, भाषण और संस्मरण आज भी प्रसिद्ध हैं। महादेवी प्रयागराज के हिंदी साहित्य के स्वर्ण युग की सबसे उज्जवल रश्मि थीं और आने

वाले समय में भी उनके जैसी कवियत्री शायद ही हिंदी साहित्य को दोबारा मिलेगी।

डॉ. राम कुमार वर्मा हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार, व्यंग्यकार और हास्य कवि थे जिनका जन्म सन् 1905 में हुआ था। डॉ. वर्मा एकांकी नाटक लेखन के जनक भी माने जाते हैं। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी विषय में एम.ए. किया और नागपुर यूनिवर्सिटी से हिंदी में शोध कार्य पूरा किया। उसके बाद ये इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अध्यापक रहे और कई वर्षों तक विभागाध्यक्ष का पद भी सम्भाला। इनके 'चित्ररेखा' काव्यसंग्रह के लिए इन्हें हिंदी के देव पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ. वर्मा ने देश-विदेश में भी हिंदी साहित्य के विकास के लिए बहुत काम किया और उसके फलस्वरूप हिंदी साहित्य को पूरे विश्व में ख्याति मिली।

डॉ. वर्मा रहस्यवाद और छायावाद के प्रसिद्ध कवियों में गिने जाते हैं। सन् 1963 में इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया था। डॉ. राम कुमार वर्मा का स्वर्गवास 1990 में, प्रयागराज में ही हुआ था। बनारस में उनका स्वर्गवास हो गया।

प्रयागराज में उनकी स्थापित की हुई सरस्वती प्रेस कई वर्षों तक चली और उनकी 'हंस' पत्रिका भी प्रकाशित होती रही। सन १९३६ में उनकी मृत्यु के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र, श्रीपत राय ने यह कार्य पूरी निष्ठा के साथ सम्भाला और सरस्वती प्रेस के संचालन के साथ-साथ, हंस पत्रिका को नयी दिशा और ऊँचाइयाँ दिलायीं। उनके दूसरे पुत्र अमृत राय ने हिन्दी साहित्य की बहुत सेवा की और आधुनिक कहानीकार के रूप में उभरे। प्रगतिशील साहित्यकारों में अमृत राय एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

-क्रमशः

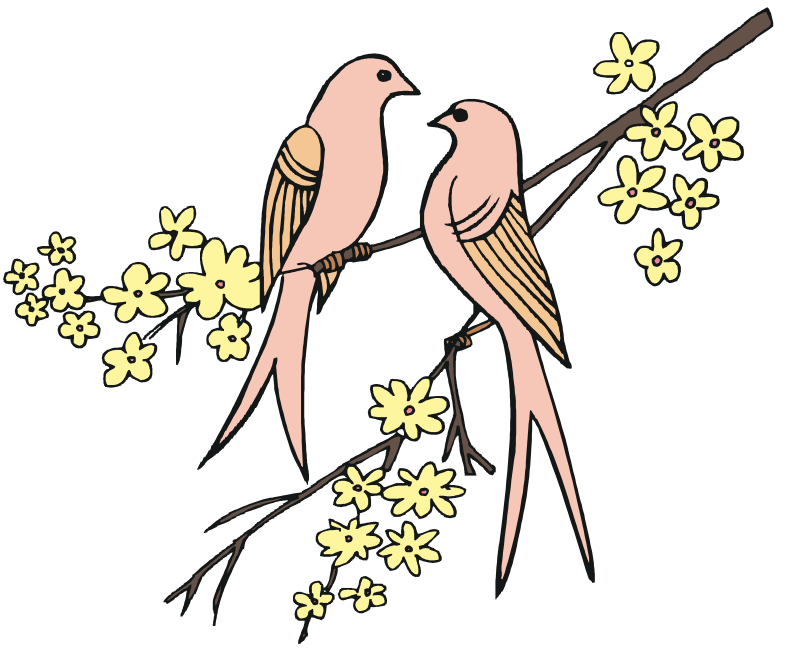

स्त्रियों का शबरीमला आट्टुकाल मन्दिर

–डॉ शीला गौरभि

केरल के दक्षिण प्रांत में स्थित एक मनोहर भू भाग है तिरुवनंतपुरम जिला। अपनी सुंदरता एवं भव्य भवनों से दूसरों को आकर्षित करनेवाली यह जगह केरल राज्य की राजधानी है। तिरुवनंतपुरम शहर की बहुत सारी विशेषताएँ हैं। इसमें सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस जगह पर अनंतपुरी के देवता ऐश्वर्यमयी श्री आट्टुकाल अम्मा विराजित है।

तिरुवनंतपुरम नगर में अनन्तशायी श्री पद्मनाभ स्वामी के तिरुआंगन में दक्षिण दिशा में दो कि.मी. की दूरी पर आट्टुकाल मंदिर स्थित है। इस शहर के बीच में बहने वाली किल्ली नदी के तट पर, मंगल प्रदायिनी, प्रसन्नवदना, आनंदरूपिणी, कल्याणकारिणी, सुंदरांगी, आकर्षिता, पापहरणी, भक्तप्रिया, आश्रितवत्सला, अन्नपूर्णेश्वरी जैसे विभिन्न ओहदों में विराजित श्री परमेश्वरी, कनक वर्णों के बदन से, कुमुद की पंखुड़ियों जैसी खिली हुई आँखों से, पूर्णप्रभा से, फूले हुए सुंदर कपोल से, अरुणिमा युक्त अधरों से, चमकते हीरे की नथुनी सहित नाक से अलंकृत माता, यहाँ ऐश्वर्य प्रदायिनी होकर विराजित है।

यह मंदिर स्त्रियों की शबरिमला नाम से विश्व प्रसिद्ध है। माघ महीने के पौर्णमी एवं पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के सम्मिलित शुभ दिन पर आयोजित एक विश्व प्रसिद्ध पर्व है आट्टुकाल पोंकाला। पोंकाला का मतलब है पोंगल।

आट्टुकाल महाल की अधीश्वरी है आट्टुकाल माँ। अनंतपुरी की विशाल छाती में अनंतता से, ऐश्वर्य की वर्षा करने वाला स्त्री सान्निध्य। माँ, नानी ऐसे भावों में बैठकर मातृ परिकल्पना के सभी गुणगानों से भरपूर होकर पूरे विश्व में अपने अभौम चैतन्य पसारनेवाली इस महाल की ऐश्वर्या देवता। विश्व के सभी कोनों में से अपनी संतानों को प्यार की ओर आकर्षित करने वाली स्त्री शख्सियत। दूसरों के मन के आधि और व्याधि का निवारण करने वाली परमेश्वरी। दीनार्त होकर पुकारने पर कान देनेवाली आनंदरूपिणी एवं अपने प्यार भरे कटाक्ष में सबको आत्मसात करनेवाली आदि पराशक्ति।

जिंदगी के आगाध-अनदेखे गड्ढों में हाथ पैर मार-मार कर रोने-बिलखने वाली अपनी संतानों को छाती से लगाकर दिलासा देते हुए अपने आप आनंदलब्धि पानेवाली मातृशक्ति। खूबियाँ जितनी भी कहें, शब्द गूँगा बन जाएगा।

अगस्तियार गिरि तराइयों से उद्भूता करमना नदी की एक पार्श्व नदी है किल्ली नदी। आट्टुकाल माँ के चरितवाही बनने का सौभाग्य इस नदी को प्राप्त है। यह नदी तो उतनी नामी नहीं थी। अपनी सुंदरता एवं भव्यता से यह मानव को ही नहीं, देवताओं को भी आकृष्ट करती थी। आम लोगों को खुशी में हँसा कर, क्रोध में रुला कर बहने वाली साधारण से साधारण एक सुंदर नदी। लेकिन आज माँ के कथा-कथनों से जुड़कर यह नदी भक्ति के जगत में गरिमावान स्थान से अलंकृत है। यह सच बात है कि माँ का प्यार, कृपा-कटाक्ष पाने से साधारण से साधारण आदमी भी सफलता के कदमों को चूम-चूम कर विख्यात एवं नामी बन जाते हैं। प्रेम, करुणा, क्षमा आदि उत्कृष्ट गुणों से युक्त साक्षात् प्रेम स्वरूपिणी आट्टुकाल माँ इसी किल्ली नदी के तट पर विराजित है।

उन्हीं के यहाँ विराजित होने से संबंधित बहुत

सारी कहानियाँ प्रचलित हैं। फिर भी उनमें प्रमुखता इस कहानी को मिलती है कि एक बालिका के रूप में सदियों पहले इस भूभाग में माँ पधारी थीं। कालचक्र के साथ-साथ वह भी बढ़ने लगी और माँ रूपा में आज परिशोभित भी माँ है। इलाके वालों को ही नहीं, प्रवासियों को भी एक जैसे प्यार प्रदान करने वाली स्नेहस्वरूपिणी है आट्टुकाल महाल की अधिष्ठात्री आट्टुकाल माँ।

आट्टुकाल महाल में मुल्लु वीडु नामक एक घर था। वहाँ के ज्येष्ठ गृहस्वामी, बुजुर्ग मातुल को देवी दर्शन पाने का सौभाग्य मिला। ये सीधे-सादे, सरल एवं सात्विक आदमी थे। एक दिन नदी में नहाते वक्त उन्होंने देखा कि, नदी के उस पार एक छोटी हँसमुख लड़की रेशम का लहंगा धारण करके प्रसन्न चेहरे से उनसे नदी के इस पार पहुँचा देने की बिनती कर रही है। मातुल को पहले एक भ्रांति लगी, फिर वे तैरकर उस ओर पहुँचे। उस सुन्दर एवं मनमोहक बालिका को अपने कंधों पर बिठाकर नदी के इस ओर पहुँचा दिया। लड़की को अकेली देखकर मातुल का चेहरा शंका से आच्छादित रहा। तब उस बालिका ने कहा कि मैं मथुरा पुरी से कोट्टुङ्ल्लूर की ओर जा रही हूँ। इसी बीच आराम के लिए यहाँ आई हूँ। मातुल बालिका को लेकर अपने घर आ गए। अचंभित होने पर भी आवाभगत में तत्परता दिखाने वाली मातुल की सहधर्मिणी ने बालिका का हर प्रकार आदर सत्कार करने की कोशिश की। लेकिन इतने में बालिका ओझल हो गई। दोनों बहुत दुखी हुए। उसी दिन रात बहुत खिन्न से सोते वक्त मातुल को एक स्वप्नदृष्टि मिली।

सुंदर बदन से सर्वगहनाभूषणधारी वह बालिका सपने में आई। दुखार्द्र मन से नींद में पड़े उस मातुल से कहा-''तेरा दुख मैं समझ सकती हूँ। तेरा प्यार मैंने पहचान लिया है। तुझे छोड़कर पूर्ण रूप से मैं वापस नहीं जा सकती। निकट के कावु (पुराने ज़माने में केरल के अधिकांश घरों में नागाराधना होती थी। इसके लिए घर में पेड़-पौधों से सटी एक बाड़ी होती थी) में कल सवेरे जाकर देखना। वहाँ मिट्टी में त्रिशूल से खींची तीन लकीरें दिखाई देंगी। वहाँ मैं वास करूँगी।

अगले दिन सवेरे इस सपने की प्रेरणा से वहाँ पहुँचे मुल्लु घर के मातुल ने मिट्टी में ऐसी तीन लकीरों को देखा। बालिका कौन थी इस बात का उत्तर अंतरंग में उभर कर आया। देरी किए बिना मातुल ने देवी की संकल्पना से वहाँ दिया जलाना शुरू कर दिया। फिर धीरे-धीरे वहाँ एक छोटा सा मंदिर बनवा दिया। कालांतर में प्रदेशवासियों ने मंदिर का पुनरुद्धार कर दिया। वहाँ देवी के त्रिशूल, तलवार, ढाल, अमृतकुंभ ऐसे आयुधों सहित चतुर बाहुरूपा प्रतिमा का निर्माण किया। बदरीनाथ से एक मुख्य पुरोहित ने आकर शुभमुहूर्त में देवी की प्रतिष्ठा की थी।

भक्तों के लिए सबसे चहेती माँ एवं भक्तवत्सला है। यह सत्य है कि माँ की इस मूर्ति को देखते रहने से सब कुछ भूल कर आप सम्मोहित से खड़े रहेंगे। माँ की ख्याति पूरे विश्व भर में फैल गई है। 1997में माँ के तिरुआंगन पर संपन्न पोंकाला महोत्सव में विश्व के अनेक भागों से 15 लाख महिलाओं ने भाग लिया। इसके आधार पर इस मन्दिर ने विश्व गिन्नीस रिकॉर्ड में अपना स्थान बना कर लिया

आट्टुकाल माँ को आट्टुकाल भगवती भी पुकारा जाता है। भगवती का अर्थ है चैतन्य स्वरूपिणी, सौभाग्य रूपिणी, स्वयं प्रकाशिनी। इन्हीं गुणों से अलंकृत होने के कारण वे आट्टुकाल भगवती नाम से भी जानी जाती हैं।

ऐश्वर्य, भाग्य, कीर्ति, चैतन्य, प्रसिद्धि, ऐसी पाँच बातें देवी की मूर्ति में मौजूद हैं। ऐसी एक धारणा है कि माँ की सही ढंग से उपासना करने वाले सभी भक्तों को उपयुक्त सारे गुण मिल जाते हैं। कटहल की बहुत पक्की लकड़ी से काट-काट कर बनायी गयी एक काष्ठ प्रतिमा थी माँ की।

लेकिन अब वह स्वर्णपत्र से मढ़ी हुई है और कनकांगी कही जाती है। इस प्रकार कनाकांगी का दर्शन हम अब मंदिर में पा सकते हैं। काष्ठ प्रतिमा पर अभिषेक डालने से काष्ठ बरबाद हो जाएगा। इसलिए अभिषेक मूर्ति अलग से तैयार करके रखी है। साथ ही शीवेली परिक्रमा के लिए देवी चैतन्य से युक्त और एक छोटी मूर्ति है। इस प्रकार माँ की शक्ति से संपन्न तीन मूर्तियाँ हम यहाँ देख सकते हैं।

आट्टुकाल माँ का दर्शन उत्तर दिशा की ओर है। उग्र मूर्ति काली के रुद्रभाव को दूर करा कर शांत स्वरूपिणी लक्ष्मी देवी का चैतन्य बनाए रखने के उद्देश्य से उत्तर दिशा की ओर उनकी नजरिया रखकर प्रतिष्ठा की है।

भक्त अपनी इच्छा-पूर्ति के लिए पूजा, अर्चना नैवेद्य अर्पित करते हैं। ऐसा किए जाने पर अपने कार्य प्राप्ति बिना किसी विघ्न से, निर्विघ्न भाव से मिल जाता है। नैवेद्य का अर्थ है समर्पण। व्रत से युक्त शारीरिक कार्य काया समर्पण में, प्यार एवं करुणा से करने वाले काम मानस नैवेद्य में, धन से पूजा, अर्चन आदि करनेवाला कार्य आर्थिक समर्पण में आ जाते हैं। इन तीनों से युक्त आट्टुकाल पोंकाला सबसे बड़ा समर्पण है और सबसे बड़ा नैवेद्य भी।

साधारण तौर पर देवता एवं भक्तों के बीच में नैवेद्य समर्पण के लिए एक पुजारी या मध्यवर्ती होता है लेकिन आट्टुकाल पोंकाला में ऐसा कोई मध्यवर्ती नहीं है। हरेक व्यक्ति सीधे ही माँ को अपना निवेद्य चढ़ा सकता है। इनसे कार्यसिद्धि, पाप विमोचन, सौभाग्यप्राप्ति आदि पुण्य फल मिलने का विश्वास है। साधारण तौर पर केवल स्त्रियाँ ही पोंकाला डाल देती हैं। लेकिन पुराने ज़माने में श्री नारायण गुरु, चट्टंबि स्वामी आदि केरल के नवोत्थान नायकों ने माँ से आकृष्ट होकर पोंकाला डाला है। आजकल भी इधर-उधर कुछ पुरुष लोग अपनी मनोकामना की सिद्धि के लिए पोंकाला अर्पण कर देते है।

तोट्टमपाट्टु (कण्णकी चरित गान) से आट्टुकाल मंदिर में उत्सव की शुरुआत होती है। माघ महीने के कार्तिका नक्षत्र में शुरू होने वाले इस कार्यक्रम में देवी के तिरु आंगन में देवीचरित गायन से शुरू होता है। ये गायक पीढ़ी दर पीढ़ी से मिले हुए अपने वाक् वरदान को बहुत अधिक भक्ति, श्रद्धा, निष्ठा एवं व्रत शुद्धि के साथ गाते हैं। गीत के द्वारा आदिमूलदेवता कोडुंगल्लूर भगवती को आट्टुकाल देश में आमंत्रित करके यहाँ बैठा देते हैं। जब गीत में देवता का आगमन आट्टुकाल माहौल में हो जाता है, तब ही उत्सव की शुरुआत होती है।

मंदिर के मुख्य पुरोहित चांदी, सोने से बनाई गई अंगूठी को अनन्नास के धागे में पिरोकर देवी के निकट रखी तलवार में देवी संकल्पना से बांध देते हैं। यह काप्पुकेट्टु नाम से जाना जाता है। काप्प माने चूड़ी। उस दिन से दस दिन तक आट्टुकाल पोंकाला महोत्सव होता है ।

उसी प्रकार की एक अंगूठी क्षेत्र पुरोहित भी धारण करते हैं और इसके बाद उन्हें मंदिर में ही दस दिन तक रहना पड़ता है। प्रस्तुत वेला में देवता की मूर्ति के पीछे कपड़ा फैलाकर बाँधने के लिए कपड़े लेकर धोबी लोग खड़े रहते हैं। इस कपड़े को प्रभा कहा जाता है। यह उनको कण्णकी से मिला वरदान है। गीत के अनुसार कोडुंङल्लूर भगवती गर्भगृह में विराजित मूर्ति में लीन होने के लिए अंदर की ओर जाती है। तब शांत स्वरूपिणी हमारी माँ पूर्ण रूप से साक्षात् भद्रकाली बन जाती है। दस दिनों तक वे इस रूप में चमकती रहती हैं।

तोट्टम पाट्टु का मुख्य विषय कण्णकी चरित है। तमिलनाडु के पूंकावेरी शहर में कोवलन नाम का एक धनिक व्यापारी था। वह अपनी सुन्दरी एवं सुशील पत्नी कण्णकी सहित सुख से रहते थे। इतने में वहाँ की नर्तकी माधवी से अनुरक्त होकर कोवलन अपनी पूरी संपत्ति गँवा देता है। अंत में वे

पश्चाताप विवश होकर अपनी पत्नी के निकट आ पहुँचते हैं। कण्णकी उससे क्षमा करती है और अपने पाजेब में से एक उसे देकर बेचने को कहती है। उससे आगे व्यापार शुरू करने की इच्छा से वे दोनों मथुरा पुरी पहुँच जाते हैं। यहाँ मधुरा में इस समय पर पांड्यनरेश की पत्नी की पाजेब की चोरी होती है। राजसेवक चोर की खोज में इधर-उधर भड़क रहे थे। कोवलन के हाथ में पाजेब को देखने पर एक सुनार ने, जिसने असल में चोरी की थी, उन्हें अपनी कार्यशाला में बिठाकर राजा के पास पहुँचकर इस पाजेब को दिखा दिया। राजा ने तुरन्त ही उन्हें पाजेब सहित पकड़कर लाने की आज्ञा दी। लेकिन विकट सरस्वती के प्रभाव से सेवकों ने सुना कि उसे मारकर लाना। सेवकों ने राजाज्ञा का पालन किया।

कण्णकी कोवलन की इंतज़ार में बैठ-बैठकर उदास हो जाती है। अपने पति की खोज में चलने पर धोबी लोग उनको सही जानकारी देते हैं और कोवलन की अर्थी दिखाते हैं। यह देखकर क्रुद्ध होकर वह मधुरापुरी पहुँच जाती है और अपने वाद-विवाद में अपने पाजेब को नीचे फेंककर तुड़वा देती है और यह साबित करती है कि उनके पाजेब की धुँघरू रत्न की हैं, जबेकि रानी की केवल मणियों की थी। राजा और रानी पश्चाताप से मर जाते हैं। कण्णकी अति क्रोधाग्नि में शाप देती है कि मधुरापुरी जलकर भस्म हो जाय। अति दुख से अपने बाएँ स्तन को उखाड़ फेंक देती है। पतिव्रता कण्णकी का शाप फलता है। इतने में मधुरा की अधिष्ठात्री मधुरा मीनाक्षी माँ आकर दिलासा देकर शाप वापस लेने की विनती करती है और कण्णकी को केरल के कोडुङ्ल्लूर जाकर विश्राम लेने की सलाह भी देती है। इससे संतृप्त होकर कण्णकी कोडुङ्ङल्लूर आती है।

तोट्टमपाट्टु में एक-एक दिन के लिए कथा को विभाजित किया है और छठा दिन कोवलन की कहानी का भाग आ जाता है। फिर सातवें दिन देवी के युद्ध के लिए मथुरापुरी में जाने का वर्णन है। उस समय दुखाचरण की कथा के अनुसार प्रात: 7:00 बजे को ही मंदिर का किवाड़ खुलता है। अन्यथा ठीक सुबह 5:00 बजे ही मंदिर का द्वार खुल जाता है। आठवें दिन में सुनार से जो तर्क वितर्क हैं उसका वर्णन है। नवें दिन में पांड्य राजा की हत्या के बारे में वर्णन मिलता है। इसी दिन में ही पोंकाला संपन्न हो जाता है।

देवी की प्रतिष्ठा के लिए गानेवाले इस गीत में पांड्य महाल की ओर की यात्रा, तब देवी से दीखी बातें और देवी के वरदान संबंधी बातें सब कुछ इसमें आ जाती हैं। प्राकृतिक सौंदर्य, उत्सव, रास्ते में दिखाई देने वाली दुकानें, वहाँ की विशेषताएँ, सब कुछ इस गीत में हैं। यहाँ कोवलन को बालकन नाम से बताया गया है। यह स्तोत्र गीत नायिका प्राधान्य से भरपूर है। 120 पंक्तियों के इस गीत में कालक्रम के अनुसार आवश्यक संशोधन करके कुछ भागों को जोड़कर और छोड़कर इसमें कुछ थोड़ा सा परिवर्तन कर दिया गया है।

हमने पहले कहा था कि आट्टुकल माँ उग्र रूपिणी भद्रकाली को शांत बनाकर शांत स्वरूपिणी के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। इसलिए इसमें दोनों भाव समाहित हैं। अधर्म एवं अन्याय के प्रति वे उग्ररूपिणी बनकर वार करती हैं। वात्सल्य निधि, स्नेहसंपन्न आश्रितावत्सला माँ अपने सारे गुणों से संपन्न् बनकर मातृस्वरूपिणी बनकर हमेशा बैठती है।

पोंकाला के दिन में तिरुवनंतपुरम नगर एक यागशाला बन जाता है। लाखों चूल्हों से उड़ने वाला धुआँ शहर को एक यागभूमि में परिणत करा देता हैं। इस यागभूमि में औरत-मर्द भेद भाव के बिना, विभिन्न जाति धर्म के लोग, बच्चों से लेकर बड़ों तक अपने को हवि के रूप में हवन करा देता है।

संचित किए गए सभी पापों एवं दुखों के आदि

एवं व्याधि को पोंकाला डालनेवाले मिट्टी के घड़े में हवन करा देते हैं। भक्त लोग सायूज्य बन जाते हैं। पोंकाला डालकर अपने को चरितार्थ हो जाने वाले, वह स्वर्णिम पल वर्णनातीत हैं।

पोंकाला के दिन यानी उत्सव के नवें दिन पूर्वाषाढ़ा के दिन मंदिर के सामने मंदिर की ओर से एक चूल्हा तैयार करके रखा जाता है। उसमें एक मिट्टी के घड़ा भी चंदन, कुंकुंम, फूल से सजाकर एक निश्चित मात्रा में पानी भरकर रखा जाता है। इसे भंडार चूल्हा कहा जाता है। मंदिर के सामने तैयार किए गए उस चूल्हे में मंदिर के मुख्य पुजारी, तंत्री एवं सह पुरोहित सभी मिलकर मंदिर के अंदर श्री गर्भगृह में विराजित देवी चैतन्य के निकट जलते दीप में से जला हुआ दीप लाकर इस भण्डार चूल्हें में सभी विद्वत्जनों, समाज के प्रमुख व्यक्तियों, नेतागणों और विभिन्न माध्यम प्रतिनिधियों को गवाही बनाकर आग जला देते हैं। सभी के मुँह से केवल एक ही नाम निकलता है माँ माँ माँ।

प्रकृति में माँ का स्थान क्या है और माँ का योगदान क्या है, इन सबका प्रत्यक्ष सुवर्ण पल। लोग चाहे घर में हो, विदेश में हो, कहीं भी हों सभी इस पावन दृश्य को देखने के लिए अपने टीवी. के सामने बैठे रहते हैं। उस समय आकाशमार्ग, नाविक सेना भी हेलिकॉप्टर में से पुष्पवृष्टि करते हैं। मंदिर के पंच वाद्य विद्वानों के नाद धाराओं से यह पुण्य कर्म संपन्न होता है।

भक्ति क्या है इस बात का ज्ञान हर एक भक्त पहचानने वाला पल है यह। इस प्रपंच में अपने स्वत्व को कोई स्थान नहीं है, सबकुछ मात्र शक्ति स्वरूपिणी माँ का है। ऐसी जानकारी मिलने वाला अनिर्वचनीय मंत्रमुग्ध कर देने वाला पल है। ऐसे एक आत्मविभोर होनेवाले पल की प्राप्ति कहाँ जाने पर मिल जाती हैं। आत्मा कहाँ जाकर ऐसी शांति की प्राप्ति करती है। नहीं कहीं भी नहीं, ईमानदारी से मिलने वाले एक पल की वह उर्जा, उस विद्युत प्रवाह की अनुभूति का क्षण, शरीर के पैर से सिर तक तीर की तेजी से दौड़ने वाले उस अनुग्रह की प्राप्ति यह केवल यहाँ माँ की निकटता में ही मिलती है। एक बार मिलने पर ज़िन्दगी भर अविस्मरणीय रहनेवाला वह पल है। कौन छोड़ सकता है इसे। माँ की ऊर्जाकिरणों से पूरे शरीर रोमांचित करके शरीर को रोमांचित कर आँखों में प्यार एवं भक्ति से युक्त वरुण की निकटता अग्नि देव के सान्निध्य में विभोर होने वाला अभूतपूर्व पल। इस क्षण की प्राप्ति के लिए आत्मानुभूति के लिए एक साल भर इंतजार कर बैठनेवाले माँ की प्यारी संतानें। माँ को जितना भी प्यार करें फिर भी न तृप्त होने वाली संतानें। प्रकृति के ताल नियंत्रण संयम रखने के लिए इससे बढ़कर और क्या चाहिए।

आट्टुकाल मंदिर में जब पोंकाला घड़े में दीप प्रज्वलित कर देते हैं, तभी किलोमीटरों की दूरी पर तपते धूप में सूर्य देवता की प्रखर धूप को पराजित कर माँ के मंत्र जप से पोंकाला डालने के लिए तैयार लाखों स्त्रियाँ सड़क के आर-पार सभी रास्तों में, अपने-अपने चूल्हों को तैयार कर पोंकाला डालने की प्रतीक्षा में खड़े रहने वाले जन समुदाय का दृश्य वर्णनातीत है। सूर्यदेव भी माँ की शक्ति देखकर माँ की संतानों के प्यार को देखकर एक पल के लिए अपने में सिमट रहे हैं क्या, ऐसी शंका होती हैं।

मंदिर से सूचना मिलते ही अपने सामने जले हुए दिए में से या किसी से ले गए दीप से भक्तिपूर्वक अग्नि लेकर अपने चूल्हे में अग्नि देने वाला वह मंत्रमुग्ध पल। इस कर्म के द्वारा माँ निस्वार्थ भावना की सीख सबको प्रदान कर देती है। वहाँ इकट्ठे हुए सभी लोग अपने स्वार्थ को भूल कर एक दूसरे की सहायता करने में बिल्कुल हिचकते नहीं। इस प्रकार यह पोंकाला महोत्सव हमारी भारतीय संस्कृति का परिचायक बन जाता है। उस क्षण तक अपरिचित रहे लोग उस समय पर बहुत मित्र भाव से, मैत्री से,

रिश्तेदार की भावना से सब कुछ एक दूसरे को बांट-बांट कर सहायता देने वाला पुण्य मुहूर्त होता है यह। माँ के प्रति अपनी संतानों का प्यार विभिन्न प्रकार से प्रकट होता है। इस शुभ अवसर पर माँ का कृपा कटाक्ष सब पर पड़ता है। भक्त अपने शारीरिक कंपन से यह सायूज्य समझ लेते हैं। मनुस्मृति के अनुसार समरूप एवं भाव पहचानने वाला पल।

मिट्टी के चूल्हे पर रखे मिट्टी के घड़े में पानी के उबलने पर उसमें चावल डाल देते हैं। फिर वह पक जाने पर उसमें गुड़, घी, इलायची, केला, नारियल आवश्यक मात्रा में डालकर खीर तैयार की जाती है। इसके साथ ही सफेद भात, मूँग दाल से बनाये जानेवाले और कुछ भोजन जैसे तेरली, मंडपुट्टु आदि भी लोग बनाते हैं। एक से ज्यादा घड़े में पोंकाला डालनेवाले ही ऐसे नैवेद्य बनाते हैं। एक से लेकर एक सौ एक चूल्हे पर भी पोंकाला डालनेवाले लोग बहुत हैं। ये सब अपनी माँ के प्रति प्रदर्शित करनेवाली प्रीतिमात्र है। उसी प्रकार शुभ मुहूर्त में ही इसका नैवेद्य भी होता है। पहले मंदिर के भण्डार चूल्हें में पुण्य तीर्थ छींटकर नैवेद्य कर देता है। फिर सब कहीं एक-एक पुरोहित जो पहले ही अपनी-अपनी जगहों पर तैयार खड़े हैं, वे पुण्याह डालकर सभी में नैवेद्य करा देते हैं। तब बहुत तृप्त एवं आश्वस्त मन से वे अपने-अपने घर चले जाते हैं।

पोंकाला के दो दिन पहले ही यह नगर पूरी नारियों से भरे रहेंगे। दूर-दूर से स्त्रियाँ इसमें भाग लेने के लिए आ जाती हैं, इस समय हम यहाँ नारि-सागर देख सकते हैं। स्त्री शाक्तिकरण का एक उत्तम नमूना है। यहाँ के निवासी आगन्तुकों की सेवा सत्कार करना अपना पुण्य मानते हैं। सभी लोग निडर होकर निर्भीकता से रात में भी दिन जैसा व्यवहार करके चलनेवाला दृश्य देखते ही बनता है। अनजाने लोगों के लिए यहाँ के लोग अपने हैं। सभी के घर का द्वार माँ की इन्हीं बहुत दूर-दूर से आई संतानों के लिए खुले रहते हैं।

'तालपोली' एक साल से लेकर बारह साल तक की कम उम्रवाली लड़कियों द्वारा की जानेवाली एक पूजा है। बालिका को बहुत सुन्दर ढंग से सजाकर, नया कपड़ा पहनाकर, फूलों की माला हाथ-पैर और गले में डालकर गुलदस्ता पकड़ाकर पूजा में जाने वाली कुमारियों को लेकर चलानेवाला यह दृश्य अत्यंत मनोहारी है। एक थाली में चावल, नारियल, फूल, सुपारी के पेड़ से मिलनेवाले गुच्छे, दीप सब रखकर परिवारजन कौमारिकाओं के साथ मंदिर जाकर अर्घ्य करते हैं।

कुत्तियोट्टम 12 साल के कम उम्रवाले लड़कों द्वारा किए जानेवाला कर्म है। सात दिन तक ये लड़के मंदिर में रहते हैं। पोंकाला के दिन माँ के बाहरी जुलूस में युद्ध में घायल सैनिकों के प्रतिनिधि ये लड़के राजसी वेश में आते हैं। इसके लिए शरीर में पेट के कुछ उपरी भाग पर पसली के कुछ नीचे दोनों पार एक कंटिया टाँग रखते हैं। अगले दिन माँ के मंदिर में प्रवेश होने के बाद ही इसको निकाल सकते हैं।

विल्क्कुकेट्टु- विलक्कु माने दीप। नारियल के किसलय पत्ते या बहुवर्ण रंगों के कागज़ों से अलंकृत तख्तों, जिसमें देवी का चित्र या मुखौटा रहता है। इन दीपयष्ठियों को व्रतधारी लोग अपने सिर पर रखकर वाद्य संगीत के अनुसार नाच-नाच कर मंदिर तक पहुँचा देते हैं। रात 12 बजे की दीपाराधना के समय ये सारे एक साथ मिलकर मंदिर की परिक्रमा करते हैं। यह बहुत नयनाभिराम दृश्य होता है।

पोंकाला के दिन रात को माँ का बाहरी जुलूस होता है। गजराज के उपर बैठकर अपने इलाकेवालों के स्नेह सत्कार स्वीकृत करते हुए आनेवाला द्श्य देखते ही बनता है। एक किलोमीटर की दूरी 8 से लेकर 9 घंटे में परिक्रमा होती है। बहुत साज सज्जा

एवं दीप जलाकर सभी माँ का स्वागत करने के लिए खड़े रहते हैं। पुष्पाभिषेक से माँ को संतृप्त करने में सभी एक तरह से होड़ लगाते हैं।

शास्ता मंदिर में जाने के बाद दसवाँ दिन दोपहर करीब 12 बजे के निकट माँ वापस मंदिर में आ जाती हैं। पुलिस एवं सेना के लोग भी इस जुलूस में मौजूद रहते हैं।

दसवें दिन, रात की वेला में तोट्टम पाट्टु के जरिए माँ को स्तुति गीत द्वारा प्रशंसा कर-कर के वापस भेज देते हैं, तभी पुजारी काप्पु (अंगूठी) उतार देते हैं। उस दिन के स्तुति गीत में अपनी प्रंशंसा सुन-सुनकर संतृप्त होकर माँ यहाँ से अपने मूल स्थान कोडुङ्ल्लूर की ओर रवाना होती है। ऐसे विश्वास से यह पोंकाला उत्सव मनाया जाता है। रात को माँ की काप्पु (अंगूठी) उतारी जाती है। इसके बाद गुरुसि तर्पण होता है। ऐसे पोंकाला उत्सव की इति होती है। सभी फिर से एक वर्ष की प्रतीक्षा करते अपने-अपने घर वापस जाते हैं।

हर भारतीय पर्व की तरह आजकल विदेश में भी माँ की संकल्पना में पोंकाला महोत्सव का आयोजन हो रहा है। विश्वभर में माँ का चैतन्य भरा पूरा रहता है। माँ का अशीष सबों पर पड़े ऐसी प्रार्थना से .....

आट्टुकाल, मणक्काडु.पी.ओ.
तिरुवनन्तपुरम 695009
Mail-sheelagowrabhi@gmail-com
मो. 9496253858
कार्यालय पता
डॉ.शीलाकुमारी एल
असोसियेट प्रोफसर हिन्दी
यूनिवर्सिटी कॉलेज,
तिरुवनन्तपुरम

केरल के शास्त्रीय नृत्य कलाएँ: कथकली, मोहिनियाट्टम आदि

डॉ.शीबा शरत एस.

कथकली का उदय सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ था। यह कोट्टारक्करा तंपुरान द्वारा रचे गये रामनाट्टम का विकसित रूप है। वेट्टत्तु राजा ने इसकी अभिनय रीति, वेशभूषा और वादन संप्रदाय को संवारा तो यह कला वेट्टत्तु संप्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हो गई। अठारहवीं शताब्दि में कोट्टयम तंपुरान ने चार प्रसिद्ध आट्ट (पुराण)कथाओं की रचना करके इसके अभिनय में नाट्यशात्र के सिद्धान्तों को आधार बनाया। राजा के निर्देशानुसार चात्तु पणिक्कर ने वेट्टत्तु संप्रदाय का परिष्कार करके इसे कल्लडिक्कोडन संप्रदाय बनाया। सन् 1890 के बाद अट्टकथा के रचयिता तिरुवितांकूर के महाराज कार्तिक तिरुनालराम वर्मा ने इसका परिष्कार और संवर्द्धन किया। कप्लिंगाट्ट नारायण नंपूतिरी ने राजा के निर्देशानुसार इसमें अनेक परिष्कार किये।

सोपान संगीत से कथकली संगीत का उदय होता है। यह जयदेव के गीतगोविन्द और कर्नाटिक संगीत से संबन्धित है। शैली एवं तालक्रम की दृष्टि से यह कर्नाटक संगीत से भिन्न है। कुछ विशिष्ट राग-पाटि संगीत, पुरनिरा का प्रयोग इसमें हैं। कथकली के रंगमंच को 'कलियरंगु' (**रंगमंच ज़मीन से ऊपर उठा हुआ एक चौकोर तख्त**) पर अभिनीत करते हैं। कथकली का प्रदर्शन आट्टविलक्कु (**कथकली की प्रस्तुति रात में होने के कारण भद्रदीप जलाया जाता है, जिसको आट्टविलक्कु कहते हैं**)के सामने होता है। इसके प्रारंभ में कुछ आचार अनुष्ठान आवश्यक है, जैसे केलिकोट्ट, अरंगुकेलि, तोड़यम्, वंदनश्लोक, पुरप्पाड़, मंजुतरा आदि। इसके बाद नाट्य की प्रस्तुति

होती है धनाशि नाम के अनुष्ठान के साथ इसका समापन होता है।

इसमें कथा चरित्र के आधार पर प्रत्येक चरित्र का अपना साज शृंगार और वेशभूषा होती है। कथकली में अनेक पौराणिक कथाएँ हैं। जैसे नलचरितम्, कोट्टयम तंपुरान का कल्याणा सौगंधिकम्, बकवधम्, किमीरवधम्, कीचकवधम्, उत्तरास्वयंवरम्, दक्षायागकम्, दुर्योधनवधम्, राजसूयम आदि।

आज कथकली केरल का मुख्य नृत्य बन गया है। तिरुवनन्तपुरम की 'मार्गी' नामक संस्था में लोग प्रशिक्षण के लिए विदेश से अधिक आते रहते हैं। यहाँ हर महीने तीन दिनों में इसका प्रदर्शन भी चलता है।

1. केलिकोट्ट एक ताल है जो स्थानीय लोगों को सूचित करता है कि आज कथकली है ।
2 . अरगुंकेलि - खेल शुरू हो गया है की घोषणा
3 . तोड़यम - यह इष्टदेवता की पूजा है। इसमें बालक सदृश्य नट पर्दे के पीछे खड़े होकर देवस्तुति करके नाचते हैं जिनका हल्का सा पहनाव होता है। शिव और शक्ति (पुरुष और प्रकृति) के मिलन से सृष्टि का उद्भव होता है की प्रतीकात्मक प्रस्तुति। तोड़यम के बाद ही नट अपनी वेशभूषा धारण करते हैं।
4 . पुरप्पाट - एक पुरुष और एक स्त्री पर्दा (सूत्रधार) आम तौर पर नट कृष्ण वेष धारण करते हैं।
5. मंजुतरा-'गीतागोविन्द' के अष्टपदी गीत ।

केरल का शास्त्रीय नृत्य मोहनिआट्टम स्त्रैणभावना का परंपरागत नृत्य रूप है। यह लास्य नृत्य के संबन्ध में तुल्लल प्रस्थान के उपज्ञाता श्री कुंचन नंपियार ने अपने 'घोषयात्रा' नामक कृति में उल्लेख किया है। तिरुवितांकूर के महाराज श्री मार्तांडवर्मा की राजसभा के कवि मषमंगलम नारायण नंपूतिरी के 'व्यवहारमाला' नामक कृति में इसकी सूचना मिलती है। शास्त्रीय नृत्य, नाट्यादी कलाओं का लक्षण ग्रन्थ 'बालराम भरत' में भी इसका संकेत है। तिरुवितांकूर के कलाविद, पंडित सभी राजा इसके पोषक थे। महाराजा श्री पद्मनाभदास मार्तांडवर्मा द्वारा तिरुवनन्तपुरम में बनाए गए श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर में 'दासियाट्टम' चलता था। इस दासियाट्टम का परिष्कृत रूप है मोहिनिआट्टम। सन् उन्नीसवीं सदी के तिरुवितांकूर के कलाश्रेष्ठ अनोखा कवि महाराजा स्वाती तिरुनाल रामवर्मा ने इसको नवजीवन प्रदान किया। तंचावूर नालवर नाम से प्रसिद्ध चिन्नय्या, पोन्नय्या, शिवानंदम् और वटिवेलु राजा के दरबार में थे। वटिवेलु ने सदियाट्टम को परिष्कृत कर भरतनाट्य बनाया तो राजा के आदेशानुसार उन्होंने मोहिनिआट्टम को भी संवारकर नया रूप दिया। वटिवेलु ने इसकी मुद्राएँ, अभिनय और पद संचालन को केरलीय शैली में ढाला। पूर्णरूपेण इसे केरल का नृत्य बनाने केलिए मलयालम और संस्कृत गीतों का उपयोग होने लगा। स्वाती तिरुनाल ने मोहिनिआट्टम के लिए कई पद, वर्ण और कीर्तन रचे। इन वर्णों और पदों की रचनाओं में विरह भावना अधिक है।

'बालराम भागवतम्' के आधार पर हस्त मुद्राएँ और पैरों का संचालन निर्धारित किया। शरीर के सभी अंग मृदु गति से चलाते हैं। मृदुल गति, अंग विक्षेप, उसके अनुरूप पैरों की गति, गीत के भावानुसार अभिनय सब इसके परिपोषक हैं। नाट्यशास्त्र में स्त्रैणभाव से युक्त इस लास्य नृत्य को 'कैशिकी वृत्ति' कहते हैं। 'हस्तलक्षण द्वीपिका' में हाथों, मुद्राओं और भाव-भंगिमाओं को विस्तृत रूप से प्रदर्शित किया है।

परंपरानुसार मोहिनिआट्टम आनंद भैरवी राग के एक श्लोक से शुरू होता है। फिर चक्रराग में चोलक्केट्ट शुरू होता है। इसमें सभी पद संचालन आते हैं। प्रारंभ में भगवती का स्तुतिपाठ करते हैं। विलंबम्, मध्यमम्, द्रुतम् ऐसी गति को बदलते- बदलते अंत में

महाशिव, श्रीराम आदि देवों की वंदना करते हुए कीर्तनम् करके समाप्त होता है। इसमें एक जगह से दूसरी जगह की ओर जानेवाला पद संचालन है। इसको 'अतिभंगचलनम्' कहते हैं। नवरसों का प्रयोग इसकी अभिनय विशेषता है। वंशी, वायलिन, पखवाज आदि वाद्यों का प्रयोग इसमें किया जाता है।

सन् 1937 में मलयालम के महाकवि वल्लत्तोल नारायण मेनोन ने केरलीय शास्त्रीय कलाओं के पुर्नजागरण के लिए त्रिशूर जिले के चेरुत्तुरुत्ती में 'केरल कलामण्डलम्' की स्थापन की। कैसे मोहिनिआट्टम और कूटियाट्टम को उचित स्थान मिला। कथकली के आचार्य कलामण्डलम कृष्णन नायर की धर्मपत्नी कलामण्डलम् कल्याणिक्कुट्टि अम्मा को मोहिनिआट्टम की जननी मानते हैं। उन्होंने इस नृत्य पर विशेष ध्यान देकर इसका प्रचार एवं संवर्धन किया। इसकी मौलिकता को कायम रखने के लिए उनकी दो बेटियाँ और छात्राएँ इसकी परिपोषक बनी हैं। निर्मला पणिक्कर, कलामण्डलम सत्यभामा, कलामण्डलम क्षेमावती, कलामण्डलम् लीलाम्मा, कलामण्डल सुगन्धी, दीप्ती ओमचेंरी, कलामण्डलम विमला मेनोन, गीता राधा कृष्णन आदि कलाकारों ने इसे लोकप्रिय बनाया। विभिन्न विश्वविद्यालयों में इसके स्नातक, स्नातकोत्तर कार्यक्रम और शोध कार्य चल रहे हैं।

मलयालम साहित्य के 'प्राचीन कवित्रयं' नाम से जाननेवाले तुंचत्त रामानुजन एषुत्तच्चन, चेरुशेरी और कुंचन नंपियार में हम कुंचन नंपियार को 'तुल्लल' नामक दृश्य कला के प्रणेता के रूप में मानते हैं। तुल्लल केरल का शास्त्रीय नृत्तरूप है। ये तुल्लल गाथाएँ मलयालम के हास्य साहित्य की अनमोल निधि हैं। श्री कुंचन नंपियार का जन्म मध्य केरल के पालक्काड़ जिले में सन् 1705 को हुआ था। प्राथमिक शिक्षा के उपरान्त नंपियार अपने पिता के साथ किटंगूर पहुँचे। चेंपकश्शेरी राजा के आश्रित बने, फिर 1748 तिरुवितांकूर के मार्ताण्ड वर्मा के राजदरबार में आये।

ये मलयालम् और संस्कृत भाषा के पंडित थे। उनकी प्रारंभिक कविताओं में भगवत्दूत, भागवतम्, नलचरितम् और चाणक्यसूत्रम् आदि प्रमुख हैं। उन्होंने मलयालम में तुल्लल नामक एक नई गीतात्मक नाट्यकला को जन्म दिया। इसमें इतिहास, पुराण से कहानियाँ चुनकर हास्य-व्यंग्यात्मक शैली में समकालीन सामाजिक जीवन के प्रसंग को चित्रित करता है। मलयालम् भाषा की ये तुल्लल गाथाएँ समस्त श्रेणी के लोगों को आकर्षित करती हैं। इसमें संस्कृत शब्दों का बाहुल्य है। पटयणि, कूत्तु और कूटियाट्टम नामक कलाओं का संकेत भी इसमें है। उन्होंने साठ तुल्लल कविताएँ लिखी हैं। इसके अलावा नंपियार ने श्रीकृष्ण चरितम्, मणिप्रवालम् और कतिपय संस्कृत कृतियाँ रची हैं। उनकी अनेक पदोक्तियों ने लोकोक्तियों का स्थान ग्रहण किया। उनके कई छन्द मलयालम की कहावतों में बदल गए हैं। तरंगिणी, उपसर्पिणी, मल्लिका आदि तुल्लल के छन्द हैं। उनकी काव्य भाषा 'मधुर पदाकलितम् मणिप्रवाल' है। कल्याण सौगंधिकम्, कार्त्तवीरार्जुन विजयम्, किरातम्, सभा प्रवेशम्, त्रिपुरदहनम्, हरिणी स्वयंवरम्, रुग्मिणी स्वयंवरम्, प्रदोष माहात्मय्, स्यमन्तकम् एवं घोषयात्रा हैं। उन्होंने बच्चों केलिए पंचतंत्र किलिप्पाट्ट की रचना की। शनिप्रदोष माहात्मय्, प्रदोष माहात्म्य, शिवरात्रि माहात्म्य् आदि शैवभक्ति संबन्धी रचनाएँ भी की हैं।

तुल्लल काव्य के तीन भेद हैं। ओट्टन, परयन और शीतंकन। अभिनय की दृष्टि से तीनों में कोई भेद नहीं है। राग, ताल और वेशभूषा में थोड़ा-सा फर्क होने पर भी कोई मुख्य भेद नहीं है। 'मिषाव' नामक एक भीमाकार गोल वाद्य इसके लिए ज़रूरी है। मृदंग, हस्त घंटी पर भी ताल का प्रयोग करते हैं। द्रुतगति से किए जाने वालो नृत्य तुल्लल में नर्तक स्वयं पद्यबद्ध कहानियों को गाकर नृत्य करता है। वाद्य बजाने वाले गीत को दुहराते हैं।

अंबलप्पुष़ा में केरल सरकार द्वारा किल्लिक्कुरिश्शि मंगलम् में कुंचन नंपियार मेमोरियल का उद्घाटन सन् 1967 में किया है। इसे हर साल 5 मई को कुंचन दिवस के रूप में मनाया जाता है। सरकार द्वारा मलयालम भाषा और साहित्य के लिए 'महाकवि कुंचन नंपियार पुरस्कार' हर साल दिया जाता है।

पुरस्कार में 25,001 रुपये की राशि, एक प्रशस्ति पत्र और एक पट्टिका दी जाती है। इस साल 20 फरवरी 2021 को मशहूर कवि प्रभा वर्मा को यह पुरस्कार मिला है। सन् 1780 में सत्तर वर्ष की आयु में रेबिस के कारण ये अतुल्य प्रतिभा चल बसी। आज भी इस नृत्य कला का प्रचार बढ़ता ही रहता है।

कूटियाट्टम का अर्थ संघ नाट्य अथवा संघटित नाटक है। यह प्राचीन संस्कृत नाटकों का पुरातन केरलीय नाट्यरूप है। युनेस्को ने 'कूटियाट्टम' को पुरातन कला के रूप में स्वीकार किया है। इसकी आंगिक, वाचिक, सात्विक, आहार्थ आदि चार रीतियाँ हैं। इस शास्त्रीय नृत्य की इलकियाट्टम, पकर्नाट्टम, इरुन्नाट्टम आदि तीन विशेष रीतियाँ हैं। इसमें संस्कृत नाटकों की प्रस्तुति होती है। कूत्तंबलम के भद्रदीप के सामने कलाकार इसकी प्रस्तुति करते हैं।

राजा कुलशेखर वर्मा ने दसवीं शताब्दि में इसका सुधार किया। इसमें भास, हर्ष और महेन्द्र विक्रम द्वारा लिखे गये नाटक शामिल हैं। इसका प्रधान वाद्य मिषाव नामक वाद्ययन्त्र है। इड़क्का, शंख, कुरुम्कुष़ल, कुषि़तालम आदि बाजे का प्रयोग करते हैं।

नाटकों की प्रस्तुति में केवल एक अंक का ही अभिनय किया जाता है। अंकों में प्रमुखता दिये जाने के कारण विच्छन्नाभिषेकांक, माया सीतांक, शूर्पणखा अंक आदि नाम प्रचलित हो गये। नाटक का एक पूरा अंक प्रस्तुत करने के लिए लगभग आठ दिन चाहिए। पुराने ज़माने में इकतालीस दिन तक की प्रस्तुति होती थी। इसमें माणी माधव चाकक्यार, माणी दामोदर चाक्यार का नाम स्मरणीय हैं कि इस कला को नवजीवन इन्होंने ही दिया है।

सन् बारहवीं शती से शुरू हुए 'चाक्यारकूत्तु' संगीत-नाटक शैली का शास्त्रीय नृत्तरूप है। यह एकांक कलारूप है। नाट्यशास्त्र के तत्वों के आधार पर इसका अभिनय होता है। ये मौखिक कला है। वेशभूषा के साथ एक व्यक्ति अभिनय करता है। नृत्य का संयोजित रूप इतिहास, महाकाव्य, पुराण से लिया गया है। नर्तक के चेहरे, हाव-भाव के साथ प्रस्तुति मनोरंजक होता है। सामाजिक संदर्भों का चित्रण चुटकुले, व्यंग्य भाषा में करता है। इस कथापाठ को लोग आसानी से समझते हैं।

चाक्यार कूत्तु पारम्परिक रूप से चाक्यार समुदाय के, सदस्यों द्वारा किया जाता है। कूत्तु को सबसे पहले शाक्यमुनि ने संशोधित किया। उन्होंने पौराणिक कथाओं को लेकर अभिनय और कहानी कहने के लिए एक ही शब्द का प्रयोग किया, जिससे लोग इसे आसानी से समझने लगे। कूत्तु नृत्य को शाक्यार कूत्तु और अभिनेताओं को शाक्यार के रूप में समझने लगे। केरल के शासक कुलशेखर पेरुमाल (978-1036) ने अपने मित्र एवं हास्य अभिनेता तुल्लल की सहायता से इस कला को नव जीवन प्रदान किया।

इस कला के लिए 'मिष़ाव' की ज़रूरत है साथ में कुलि़तालम भी होता है। कूत्तंबलम में इसकी प्रस्तुति होती है। कलाकार पहले मंदिर के देवता से प्रार्थना करता है। बाद में एक संस्कृत भजन गाता है और मलयालम में समझाता है। राग की आशु रचना से लेकर सारांश के पूरा होने तक प्रस्तावना प्रस्तुत की जाती है। यह कूत्त का मुख्य भाग है।

प्रसिद्ध चाक्यारकूत्त-कूटियाट्टम कलाकार गुरु नाट्याचार्य पेनकुलम रामचाक्यार ने इसे मंदिरों से बाहर लाकर आम लोगों के लिए सुलभ बनाया। आधुनिक समय के स्वर्गीय माणिमाधव चाक्यार ने अपने गुरु रामवर्मा परीक्षित तंपुरान के प्रह्लादचरित् नामक एक संस्कृत चंपू निबन्ध का कूत्त प्रदर्शन किया। इसमें महाकाव्यों और पुराण कहानी के संदर्भों को बताता है।

असिस्टेन्ट प्रोफसर हिन्दी
यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम, केरल।
Mob-9447743225, Email%
sheebasaraths@gmail-com

ऑक्सीजन: मूल कहानी : प्राणवायु (मलयालम) अम्बिकासुतन मंगाट

कॉल बेल के बजते ही अनीशा ने आकर दरवाज़ा खोला। वरुण के खाली हाथों को देख निराश हो उसने पूछा, ''क्या, एक किट भी नहीं मिली?''

मलयालम के प्रख्यात कथाकार एवं समाजसेवी। पारिस्थितिक विमर्श पर 'एन्मकजे' उपन्यास के लिए सम्मानित। कहानी सांग्रह रात्री, रांडु मुद्रा, कमर्शियलब्रेक, मराक्कापिले तेय्यांगल, रांडु मल्सस्यांगल। कई पुरस्कारों से सम्मानित।

सम्पर्क नन्दकम, कान्जंगाड़ साउथ पोस्ट, कासरगोड, केरल, मोबाइल : 9633931270, मेल : ambikasutanmangad@gmail.com

अनुवादक : डॉ. सुप्रिया पी। अहिन्दी प्रदेश में हिन्दी अध्यापन में 11 वर्ष। प्रकाशित पुस्तकें:- कृष्णा सोबती की कहानी कला, हिन्दी उपन्यास के विदेशी पात्र, आधुनिकता का पराग संक्रमण। संपादित हिन्दी के साहित्येत्तर सांदर्भ। अनुवाद में रुचि।

वरुण ने न में सर हिलाया। एक अजीब-सा भय उसकी आँखों में व्याप्त था। बिना कुछ बोले वह भीतर आया।

जूते उतारे बिना ही वह बिस्तर पर निढाल हो गया, पास जाकर अनीशा ने उसके जूते उतारे। अपनी आवाज़ को संभालते हुए वरुण ने पूछा, ''बच्चे किधर हैं?''

''दोनों स्टडी रूम में हैं। परीक्षा के लिए अभी चार दिन बाकी हैं।''

वरुण को लगा कि चुप रहने का मतलब नहीं, ''अनीशा! पूरा शहर छान मारा। ऑक्सीजन बूथ एक भी खुला नहीं है। कई जगहों पर तो भीड़ ने बूथ तोड़ दिए हैं। ऑक्सीजन किट छीनने... कई लोग ऑक्सीजन ख़त्म होने से सड़कों के किनारे गिरे पड़े हैं। चारों ओर की प्रदूप्रित वायु से अस्थमा रोगी जैसे तड़पते लोग, पानी से बाहर निकाली मछली की तरह.... हाय।''

कुछ देर बाद उसने कहा, ''अनीशा! तुम डरो मत। रास्ते पर भी बिना ऑक्सीजन के कई लोग मरे पड़े हैं। हमारे फ्लैट के नीचे भी दो लोग पड़े हैं।'' अनीशा की घूरती आँखें भयभीत थी।

''यह अभाव धोखा है अनीशा। लोग बोल रहे हैं कि काले बाज़ार में मिलेगा। अभाव की खबर चैनल पर फैलते ही रईसों ने बहुत सारी किट खरीदकर जमा कर ली होगी। किट का दाम बढ़ाने के लिए कंपनियाँ अभाव की झूठी खबर फैलाती हैं। पिछले हफ़्ते सरकार द्वारा ऑक्सीजन किट पर से सबसिडी हटाने से ही ये सारी परेशानियाँ शुरू हुई हैं। कल एक दिन में पूरे राज्य में सात हज़ार लोग मरे हैं।''

अनीशा घबराई हुई बोली, ''बिना किसी गलती के अगर लोग ऐसे मरते रहे... सरकार को इसका जवाब नहीं देना होगा? चुनाव आ रहे है न?''

वरुण अजीब सी हँसी हँसने लगा, ''चुनाव? 'बहिष्कार' बोलना बेहतर होगा। हर पाँच साल में जनता तंग आकर सरकार को बहिष्कृत करती है। इसे चुनाव नाम देना ही बेवकूफी है। जो सरकार

अपनी जनता को प्राणवायु देने में असमर्थ है वह टिके ही क्यों?''

अनीशा वरुण के करीब आई, ''वरुण मुझे डर लग रहा है।''

''अनीशा बच्चों को हमारे तनाव का पता न चले। उनकी पढ़ाई पर इसका असर न पड़े। कुछ दिनों तक उन्हें चैनलों और अख़बारों से दूर रखो।''

''आप कैसी बेकार की बात कह रहे हैं? वे सब जानते हैं। उनके लैपटॉप और मोबाइल में पूरी दुनिया की खबरें मिलती हैं। मैंने उन्हें पढ़ाई पर पूरा ध्यान देने को कहा है।''

''हाँ, अभी याद आया। अम्मा और पापा का खाना हो गया?''

''हाँ, दोनों ने खा लिया। अभी मत जगाना। दोपहर की नींद में है।''

''सोते वक्त दोनों के किट का रेगुलेटर मिनिमम कर देती हो न?'' अनीशा ने सर हिलाकर हाँ में जवाब दिया। कमीज़ उतारते हुए वरुण ने कहा, "एक हफ़्ते में किट मिलनी शुरू हो जाएगी ऐसा सब बोल रहे हैं। तब तक के लिए ऑक्सीजन हमारे पास है न। सोचकर ही घबराहट होती है।''

''दो किट मेरे शादी के बक्से में हैं। जरूरत पड़ने पर निकालने के लिए रखे हैं।'' वरुण की आँखों में चमक आ गई।

''बहुत बढ़िया। यह बात तुम्हारे दिमाग में सही आई। पर, फिर भी और कितने दिन हम टिक पाएँगे? मैंने कुछ सोच रखा है...''

अनीशा ने आश्चर्य में पूछा, "क्या?''

मुँह के मास्क पे हाथ रख वरुण बोला, ''परसों रात मैं इसे निकाल दूँगा। सुबह तक.... यही एक रास्ता है।''

अनीशा बौखलायी, "वरुण, तुम नहीं, मैं वह करूँगी। बच्चों की परवरिश और दूसरी जिम्मेदारियों के लिए परिवार को तुम्हारी जरूरत है।''

शाम को शहर में निकला वरुण देर रात खाली हाथ घर लौटा। किट मिलने की कोई उम्मीद अनीशा को भी नहीं थी।

खाने पर बैठे वरुण ने पूछा, "सबने खा लिया?''

''हाँ, बहुत रात हो गई। हम ही अभी जगे हैं।''

''बच्चे सो गए?''

''हाँ...''

''अम्मा और पापा?''

''सो गए। कई बार दोनों पूछ रहे थे आप लौटे कि नहीं।''

खाने के सामने बैठे वरुण बोला, ''मैंने बहुत हिसाब लगाया अनीशा। आज रात किसी एक को मरना ही होगा। ऐसा तो चार पाँच दिन और चलेगा। तो...''

''तो...?''

खाने का निवाला थाली में रख वरुण बिना तनिक भी घबराहट दिखाए बोला, ''दो बुजुर्ग हैं यहाँ। अम्मा और पापा। एक का मास्क तुम्हें अभी हटाना होगा।'' अनीशा घूरने लगी।

''किसका?''

''मुझे नहीं मालूम। वह तुम ही तय कर लो।''

''

सम्पर्क: सहायक आचार्य, हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, तेजस्विनी हिल्सस, पोस्ट पेररया, कासरगोड, केरल 671320,

मोबाइल : 9747293735,

-मेल : supriya@cukerala-ac-in]
drsupriyapcuk@gmail-com

तुझमें समाते समय

मूल लेखिका: रेखा के मलयालम कहानी :निन्निल चयून्न नेरतत्

अनु: डॉ श्रीजा प्रमोद

सिल्कएयर की यात्रा सीबीचन और बच्चों दोनों को बिल्कुल पसंद नहीं थी। सिंगापुर की आपा-धापी भरे सफर को भूल कर किसी आडंबर युक्त अन्य एयरलाइन में यात्रा करना उन्हें पसंद था। लेकिन सूसेन में ऐसी कोई जिद न थी। जिद होनी भी नहीं चाहिए क्योंकि वह विदेशों में रहकर गाढ़ी मेहनत की कमाई से खेती करके जीवन यापन करने वाले परिवार से थी। सूसेन को तो बस जैसे-तैसे गाँव में पहुँचना और एक महीने वहाँ रहना, सीबीचन के घरवालों और सूसेन के घरवालों को ढेर सारे तोहफें देना था। उन सबको एर्णाकुलम और कोट्टयम में शॉपिंग के लिए ले जाना, कपड़े खरीद कर देना, सिनेमा दिखाना, ब्यूटी पार्लर ले जाना, शिकार की हुई गोश्त जैसे मेंढक, हिरण, बकरा आदि के बने अनेक पकवान बनाकर खिलाना और बस उन दिनों को यूँ ही खत्म करना था। सिंगापुर की गाढ़ी मेहनत की कमाई में से काट-छांट कर बचे चार-पाँच लाख को जोर-शोर से खर्च करने के सिवा कुछ भी नहीं हो रहा था। किसी में कोई खास खुशी सूसेन को महसूस भी नहीं होती थी। एक दो साल के अंतराल में गाँव आना एक रिवाज बन चुका था। समय पर न आए तो सगे संबंधी परेशान होने लगेंगे इस वजह से गाँव आया करते थे। एक महीने बाद वापस नहीं लौटे तो भी सगे संबंधी परेशान होंगे इसलिए वापस आ जाया करते थे। धनुष से छूटे बाण की तरह इस जीवन को जीते हुए वर्षों हो गए थे। अभी तक ऊबन महसूस नहीं हुई थी। हो सकता है कभी उब भी जाँऊ। सीबी के घर पर और सूसेन के घर जीविका कमाने कोई और आसार नहीं था। उन सब को जब तक किनारा नहीं मिल जाता तब तक खुद के लिए कुछ करने के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता, इसके लिए न जाने कितने साल लगेंगे। इन सब के बारे में सोच कर सूसेन हमेशा की तरह अपनी चिंताओं में खो गई।

फ्लाइट में मिलने वाले खाने पर टूट पड़ते बच्चों को देख कर लगा कि घर पर ये बिना खाए ही रहे हों। सुसेन को गुस्सा आया लेकिन सफर का मज़ा खराब न हो यह सोचकर बच्चों को गुस्सा करने का मन नहीं किया। बच्चों को देखते रहना वैसे भी सच में बहुत आनंद देता है। नौकरी की माथापच्ची के बीच बच्चे कब बड़े हो गए पता ही नहीं चला। आठ साल की उम्र में सोलह साल का शरीर लिए बड़ी बेटी, चॉकलेट का मज़ा लेती छोटी को कहानी सुना रही थी। सीबीचन स्वप्नलोक में थे। सीबीचन गाँव पहुँचकर होने वाली शराबी महफिल के बारे में सोचकर मन ही मन खुश हो रहे थे। गम्भीर सोच और बड़ी भावनाओं वाले व्यक्तियों के साथ रहना सूसेन को पसंद था। सीबीचन की दुनिया में बहुत छोटी-छोटी बातें ही थीं। अच्छा खाना, शराब पीना, छिछोरे हँसी-मजाक बस इतनी सी ही थी सीबीचन की दुनिया। समझदारी की कोई बड़ी बात ही नहीं थी उनमें। सीबीचन अंदर से डोल की तरह बस खोखले थे। अगर कभी इन बातों की ओर इशारा भी किया तो हंगामा हो जाए। फिर तो बस गाँव का

पूरा का पूरा गँवारू पति बन जाए। बाल पकड़कर खींचना और गालों पर तमाचा जड़ने के बारे में सोचते जरूर थे। लेकिन सिंगापुर की नर्स के पास इन सबके लिए समय न होने के कारण सूसेन हमेशा खामोश रहती थी। दुखी होने पर कभी-कभी कविताएँ लिखती, कहानी लिखती, एंब्रॉयडरी करती, कपड़ों पर मोतियों का काम करती, चित्रकारी करती यह सब करना उसे बहुत पसंद था।

सूसेन को हृदय में भारीपन महसूस हुआ। सर दर्द से फटा जा रहा था। पेन-बाम को लेकर माथे पर दाएँ-बाएँ खूब रगड़ा लेकिन तकलीफ कम नहीं हुई। माथे पर हाथ रखकर बहुत देर तक सोती रही। फिर जब आँखें खुलीं तो देखा कि दूसरी तरफ एक सीट पीछे अवराचन बैठे थे। सीने में बोझ बनी साँस जैसे एक ही साथ बाहर आ गई हो। जैसे गुब्बारे की हवा खोलकर छोड़ दिया गया हो। सारी की सारी हवा एक साथ ही निकल दी गई हो। दर्द गायब, बदन सिहर रहा था। भय से बर्फ बन सीट में जैसे जम गई हो। हाथ-पैर का हिलाना तक मुश्किल। साँसों को पाने के लिए सीना लगातार कोशिश कर रहा था। एक क्षण के लिए नीचे छींटे की तरह दिख रहे पेड़ पौधों और घरती को देखकर लगा कि बच्चों को लेकर नीचे कूद ही जाँऊ। अवराचन अपने बालों को सहलाते मूछों को ताव देते अपने गालों पर हाथ फेर रहे थे। जैसा दिखावा करने वाले पुरुष हमेशा करते हैं। सूसेन का मन अवराचन के लिए फैसला ले चुका था। जहाँ अब कोई अपील नहीं हो सकती थी। कई बार यह फैसला गलत भी सिद्ध हो चुका था, लेकिन अवराचन जैसी हँसी वाले, अवराचन जैसी चाल वाले, अवराचन जैसे सोने वाले सब बुरे हैं। अवराचन के लिए, लिया गया निर्णय गलत नहीं होगा यह सूसेन जानती थी। अभी हाल ही में अवराचन के नए किस्से सुने थे। अवराचन में कोई खास बदलाव नहीं आया है। बालों पर थोड़ा और कालारंग रंग दिया है। पैंसठ साल तक गुजरी उम्र को थोड़ा और पीछे घुमाने की कोशिश में कोई कमी नहीं आई थी। किसी किताब से पढ़े कुछ वाक्यों को सुना कर पास बैठे सेवक से बड़ी ऊँची आवाज में मजाक करके ठहाके मारते हँस रहे थे। हँसने की पुरानी आदत अभी गई नहीं थी। वह उसी गंभीरता के साथ उनमें विद्यमान थी। हिरण का शिकार करने वाले शेर का दृश्य जो कल डिस्कवरी चैनल पर देख था आँखों के सामने फिर प्रत्यक्ष हो गया। झुंड में चर रहे हिरणों के बीच मैदान में आ धमके शेर ने केवल मध्य भाग में अकेले खड़े एक हिरण को ही दबोचा था। उस दृश्य को तब देखा तो उस समय कुछ खास महसूस नहीं हुआ। लेकिन आज उस दृश्य को यूँ ही दृष्टिविगत नहीं किया जा सकता। एयर होस्टस से कुछ कह रहे थे अवराचन। सूसेन ने जब पहली बार अवराचन को देखा था तब भी इसी प्रकार मजाक कर रहे थे। गिरजाघर के पौलोसअचन ने ही पहली बार सूसेन को अवराचन के पास पहुँचाया था।

''नेता जी! यह हमारे उन्नूनी की बेटी है, नर्सिंग किया है। परिवार बड़ी दिक्कत में है सब कुछ बेचकर इसको पढ़ाया है यह कुछ कर ले तो उनका बेड़ा पार हो।"

''क्यों री छोरी! सही में?" अवराचन सूसेन की ओर मुड़े। उसने हँसने का प्रयत्न किया। इसके बाद क्या होगा यह बूझने की बुद्धि सूसेन के पास तब भी थी।

''छोरी तेरी उम्र क्या होगी?" फिर पूछा, ''क्यूँ री! परिवार की नैया पार लगानी है या नहीं? तू वहाँ दिल्ली आ जा। वहीं मेरे फ्लैट में रहना। बेकार में किराये पे मत रहना। मैं हूँ न। तुझे विदेश पहुँचाने का जिम्मा, बस अब मुझ पे छोड़ दे।"

यह कहते हुए अवराचन जोर से हँसने लगे। उसका साथ देते हुए साथ खड़े चार पाँच लोग और पौलोसअचन भी हँस पड़े। सूसेन आश्चर्य से सोचने लगी कि हँसी के अनेक मतलब होते हैं। अपनी सुविधा के लिए, मन की तसल्ली के लिए अपने आप को दा-चार आसान वाक्य सिखा रखे थे। अपमानित महसूस होना चाहिए था। लेकिन पहले से जब तैयारी हो तो अपमान भी रास्ता बदल लेता है। यह दुनिया धैर्यवान व्यक्तियों की है पैसे के आगे इस दुनिया में किसी की नहीं चलती। अवराचन जैसे बुद्धिशाली व्यक्ति को सूसेन ने नहीं देखा था। दिल्ली में अवराचन के फ्लैट में संध्या प्रार्थना करते समय एक आधा बार ही अवराचन वहाँ रहे होंगे। ''तुम ही मेरे रक्षक, तुम ही हो सब कुछ मेरे लिए, हे नाथ तुझमें समाते ही मेरे दर्द का भी अंत होगा।" यह प्रार्थना गीत सुनने के बाद अवराचन ने पूछा,

''छोरी प्रार्थना में लगाता है कि तू ईश्वर को कम, किसी छोरे को अधिक याद कर रही है।"

सूसेन की आँखें भर आईं। इडयारन् मुल्इल में रहनेवाली सफेद नेट वाली ओढ़नी पहने सोलह साल की लड़की बन गई वह। गोरी चिट्टी खूबसूरत छोरी। इमली के बीज जितने बड़े काले बड़े अक्षरों में लिखी इन चार पंक्तियाँ को ही बाइबल के अंदर रखकर मरण, शादी, पाप स्वीकारण आदि क्रियाओं को सम्पन किया जाता है। ''तुझ में समाते ही मेरे दर्द का अंत होगा।" इन चार पंक्तियों का अलाप करते समय गाने वाले गायक के मन में क्या विचार होता है, यह वही जाने। इमली के बीज जितने बड़े अक्षरों में लिखे उन चार पंक्तियों के आन्तरिक भाव केवल वही जानता है। उसके अंदर भी कुछ भावनाएँ और इच्छायें है। इच्छायें भी कुछ कम नहीं, करोड़पति बनने की, चाँद तक जाने की, आसमान में उड़ने के मोह के साथ एक छोटा सी इच्छा यह भी कि सूसेन को भी साथ ले चलना है। 'अप्पेटन' नाम से किसी भी युवक को सम्बोधित करना क्रासतव समुदाय स्वीकार्य नहीं था। लेकिन सूसेन हमेशा उसे 'अप्पेटन' बुलाया करती थी। वह ही था सूसेन के जीवन की उस समय की अन्तिम अभिलाषा। उसके लिए उसने पढ़ाई की, बड़ी हुई, जमीन बेचकर नर्सिंग की पढ़ाई की। उसके लिए ही पूरे परिवार को उसने सड़क पर लाकर खड़ा कर दिया। सूसेन की नजरों ने अवराचन जैसा धैर्यवान व्यक्ति नहीं देखा था।

सूसेन जब अवराचन के फ्लैट में दिल्ली में थी तभी अवराचन के खिलाफ एक केस आया कि उन्होंने मामल्कणड्म की चौदह वर्षीय नबालिग के साथ छेड़छाड़ की है। इस मामले के फैलते ही मित्र- सहयोगी सब अवराचन से डर कर अलग हो गए। उस समय भी अवराचन को डर ने नहीं छुआ। अवराचन के रसोइए कोराभैया ने बताया कि उनकी बीवी और दो बेटियाँ इस घटना के बाद उनसे सीधे मुँह बात तक नहीं करतीं। मामल्कणड्म की पीड़िता अवराचन के बच्चों से छोटी थी। गाँव में अपने घर अवराचन एक अतिथि की तरह कभी-कभार ही परिवार से मिलने जाते थे। कुछ देर वहाँ रुकते और थोड़ा बहुत खा पी लेने के बाद में लौट जाते थे। कभी भी जवाब न मिलने वाले कुछ कठिन सवाल पूछते जिनका जवाब न तो बीवी के पास और न ही बच्चों के पास होता। पत्थर के समान मौन खड़ी बीबी और बेटियों की भरी आँखों को देखकर जब अवराचन लौटते तो स्त्री सौंदर्य के बारे में सोचने वाले केवल एक लम्पट व्यक्ति मात्र रह जाते। अवराचन एक चालाक सारस की तरह जीवन से केवल सुख मात्र चुगने वाले बिल्कुल चंचल व्यक्ति थे। अवराचन जैसे शक्तिशाली व्यक्ति को भी कभी सूसेन में नहीं देखा था। किसी बात का निर्णय कर लिया तो बस कर लिया चाहे वह अकेले पड़ जाए, चाहे सब कुछ नष्ट हो जाए,

लेकिन कभी हताश नहीं होते थे। दिल्ली के फ्लैट में पहुँचने वाली हर लड़की को कैसे भी कर उनकी नैया को पार ही करवा देते थे। अवराचन जैसे क्रूर व्यक्ति से भी कभी सूसेन का समना नहीं हुआ था। अवराचन को लगता था कि लड़कियाँ तो बस यूँ ही हैं लड़कियों को तो नाम तक का हक नहीं है। मामल्कणड्म केस में विजयी होने और मंत्री बनने की खुशी में खूब दावतें हुईं। दावतों में किए नशे के उन्माद में एक बार अवराचन ने कहा

''अरे वह एक अल्हड़ छोरी थी, उसे समय, स्थान किसी का कुछ होशोहवास नहीं था। नहीं तो मैं कैसे बच पाता। बेवकूफ लड़की। उस जैसी छोरी को तो पकड़कर सजा दे देनी चाहिए। मुझे तुम्हारी जैसी होनहार बुद्धिशाली लड़की पसंद है। जिससे कभी भी ऊब न हो।"

उस रात अवराचन को जान से मारने के लिए उठी जरूर थी सूसेन, लेकिन हर बार की तरह रिश्तो के धागों में उलझ कर इस बार भी पीछे हट गई। फिर अधिक समय तक सूसेन वहाँ रह नहीं पाई। वहाँ से लौटते वक्त कोरा भैया बोले थे कि ''अवराचन के फ्लैट में अधिक दिनों तक केवल तुम ही टिकी हो सूसेन। अगर तुम दिल से चाहती तो हमेशा के लिए यहाँ रह सकती थी।" यह बोलकर वह निराश हो गए।

डिस्कवरी चैनल में देखा दृश्य झट से याद आया। हिरण के झुंड के मध्य भाग में चुपचाप हैरान खड़े हिरण के बछड़े को देखकर फिर से सूसेन को घबराहट हुई। बाकी हिरणों को शेर का शिकार होने से बचाने के लिए जैसे वह खड़ी हो। क्लोजअप शॉट में देखा तो उस हिरण के आँखों में एक बूंद आँसू जरूर था।

सीबीचन और बच्चे विमान से उत्तर रहे थे। अवराचन पहले ही उतर चुके थे। अवराचन और साथी बिलकुल आगे अब चुपचाप भागने की गुंजाइश भी नहीं थी।

''तुम्हें जहाज में मैंने देख लिया था। तुम सो रही थी। सोचा परेशान न करूँ।" अवराचन को किसी जाने पहचाने व्यक्ति की तरह देखकर आंतरिक भय से सूसन ने हँसते हुए पूछा ''मुझे जानते हो?" सूसेन का ह्दय जैसे दोनों घुटनों के बीच टकराकर जोर से धड़क रहा था।

''यह कैसा सवाल है, तुम्हें कैसे भूल सकते हैं?"

अवराचन सीधे सीबीचन की तरफ मुड़े, ''यह तुम्हारा पति है न! इसका नाम क्या है? हो सीबी है न। तो सुनो सीबी यह पहले इतनी मोटी नहीं थी। बड़ी पतली, दुबली, गोरी चिट्टी थी। किसी मोमबत्ती की तरह मुलायम गेहूं की बाली जैसी सुन्दर। इसका बापू उन्नूनी हमारे इलाके का पुराने जान-पहचान वाला था। यह बहुत होशियार थी। पढ़ाई के लिए मैंने कुछ मदद की थी है न री!"

अवराचन के इस बार की हँसी में सब कुछ गिरकर तहस-नहस हो जाएगा ऐसा सूसेन को लगा। पैर थक चुके थे थक कर चूर हो चुके थे।

''ओ सीबी मैं अब पहले जैसे यात्राएँ नहीं करता। पहले जैसा जोश नहीं रहा। फिर आराम ही कहाँ है मेरे जीवन में।"

अवराचन यह सब इतनी जोर से सीबीचन को सुना रहे थे कह वह सीबी से रहे थे लेकिन सुनाना वह सूसेन को चाहते थे। सूसेन की बड़ी बेटी को बिल्कुल अपनी बाहों में लपेटकर अवराचन आगे चलने लगे। बेटी के भारी शरीर उनके हाथों में जैसे मसल रहा था। उनका दाहिना हाथ बेटी के छाती पर एक सांप की तरह कसकर लिपट गया था। भारी पैरों को किसी तरह काबू में कर सूसेन बेटी के पास पहुँची। बेटी को जैसे-तैसे कर अपनी ओर कर लिया। अवराचन के अलावा किसी को सूसेन के मन में चल रहे तूफान की समझ न थी। प्यारे दादा की उम्र के व्यक्ति के हाथों से छीन लेनेवाली

माँ के वात्सल्य की अधिकता का दुख बेटी के मुख पर साफ प्रकट हो रहा था। अवराचन के मुख पर चिरंजीवी होने की गर्व भरी हँसी खिल रही थी। जानबूझकर अवराचन एक दो कदम पीछे चलने के बाद सूसेन के पास पहुँचे।

''तुम्हें एक दो महीने की छुट्टियाँ तो होगी न। मैं गेस्ट हाउस में ही हूँ आ जाना। मिले बिना न जाना।" अवराचन ने बड़ी सौम्यता से कहा था लेकिन उनके वाक्यों की अंतर ध्वनि सूसेन समझ रही थी। फिर जैसे किसी अर्थी पर सवार वह चल रही थी। उनकी बातों में ही बस सौम्यता थी बाकी सब आदेश था। सी.डी अब्राहिम की जयकार करने वाले लोगों के बीच जाते हुए अवराचन को आश्चर्य से देखते खड़ा रह गये सीबीचन। ''इतने बड़े लोगों से क्या ऐसे बातें करते हैं, तुम्हें थोड़ी तो मर्यादा सीखनी चाहिए।"

बाहर की भीड़ और जयकार देखकर सीबीचन परेशान था। ''तुम्हारे पिताजी के इतने बड़े पहचान वाले थे। यह मैं नहीं जानता था।"

कार में सूसेन के करीब सटकर बैठकर सीबीचन बहुत गर्व महसूस कर रहा थे। शेर का मरे हिरण के बच्चे को अपने मुँह में डालकर जाने का दृश्य डिस्कवरी चैनल में न देख पाने का खेद सूसेन को जरूर था। क्या शेर के मुँह में दबे हिरण के मरे बच्चे को छोड़कर, किसी अन्य हिरण की तलाश में निकल गया होगा? इस शंका का जवाब उसे कहाँ से मिलेगा। इसलिए कहते हैं हर दृश्य की एक शुरुआत होती है उसे देखे बिना नहीं जाना चाहिए।

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

उच्च माध्यमिक विद्यालय मूरकनाड,
ऊरगाटीरी पी ओ, मलप्पुरम, केरल
मोबाइल : 9349949069
मेल : srijapramod99@gmail-com

इंसान केवल कविता से नहीं जीते–

अनुवादः डॉ. शीला कुमारी

(रफीख अहम्मद से विजय सी. एच. की भेंटवाता)

विजयः–नब्बे की वेला में प्रकाशित पुतुमोष़विष़किल नामक कविता संग्रह के माध्यम से आट्टूर रविवर्मा द्वारा परिचित कराए उत्तराधुनिक कवियों की बिनावट में आए आप सिनेमा के संगीत लेखन के क्षेत्र में कैसे आ पहुँचे?

रफीखः–बिल्कुल अयाचित था। कुँवारेपन से लेकर मुझे गीतों से बहुत शौक था। फिर भी सिनेमा की संगीत रचना के बारे में कदापि मैंने सोचा तक नहीं। पी.टी. कुंजुमोहम्मद, वी.के. श्रीरामन आदि के सहयोगान्तर घटित घटना है यह। कुंजिक्का के गर्ष़ोम के लिए गाना लिखते वक्त मैंने सोचा कि इसी से इसकी इति हो रही है। लेकिन पता नहीं कैसे, मैं संगीत रचना का एक अंग बनता जा रहा था। सिनेमा एक ऐसी दुनिया है, जिसमें अपने सिर दिखाने की उम्मीद से जिंदगी बर्बाद करने वाले बहुत लोगों को मैं जानता हूँ। लेकिन जिसे मैंने अप्राप्य दुनिया मानकर एक बार भी सपना देखने की कोशिश नहीं की थी, मैं उसका अंग बन गया। एक सरकारी दफ्तर में बाबू के पद पर कार्य करने से ज़्यादा यह आत्मसंघर्ष रहित, सृजनात्मक आनंन्द प्रदत्त, सबसे बढ़कर आर्थिक लाभकर उपजीवनमार्ग भी है। इंसान केवल कविता से नहीं जीते हैं न?

विजयः– सिनेमा जगत में पहुँचने के बाद अब आपका स्थान कहाँ है? इसके बारे में क्या आपने कभी सोचा है?

रफीखः–बहुत गहराई से मैंने सोचा था। लेकिन कविता के मीठे रसपान की अव्वल अनुभूत वेला वह

रही, जब अक्षरों से मैं बिल्कुल अनभिज्ञ था। पंक्तियों से इश्क रखने वाले एक व्यक्ति के नाते, गीतों के संगीत-लय से ज्यादा पंक्तियों की सुरमयता ने ही मुझे अविभूत कर दिया। आयिरम पादसरंगल किलुंङ, आलुवा पुष़ा पिन्नेयुम ओष़ुकी (हजारों पायल रुनझुनाईं/ (आलुवा नदी फिर से बहने लगी।) वाली पंक्तियाँ सुनने वाले एक बच्चे की भावना नदी से, उसकी लहरों से, उनसे उद्‌भूत पायलों जैसी रुनझुन की आवाज़ से संबंधित कल्पनाओं की ओर पंख फैला देती है। काव्य-व्युत्पत्ति संबंधित अधिक जानकारी न रखने वाले भी कविता जैसे भूभाग में प्रवेश करने के काबिल हैं। मलयालम सिनेमा गीत के आम जनता तक आने के पीछे यह काबलियत कार्यरत थी। केवल यही नहीं, उससे भी बढ़कर सिनेमा गीत ने हमारे बहु-स्वर समूह-सृजन के लिए अनेकानेक सामाजिक दायित्व निभाए हैं, उन सबों के बारे में अब विस्तृत बयान नहीं देना चाहता।

विजय:-यह बतायें कि बहुत सारे कवियों द्वारा बताए गए काव्यानुशीलन के बारे में आपका मत क्या है?

रफीख:-ऐसी किसी परंपरा से मेरा संबंध नहीं है। मैं पौराणिक एवं ऐतिहासिक काव्य सुनकर परिवर्तित व्यक्ति नहीं हूँ। केवल कुछ पढ़ने के बाद पढ़-समझ कर ही अर्जित किया। मेरे अनुभव और दृष्टिकोण बिल्कुल भिन्न थे। सत्तर के अंतिम और अस्सी के प्रारंभ में से बीते मेरे कौमार्य-यौवन के दिनों ने एक ऐसी दुनिया का सामना करा दिया था, जो अतिसख्त, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक डांवांडोल थी। उसमें सिनेमा गीतों की कोई भी प्रासंगिकता नहीं थी। वह एक ऐसा ज़माना था, जहाँ लोकवाद एवं लोकप्रियता को सब लोग बड़ा पाप-मानते थे। उस युग की साहित्याधुनिकता में व्यक्तित्ववाली महिलाएँ नहीं थीं, बूढ़े-बच्चे नहीं थे। आधुनिकता माने इनकार की मर्दानगी समझी जाती थी। वे हँसते नहीं थे, वे आधुनिकवादी ऐसे थे जो सदा बीड़ी फूँकते, अधिक गंभीरता से सोच-विचार करके और खलबल से जिंदगी बिताने वाले थे। उस समय मैंने उनकी आराधना की थी। उनके समान मैंने भी यह सोचा था कि संगीत का आस्वादन करना एक तरह का अशिष्ट मनोरंजन व काल्पनिक जगत है। लेकिन संगीत मेरी सबसे बड़ी कमज़ोरी थी। ऐसा आत्मसंघर्ष उसी कालावधि में मैंने बहुत भोगा था। जैसे भी हो, सिनेमा गीतों से ज्यादा, कल्पना से युक्त बिंबों से भरी प्रिय कविताएँ लिखीं। नेरूदा महाकवि के पद पर आसीन हुआ, जबकि चंडम्पुष़ा का स्तर नीचे की ओर गया। इन सिद्धान्तों पर मुझे कभी यकीन नहीं हुआ था। यह सच्चाई मैंने जान ली कि नेरूदा, चार्ली चैपलिन, वैक्कम मोहम्मद आदि शख्सियत जनप्रिय कलाकार एवं साहित्यकार के पद पर अद्यतन भी विराजित रहने की वजह से, अरविंदन के वलिय लोकवुम् चेरिय मनुष्यरुम् नामक कार्टून सीरज़ के गुरुजी द्वारा कहे गए सिद्धान्त के समान जनप्रियता उतनी सरल बात तो नहीं है। पी. भास्कर जैसे कवियों ने सिर्फ संगीत से मलयाली समाज को कैसे प्रभावित किया है और उनके सोच-विचारों को हेर-फेरकर ठीक कर दिया है, यह सब देखने समझने की कोशिश मैंने की।

विजय:-वर्तमान में परंपरा का निषेध किए बिना ही आधुनिकता की भावुकता का आप प्रचार कर रहे हैं, ऐसी कुछ लोगों की राय है.....

परंपरा माने क्या है? मैं पूर्ण रूप से अवगत नहीं। आपके एक बेटा होने पर आप एक पापा बन जाते हैं। उस बेटे की एक औलाद होने पर वह भी एक पिता बन जाता है। हालांकि, इन दोनों पिताओं के बीच बहुत सारे भेद हैं, लेकिन पितृत्व नामक परंपरा एक ही है। मलयालम कविता की परंपरा क्या है? मलयालम कविता की मुख्यधारा कण्णिनिक्करों में से, एषुत्तच्चनों में से शुरू होकर उत्तराधुनिकता में पहुँचने तक उसकी अंतर्धारारूपी एक परंपरा उसमें निहित है। मुझे कभी भी ऐसा नहीं लगा कि चाहे, जीवनी साहित्य हो, प्रगतिशील साहित्य हो, या आधुनिक कविता ही सही, उसे खंडित कर सके। कोई एक चंङमपुष़ा या अलि-थलि व्यक्तियों ने इस परंपरा का उल्लंघन किया होगा, इसके सिवाय, वैयक्तिक तौर पर मुझे उस परंपरा से कोई संबंध नहीं है। परंपरा न केवल श्रेष्ठ या अकादमीय है, बल्कि उसमें कई प्रकार की पंखुड़ियाँ सम्मिलित हैं। मलयालम एकमात्र ऐसी भाषा है, जो हमारी संस्कृति और भाषा की एक सामान्य पूंजी है।

मेरी ये हल्की-फुल्की कविताएँ, मलयालम भाषा के एवं मलयाल लोगों के वैश्विक नजारों के विकास-परिवर्तनों के प्रचलित भाषित ही होंगी। उत्तराधुनिक युग तक मलयालम में दलित कविताएँ नहीं थीं। सच्चाई के सामने आँखें मूंदने से कोई फायदा नहीं, इस मत पर भरोसा रखने वाला व्यक्ति हूँ मैं। इसीलिए ही मैं यह कहना चाहता हूँ कि मलयालम कविता पर हिन्दुत्व एवं ऊँची जात-पात का एक अदृश्य कवच है। इसलिए अन्य समुदायों से आने वाले लोगों को इस क्षेत्र में अपनी एक पहचान पाने की विडंबना है। यों मुख्यधारा में शामिल बहुत कम लोगों को अपनी जगह कायम रखने के लिए संस्कृत और पुराण-इतिहासों के बलबूतों की ज़रूरत पड़ी। लेकिन उत्तराधुनिक कविताओं ने उन सबको पलट दिया। सुनिए, इतनी अधिक नारियाँ एवं हाशिए पर कविता की दुनिया में जीवंत रहने वाला एक समय इसके पहले मौजूद था क्या? उस मायने में मेरी कविता बिल्कुल परंपरा से मुक्त है। लेकिन हम एक भाषा व एक बहु-भाषी समाज के अंदर के अंदर जीते हैं, इसलिए मैं भी परंपराबद्ध हूँ। उत्तराधुनिक मलयालम कविता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें जितनी भी कमियाँ मौजूद हैं, फिर भी उसने बहुत अधिक गणतंत्रीय कविताएँ अर्जित की हैं। वह सेक्युलर बन गया। हाशिये तक एवं महिलाओं की आवाज़ पहले से ज्यादा ज़ोर से सुनवा दी।

विजय:-अधुनातन युग में कविता की संभावनाएँ कैसी हैं? उसका भविष्य????

रफीख:-आज का युग बहुत संकीर्ण है। भविष्य अप्रत्याशित है। आगामी युग निश्चिंत दिमागों का युग है। उसके तहत कला और साहित्य की स्थिति कैसी होगी, इस पर भविष्यवाणी नहीं हो सकती। आजकल सब विस्तृत होते जा रहे हैं। हमारे आगे गहराइयों के ढके स्तर दिखाई देते हैं। ऐसा भी एक समय था, जहाँ शुरूआत से लेकर वर्णमाला पढ़ाई जाती थी। नव जागरण आंदोलन एवं शास्त्रीय गानों के साथ ही साथ श्री नारायण गुरु जैसे लोगों के लिए अन्तरिक्ष यान तैयार कर, मंगल ग्रह पर खरीदी भूमि का कर, ऑनलाइन पर चुकाने के हद तक बढ़े एक दुनिया में बैठकर मासिक चक्र क्या अशुद्ध है? ढंग की चर्चा हम कर रहे हैं। ऐसे सवाल उठाते हैं कि जाति के बारे में पूछने पर क्या होता है। हम एक निर्लज्ज समाज के लोग बन चुके हैं। कविता के बारे में कहें तो मैं भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति के सर्वोच्च संभावित रूप की तरह कविता को देखता हूँ। यद्यपि पूर्वोल्लेख के अनुसार साइबर युग महान सांस्कृतिक छलांग का मार्गदर्शक बन गया है, फिर भी मेरा दृष्टिकोण यह है कि कविता जैसे अभिव्यंजक रूप की बुनियाद स्वत्व को उसने सरल बना दिया है। आपकी आँखों को जल्द ही आकर्षित करने की तरकीबें वह ढूँढ़ रहा है। आपके दिमाग में घुसकर जुड़ बैठने के लिए अवतरित प्रगतिशील अकादमिक उसके ऊपर अनेक तार बाँध चुके हैं। पोलिटिकल करक्ट्नस (political correctness) के बारे में मौजूद बुद्धिवाद उनमें एक है। लावण्य एवं लेखन के अनबूझ तलों को पूर्ण रूप से निराकरण करने वाली सांस्कृतिक आलोचना पद्धति भी सृजनात्मकता की स्वच्छन्दता को बुझा देती है। फिर भी एक स्वच्छ एवं सटीक कल की प्रतीक्षा मैं करता हूँ।

विजय:-बॉलीवुड सिनेमा के लिए आप जो पटकथा लिख रहे हैं, उसके मुख्य अंग क्या-क्या हैं?

रफीख:-एक प्रेम कहानी लिखने को कहा गया है। लेकिन आमतौर पर देखे जाने वाले बॉलीवुड सिनेमा से कुछ अलग तरह का काम होगा ही यह सिनेमा। इसकी मूल कहानी दिल्ली के बाशिन्दे एक मलयाल परिवार से संबंधित है। कहानी की बहुतेरी घटनाएँ शहरों में और बाकी जो हैं केरल के आंचलिक वातावरण में ही घटित होती हैं। शहर एवं गाँव के सांस्कृतिक एवं रहन-सहन के भेदभाव कहानी में बाधाएँ पहुँचा देते हैं। कुछ काल से मलयाल सिनेमा निर्माण में प्रसिद्ध बृजेश मणि ही इसके निदेशक हैं। वे हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी सिनेमा के निर्माण क्षेत्र के ज्यादा अनुभवी हैं।

L"Associate Professor
Hindi"University
College
Thiruvananthapuram

कुमारन आशान:मलयालम के सुधारवादी कवि

-डॉ शीना ऐप्पन

उन्नीसवीं शताब्दि के अंतिम चरण में तथा बीसवीं शताब्दि के प्रारंभिक दशकों में मलयालम काव्य जगत में स्वच्छंदतावाद का जो प्रारंभ हुआ उसके आधार स्तम्भों के रूप में वल्लत्तोल नारायण मेनन, उल्लूर एस. परमेश्वर अय्यर और कुमारन आशान को माना जाता है। तत्कालीन मलयालम कविता को रूढियों से अलग कर, भावों की उदात्तता, अनुभूति और संवेदना की तीव्रता तथा आदर्श और कल्पना के चरम शिखर तक पहुँचाने का श्रेय इस कवित्रय का है। इनमें से आशान मलयालम की रूमानी काव्यधारा का प्रवर्तक और प्रतिनिधि कवि माना जाता है। दूसरी ओर वे अपने सामाजिक दृष्टिकोण और जीवन दृष्टि के कारण एक विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी भी रहे।

कुमारन आशान का जन्म केरल के सुदूर दक्षिण जिला तिरुवनंतपुरम के कायिक्करा नामक गाँव में 12 अप्रैल 1893 को हुआ था। केरल की परंपरा के अनुसार उनकी प्राथमिक शिक्षा एक एषुत्तच्चन (ग्राम शिक्षक) के यहाँ शुरू हुई। फिर संस्कृत पढ़ने के लिए उन्हें कोच्चुरामन वैद्य के यहाँ भेजा गया। कोच्चुरामन वैद्य, रामन पिल्लै आशान के शिष्य थे जो कि केरल के सामाजिक क्रांति के अग्रदूत श्रीनारायणगुरु के बचपन के गुरू थे। इस प्रकार बाद में उन्हें श्रीनारायणगुरु के संपर्क में आने का मौका मिला। श्रीनारायण गुरू से भेंट होने के बाद वे उनके साथ रहने लगे। वहाँ रहते हुआ उन्होंने संस्कृत, वेद, योग, अद्वैत, शैव-दर्शन आदि का अध्ययन किया। अपने शिष्य की बुद्धिमत्ता से संतुष्ट गुरू ने उन्हें उच्च शिक्षा के लिए बंग्लोर भेजा। बंग्लोर के निवास काल में आशान ने 'प्रबोध चन्द्रोदयं' और 'सौन्दर्य लहरी' का अनुवाद किया। बंग्लोर में हैजा फैलने के कारण वहाँ से मद्रास और फिर कलकत्ता चले गए। कलकत्ते के केन्द्रीय हिन्दू कॉलेज से उन्होंने तर्कशास्त्र की उपाधि और अंग्रेज़ी में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त कर ली। पाँच वर्ष के इस प्रवास काल ने उनके अनुभवों को विस्तृत, चिंता को संपुष्ट और दृष्टिकोण को परिष्कृत किया। दूसरी ओर बांग्ला प्रवास ने उन्हें वहाँ के साहित्यिक और सामाजिक नवोत्थान से लाभ उठाने का अवसर प्रदान किया। आशान का काव्य रचनाकाल 1907 से 1924 तक है। 1924 में हुई एक नाव दुर्घटना में पल्लना नामक नदी में उनकी मृत्यु हुई। अपनी रचना 'दुरवस्था' में उन्होंने जो पंक्तियाँ लिखीं, वे उनके ही अंत की भविष्यवाणी सिद्ध हुईं-

अंतहीन गहराई की ओर
हाय: डूब रहा हूँ, डूब रहा हूँ
एक दु:स्वप्न के समान
बिना किसी शक्ति के सहारे के
ऊपर उठने का प्रयत्न कर रहा हूँ
मगर मेरा पैर कहीं टिकता नहीं
अरी ओ भावने। तू मुझे पंख लगा दे।

(दुखस्था पृ. 139)

कुमारन आशान आधुनिक मलयाम की दो साहित्यिक धाराओँ के प्रतिनिधि कवि थे, स्वच्छंदतावादी और यथार्थवादी। आशान के काव्यों का मूल भाव समाज सुधार रहा। क्रांतिकारी से ज्यादा वे पुनरुत्थानवादी थे। काल, भाव और कला की दृष्टि से आशान की काव्य साधना को

चार भागों में बांटा जा सकता है। भक्ति् प्रधान, स्वच्छंदतावादी, पौराणिक एवं सामाजिक समस्या प्रधान । उनकी भक्ति प्रधान रचनाओं में नारायण गुरु के उपदेश, वेदांत, दर्शन आदि के प्रभाव हैं । उनके भक्तिमय गीत सगुणोपासना से निर्गुणोपासन की ओर और वहाँ से प्रेम दर्शन की ओर चलनेवाली चेतनापूर्ण काव्य कृतियाँ हैं। उनकी स्वच्छंदतावादी रचनाओं में सबसे मशहूर है 'पतित पुष्प' (वीण पूवु) जो मलयालम के नये काव्य आंदोलन की सुंदर उपलब्धि के रूप में स्वीकृत है। जीवन की क्षणभंगुरता का दर्शन इसमें पाया जाता है। अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं 'नलिनी और लीला'।

पौराणिक रचनाओं में प्रमुख है 'चिंतामग्न सीता' (चिंताविष्टयाय सीता) इसके बारे में कृष्ण चैतन्य का उल्लेख महत्वपूर्ण है:

(Asan's Sita is one of the most unforgettable figures in world literature, The history of Malayalam literature P- 38)

सामाजिक समस्यामूलक रचनाओं में दुखस्था, चंडालभिक्षुकी, करुणा आदि प्रमुख हैं ।

हर कलाकार या कवि अपने युग का प्रतिनिधि होता है। अत: उस युग की प्रवृत्तियों से, उसकी छाया से, मुक्त रहना उसके लिए असंभव है। उन्नीसवीं शताब्दि में भारतीय जीवन में हुए पुनरुत्थान का प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा था। इसके फलस्वरूप साहित्य में एक प्रकार का सुधार या परिष्कार द्रष्टव्य होने लगा। इस सुधारवाद के विविध पहलू आशान की कृतियों में प्रकट हैं।

काव्य की आधारभूत चिंतनधारा में परिवर्तन लाकर, परंपरा से चली आयी काव्य शैली को परिष्कृत करके नई प्रवृत्तियों की प्रतिष्ठा करने में आशान जी सफल निकले। उन्होंने तत्कालीन समाज एवं साहित्य की अपेक्षाओं की पूर्ति की। परतंत्रता के वातावरण से उत्पन्न सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति आशान जी ने अपनी सबल लेखनी से की। देश की शैक्षिक स्थिति पर कवि ने अपना विचार यों प्रकट किया-

शिक्षा के लिए धन लेते थे नहीं पहले लेकिन
आज इच्छुक को भी बिना धन वह मिलेगी नहीं।"
(कुमार आशान पद्य कृतियाँ, भाग चार पृ. 329)

तत्कालीन समाज में प्रचलित शिक्षा की दुर्बलताओं और हीनताओं की चर्चा करके इन्होंने यह दिखाया कि देश की दुर्दशा का सबसे बडा कारण शिक्षा का अभाव रहा है ।

जाति व्यस्था से उत्पन्न सामाजिक दुर्दशा की ओर भी इन्होंने इशारा किया है और मनुष्य को आपस में बाँटने वाली इस रूढ़िगत व्यवस्था की निरर्थकता पर सोचने को मज़बूर किया है। जैसे -

"हे भारत माता! तू रोती क्यों है?
परतंत्रता तेरे लिए विधि कल्पित है।
जाति के नाम पर लड़ मरते ये तेरे बच्चे!
सोच! इनके लिए स्वराज्य फिर क्यों?"
(कुमारन आशान पद्य कृतियाँ पृ. 330)

भारतीय समाज का पददलित एवं शोषित वर्ग नारी का है। नारी की दुर्दशा का मानसिक चित्रण आशान ने अपने काव्यों में उकेरा है। जैसे-

"आशा पिता की मर्यादा कुल की
परतंत्रता नारी की
मानकर उसने त्याग दिया
स्वेच्छा को मिट्टी पर।"
(लीला, कुमर आशान, पृ. 123)

अस्पृश्यता जैसे सामाजिक अभिशाप की ओर भी कवि ने आक्रोश प्रकट किया है। जैसे-

"छू नहीं सकते जिनको
स्पर्ष नहीं कर सकते जिनको
जिनके आने से दृष्टि में होती है छूत
विवाह नहीं कर सकते जो आपस में
और खा नहीं सकते जो एक साथ
ऐसे हैं जातियों के पिशाच यहाँ। (दुरवस्था, कुमार आशान पृ.112)

मनुष्य-मनुष्य के लिए अपवित्र है ।
धरती पर चलना अस्पृश्यता है

यही नरक है हाय।
क्या ऐसा को देश है।"

तत्कालीन समाज की दुर्दशा का चित्रण करके, उस स्थिति के बारे में अवगत कराके उसको सुधारने की प्रेरणा भी कवि ने अपने काव्य के जरिए । स्वतंत्रता के महत्व पर आशान का विचार ये हैं

''स्वतंत्रता ही अमृत है
स्वतंत्रता ही जीवन है
परतंत्रता तो मानियों को
मृत्यु से भी भयानक है ।"
(मणिमला, पद्य तियाँ, पृ. 288)

उस समय समाज में प्रचलित ऊँच -नीच, छुआछूत की प्रथा देश का अहित कर रही थी। धर्म की दृष्टि से राष्ट्रोन्नति की दृष्टि से यह ऊँच-नीचता देश का सर्वनाश कर रही थी। आशान ने इस व्यवस्था से समाज को स्वतंत्र करने के लिए काव्य को माध्यम बनाया। जाति के बारे में उनका विचार यों हैं-

''सुख में लिप्सा बनकर
पर कल्याण में अप्रिय बनकर
मूर्खों के मन में उभरने वाली
ईर्ष्या की ही है जाती।"
(चण्डालभिक्षुकी पृ. 215)

इसी काव्य में जाति की निरर्थकता का उल्लेख उन्होंने किया है

''हे राजन, क्या पूछूँ क्या कहूँ
जाति केवल विडम्बना है
कहो ब्राह्मण का जन्म
हुआ किधर से
लता के नोंक से या बादलों में से
बोलो यज्ञाग्नि के समान दलित
खण्डयोग से ही जन्म लिया है।
क्या यह जाति खून में ही मिली है
हड्डी माँस इसमें है क्या?"
(चंडालभिक्षुकी, पृ. 212)

जाति-पाति को मिटाने के लिए आशान एक ओर समता और समन्वय का संदेश देते हैं तो दूसरी ओर वे कहते हैं

''बदलो कानूनों को स्वयं
वरना वे ही बदलेंगे तुम्हीं लोगों को ।"
(दुखस्था, पृ. 175)

आशान को स्नेहगायक का पद प्राप्त हो गया था। उनके प्राय: सभी काव्यों में प्रेम की भावना, उसके महत्व का वर्णन मिलता है। उनके विश्व मानवतावाद के उत्तम उदाहरण चंडालभिक्षुकी नामक काव्य में प्राप्त है-

''प्रेम से जागृत है संसार
प्रेम से आगे बढ़ता है
प्रेम ही शक्ति है जग में
स्वयं वही सब के लिए आनंद है।
प्रेम नरक के द्वीप पर
स्वर्ग गृह बनेगा ।'' (पृ. 217)

आशान की कृतियों से गुजरते वक्त यह ज्ञात होता है कि वे एक ओर समाज की गंभीर समस्याओं से उलझे हुए थे, तो दूसरी ओर अधिक विशाल मानवीय भावों से भी आकृष्ट थे। उनकी कविताओं के बारे ऐसा कहा जा सकता है कि गंभीर पाठक उनके तत्वचिंतन में रम सकते हैं, प्रगतिवादी उनकी आवेशहीन, मंद पर गहरी क्रांति भावना से आकृष्ट हो सकते हैं और सामान्य पाठक एक राग विरागमय जगत में आकर अपना विस्मरण कर सकते हैं। अपने युग में भारतीय साहित्यिक चिंतन को सशक्त आधार देकर काव्य से प्रतिष्ठित करनेवाले और अपनी भाषा की कविता को सशक्त वाणी देकर समुन्नत बनानेवाले कुमरान आशान सचमुच ही श्रेष्ठ हैं। मलयालम साहित्य में यही उनकी पहचान है। महान कवि के जन्म की एक सौ पचासवीं वर्षगांठ के इस अवसर पर उनपर लेख लिखने का अवसर मिल जाना सचमुच सौभाग्य की बात है।

House No. -2, Alphonsa Meadows Thekkemala, P.o.Kozhecherry, Pathanamthitta, Kerala-689654

जागृत नारी

मूल कवि: प्रो. विष्णु नारायण नंपूतिरी

अनुवादक: डॉ शीलाकुमारी एल (शीला गौरभि)

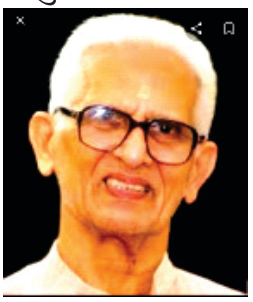

हे राम, आपने मुझे क्यों
व्यर्थ जगाया,
इस कोमल स्वप्नाकीर्ण-
सुखद निद्रा से?
जाग कहाँ जा पहुँचूँ?
पुरानी धुंधली पड़ी-
दुनिया है न? राजन!
आपका यह कर्मक्षेत्र?
विपन, मिथ्याचार-के घोंसले,
उनके कोटर-कोटर पर,
भिनभिनाते
दुबकते व रक्त लोग-
(अपने को स्वीकृत करने से
भयभीत,
खुद को तिरस्कृत
बुद्धि वर्ग, बेचारे!
भद्र उन दाढ़ी वालों के
अहाते में वापस जाकर
क्षुद्र मोक्षोपाय
ढूंढने से बेहतर,
इन सपने से भरी हल्की इस
सुषुप्त में, पहाड़ी-
प्रपातों में
राग माधुरी सुनके
प्रदोष प्रत्यूष
दबने वाली इस मिट्टी में
मनहर आत्मा की गंध-
बन खड़े रहना ही पुण्य है!
उस ओर मैं नहीं,
माया से डर भागने वालों में
कोई नहीं जानता
कि मैं हूँ क्यों!
वहाँ मत भेजिए
बेचारी मुझे, नारी है
यह, अपने को भेजिए
इन्द्र सन्निद्ध !
जिस आनन स्मृति-
से निद्रा में भी अपनी
चेतना पंद्रहवें-
के उल्लास में पहुँचती,
अपने कुँवारेपन के गुणोत्तर
उस पुरुष से,
श्रेष्ठ से, शादी करने
की अनुज्ञा न तो,
वापस पाषाण में ही
बदल इस जड़ को
जूही सुमनों से अर्घ्य न तो
कांटों से ही श्रीमन्
राम, आपने क्यों मुझे
निदर्य जगा दिया
प्रेम-भंग की मेरी भव्य-
वेदनाओं से?

विष्णु नारारयण नंपूतिरी (1939-2021)

समकालीन मलायलम साहित्य के श्रेष्ठ रचनाकार रहे विष्णु नारायण नंपूतिरी। विष्णु नारायण नंपूतरी का जन्म 2 जून 1939 में हुआ। उन्होंने स्नातक उपाधि भौतिक शास्त्र में और स्नातकोत्तर अंग्रेजी में हासिल की। विभिन्न कॉलेजों में 32 साल तक अंग्रेजी अध्यापन कार्य में कार्यरत रहे। सरकारी सेवा से निवृत्त होने के बाद वे श्री वल्लभमहा महा मंदिर में पुजारी रहे। केरल साहित्य सम्मिति एवं प्रकृति संरक्षण सम्मिति के उपकार्यदशी रहे। उनका कविता संग्रह उज्जैनीले रापकलुकल के लिए 1994 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए 2014 में भारत सरकार ने पद्मश्री से उन्हें विभूषित किया। राष्ट्रीय केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार, व शिष्ट सदस्यता समग्र पुरस्कार, ओडकुष़ल पुरस्कार, आशान पुरस्कार, चंङम्पुष़ा पुरस्कार, उल्लूर पुरस्कार, वल्लत्तोल पुरस्कार, साहित्य कला निधि सुवर्ण मुद्रा आदि से वे सम्मानित हुए।

2021 फरवरी 25 को अपने आवास श्री वल्ली इल्लम से वे विष्णुपद पर चल बसे। उनकी पत्नी सावित्री और बेटियां अदिति और अपर्णा हैं।

आधुनिक कवियों में प्रमुख मलयालम के कवि जॉसेफ का जन्म 1965, एटटूमानूर के निकट पट्टितानं में हुआ। उनकी कवितायें समकालीन परिवेश के भावजगत से जुड़ी हुई हैं। उनकी प्रमुख कृति- 'उपपन्टे कूवल वरयककुम्बोल्' को केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है। उनकी दो कविताओं 'मछुआ और आइडेंटिटी कार्ड का अनुवाद यहाँ प्रस्तुत है। अनुवादक: डॉ नवीना जे नरीतूक्किल।

मछुआ

नाले के बहते पानी में
मछुआ अपना बर्तन धो रहा था
ताड़ तो नहीं देखते थे
जहाँ नाला सीधे जाकर एकाएक
मुड़ता है
वहाँ पर एक वर्कशॉप है
उसके पास के
पुराने पत्थर की दीवार भी नहीं दिखती
उस नाले के समान्तर
उत्तर दक्षिण की ओर एम. सी. रोड तेज़ भागा
हम बच्चों ने ही देखा था
आधे फुट से भी कम ऊँचे पानी में
सिर औंधे किये लेटे
मछुए का शव
साथ ही मछली का बर्तन, तराजू और भार
मिरगी ने इसे एकदम घुमाकर गिरा दिया था
उसके बालों के बीच
पानी की छोटी लहरें खेल रही हैं
ताड़ के पत्ते छोटी लहरों को छेदकर
क्रीड़ा में रत हैं।
नाले के आख़िरी मोड़ पर
पानी का तिलचिट्टा चक्कर मारता है
अभी उसी जगह पहुँचने पर
दिखती है मुर्गी की एक दूकान
खूब सीमेंट से लोपित वर्कशॉप
और मिट्टी डालकर ऊँचा किया खेत
मछुए को किसी ने देखा ही नहीं

आइडेंटिटी कार्ड

मेरी पढ़ाई का समय था
एक लड़की मुस्कुराती हुई आई
उसके दोपहर का खाना
चावल और मछली 'करी' के ऊपर
हमारे हाथ उलझे
एक ही बेंच में हमारा हिन्दू-सा परिवार रच गया।
मैं नेरुदा की कवितायें पढ़ता रहा
बीच में मेरा आइडेंटिटी कार्ड कहीं खो गया
मैं ने देखा
उसने कार्ड दिया और कहा
लाल पेन से कुछ लिखा है उसमें
स्टाइपेंड का हिसाब है, क्या?
अब तो कोई लड़का लड़की साथ बैठकर
याद करना नहीं चाहते हैं
जो वे भूल चुके हैं।
पल में ही वे बिछुड़ जाएंगे,
अगर वे जुड़ गए तो भी अचरज नहीं,
उनके आइडेंटिटी कार्ड में लाल निशान नहीं होंगे

Dr.Naveena J Narithookil"Assistant Professor"Department of Hindi"Bishop Chulaparambil Memorial College Kottayam"686001

सपनों को संदेसे भेजो

बृज राज किशोर 'राहगीर'

खुशियों को चिट्ठी लिखवाओ।
उनकी आवभगत करनी है,
मुस्कानों को घर बुलवाओ।।
बचपन के मासूम दिनों को,
दोबारा जी करके देखो।
जो उस समय नहीं कर पाए,
आज उसे भी करके देखो।
उन्हीं क्षणों का सुख पाने को,
कभी-कभी बच्चे बन जाओ।।

इन शहरों में एक मशीनी
जीवन जीना सीख गए तुम।
एक छलकते घट जैसे थे,
जाने कैसे रीत गए तुम।
अहसासों के पनघट पर जा,
फिर अपनी गागर भर लाओ।।

सम्बन्धों के वीराने में,
सिमटे-सिमटे क्यों रहना है?
जीवन तो बहती नदिया है,
सब विद्वानों का कहना है।
रिश्तों के मुरझाते वन में,
इस जल की धारा पहुँचाओ।।

शा अपार्टमेंट, रुड़की रोड,
मेरठ (उ.प्र.)-250001

इतना मत कर प्यार बावरी।।

रश्मि लहर

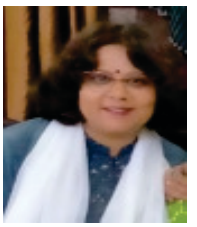

खूब प्रणय ने आज जताया
अंर्तमन अधिकार साँवरी।
समझाते प्रियतम यह कहकर
इतना मत कर प्यार बावरी।।

सजल प्रतीक्षित नयन मिले हैं
पलक-पाँवड़े आँख बिछाये।
अनुभव से घायल आँखों ने
पीड़ा के कटु भाव छुपाए।।

उछल-उछल जल कहे नदी का
आँचल तनिक संवार बावरी।
समझाते प्रियतम ये कहकर
इतना मत कर प्यार बावरी।।

नदी किनारे रेत प्रतीक्षित
सीपी तड़पी प्यास लिए।
नंगे पैरों दौड़ पड़ी है
पिया! मिलन की आस लिए।

क्यों कपोल दहके लज्जा से
पूछ रही हर धार बावरी।
समझाते प्रियतम ये कहकर
इतना मत कर प्यार बावरी।।

मिलन के लम्हें संवर रहे थे
जागी मिलीं सजी रतियाँ।
सहसा आतुर नयन मिले थे
सिहरी थीं चंचल बतियाँ।

धवल चाँदनी और मोंगरे का
पहनाया हार बावरी।
समझाते प्रियतम ये कहकर
इतना मत कर प्यार बावरी।।

PA to Director"ICAR-Indian Institute of Sugarcane Research, Raibareli road, Lucknow 226002"Mob. 9794473806

मौन कितना बोलता है।

गोपाल कृष्ण शर्मा 'मृदुल'

बिना बोले
मौन कितना बोलता है।।
कनखियों से देख
कर
नज़रें चुराना।
और मुँह पर
अरुणिमा का फैल जाना।
मौन,
मन में
अपरिमित मधु घोलता है।।
बिना बोले
मौन कितना बोलता है।।
कान में हैं
अनकहे भी शब्द बजते।
रार भी, मनुहार भी करते,
बरजते।
मौन
मन के भेद सारे
खोलता है।
बिना बोले
मौन कितना बोलता है।।
याचना, शिकवा-गिला,
सहमति-असहमति।
भीड़ में भी मृदुल देता
मौन सम्मति।
ओढ़ कर शालीनता को
डोलता है।।
बिना बोले
मौन कितना बोलता है।।

569क/108/2, स्नेह नगर,
आलमबाग, लखनऊ-226005
मो.9956846197

सफर चल रहा है अनजाना

-डॉ.रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

कोई ख्याल नहीं है मन में।
पंछी उड़ता नीलगगन में।।

सफर चल रहा है अनजाना,
नहीं लक्ष्य है नहीं ठिकाना,
कब आयेगा समय सुहाना,
कब सुख बरसेगा आँगन में।
पंछी उड़ता नीलगगन में।।
--
कब गाएगी कोकिल गाने,
गूँजेंगे कब मधुर तराने,
सब बुनते हैं ताने-बाने,
कब सरसेगा सुमन चमन में।
पंछी उड़ता नीलगगन में।।
--
सूख रही है डाली-डाली,
नज़र न आती अब हरियाली,
सब कुछ लगता खाली-खाली,
झंझावात बहुत जीवन में।
पंछी उड़ता नीलगगन में।।
--
कहाँ गया वो प्यार सलोना,
काँटों से है बिछा बिछौना,
मनुज हुआ क्यों इतना बौना,
मातम पसरा आज वतन में।
पंछी उड़ता नीलगगन में।।
--
यौवन जैसा 'रूप' कहाँ है,
खुली हुई वो धूप कहाँ है,
प्यास लगी है, कूप कहाँ है,
खरपतवार उगी उपवन में।
पंछी उड़ता नीलगगन में।

अमर भारती अस्पताल, टनकपुर
रोड, खटीमा, जिला ऊधमसिंह
नगर (उत्तराखण्ड)

हीरालाल यादव

खुशी के ज़ीस्त में आलम न होंगे
वफ़ा से आशना गर हम न होंगे

गले लग जाइए शिकवे भुला कर
हमेशा प्यार के मौसम न होंगे

नहीं इंसान वा होगा फरिश्ता
कि जिसकी ज़िन्दगी में ग़म न होंगे

सितम ये बेवफ़ा ढाती रहेगी
तमाशे ज़िन्दगी के कम न होंगे

कहा उलझेंगे य आशिक बेचारे
अगर जुल्फ़ों के पेचो-ख़म न होंगे

ग़लतफ़हमी में हीरा जी रहे हो
जहाँ वाले कभी हमदम न होंगे

रूम नंबर–7, रामप्रसाद सिंह चाल,
गुरु प्रसाद वेलफेयर सोसाइटी,
शिवाजी नगर, क़रार विलेज,
मालाड पूर्व, मुम्बई–400097

विज्ञान व्रत

तू तो एक बहाना था
मुझका धोखा खाना था

मौसम रोज़ सुहाना था
उसका आना-जाना था

आईना दिखलाना था
उसका यूँ समझाना था

आज ज़माना क्या जाने
मुझसे एक ज़माना था

कबिरा की उस चादर का
मै ही ताना-बाना था

एन – 138 , सैक्टर – 25 ,
नोएडा – 201301
मोब . 9810224571

आशा शैली

रोशनी उसकी दिखाई दी है
हमने जब जब भी दुहाई दी है

जिसको सजदे हज़ार करते हैं
उसने उम्मीद हवाई दी है

मेरे मालिक करम ये तेरा है
मुझको रिश्तों से रिहाई दी है

तुझको हर पल मैं यूँ ही याद करूँ
ऐसी तकदीर हिनाई दी है

आरज़ू एक बस तुम्हारी है
किसलिए तूने जुदाई दी है

एक तेरी लगन में ऐ मालिक
सारी दुनिया ने बुराई दी है

एक अरमान तुझसे मिलने का
उसमें भी तूने ढिलाई दी है

लता जौनपुरी

छोड़ आए वो हसीं घर याद आता है
कि जैसे क़ैद में पंछी को अंबर याद आता है

विदा के वक़्त तेरे लब पे थी इक मुस्कराहट, पर
तेरी पलकों पे ठहरा था जो गौहर याद आता है

मिलन के वक़्त पहली बार पहनाया था जो तूने
मुझे अब भी तेरी बाहों का ज़ेवर याद आता है

नहीं थी खुद के सर पर छत मगर थी फ़िक्र लोगों की
मेरी बस्ती का वो बूढ़ा क़लंदर याद आता है

जहाँ ने फेर कर नज़रें किया था चाक मेरा दिल
रफू जिसने किया था वो रफूगर याद आता है

पिया के गाँव में रहती हैं खुशियों की बहारें, पर
मुझे तो रोज़ ही अपना वो पीहर याद आता है

कि झूठों ने नहीं छोड़ा असर गहरा दिल-ो-जाँ पर
लुटा जो सच बयानी से वो अक्सर याद आता है

जुदा जब हो रहे थे हम फ़क़त रोज़ी की ख़ातिर, तब
बहा था माँ की आँखों से जो सागर याद आता है

ठ-35, सुखमय विहार, लेन न0 -2
चांदमारी, वाराणसी-221003 (उ. प्र.)

हरदीप बिरदी

बुझा कर वो चराग़ों को उजाला ढूँढते हैं।
जला के वो खड़ी फ़सलें निवाला ढूँढते हैं।

ख़बर को जो बना दे आग के जैसा पलों में
ख़बर वाले हमेशा वो मसाला ढूँढते हैं।

भड़क जाए पलों में ही ज़माना पागलों सा
इक ऐसी बात का नेता हवाला ढूँढते हैं।

नहीं मिलता जिन्हें है चैन घर पर लोग ऐसे
बना के भेस साधू का हिमाला ढूँढते हैं।

जिन्हें वापिस नहीं करना उधारी में लिया धन
उधारी देने वाले का दिवाला ढूँढते हैं।

बिना जाए मिले डिगरी आवारा घूम लें बस
जो बिगडे हैं वो ऐसी पाठशाला ढूँढते हैं।

न कोई भेद करते हैं वो बेटा हो या बेटी
नई सी सोच रखते जो मलाला ढूँढते हैं।

हर इक आवाज़ दब जाए न जनता बोल पाए
जुबाँ पर जो लगे नेता वो ताला ढूँढते हैं।

H.No 6826, Street No. 10,
New Janta Nagar, Daba
Road, "Ludhiana-141003
Mo 9041600900

अमानत

-उर्मि कृष्ण

सारा सामान ट्रक में लादा जा चुका था। कवि शिवा आज नये मकान में जा रहे थे।

''अरी गुड़िया ...'' माँ ने ऊँची आवाज में पुकारा, ''चल बिटिया। सारा सामान लद चुका है।''

चार साल की गुड़िया धीरे-धीरे चलकर बाहर आ रही थी। उसके फ्रॉक की झोली में कंकड़ पत्थरों का बोझ लदा था।

देखते ही मम्मी झल्लाई, ''यह क्या, पत्थरों का क्या करेगी? फेंक यहीं।'' मम्मी ने गुड़िया के सारे पत्थर बिखेर दिये। दो क्षण गुड़िया पत्थर बनी बिखरे पत्थरों को देखती रही। फिर फूट-फूटकर रो पड़ी।

''क्या हुआ बेट?'' पापा ने गोद में उठाते हुए गुड़िया से पूछा।

गुड़िया रोये जा रही थी। मम्मी ने आगे बढ़कर कहा, ''देखो आपकी लाडली ये पत्थर फ्राक में भरकर ले जा रही थी। नया फ्राक भी बिगाड़ दिया।''

''सरिता! कुछ तो सोचती उसके पत्थरों को फेंकने से पहले। अपना बचपन ही याद कर लेतीं। ये उसके बचपन की अमानत हैं। तुम्हारे ट्रक भर सामान से ज्यादा कीमत है गुड़िया के लिए इन पत्थरों की।'' माँ को अपनी भूल का एहसास हो रहा था।

गुड़िया को गले से लिपटाते हुए सरिता ने कहा, ''मुझे माफ कर दे बेटी, मैंने तुझे दुःख पहुँचाया है। और तीनों मिलकर बिखरे पत्थर उठाने लगे। गुड़िया खुशी से चहक रही थी।

कहानी लेखन महाविद्यालय,
शास्त्री नगर, अम्बाला छावनी
9896077317

वामा-ग्रन्थि

-कुसुम पारीक

मैं उस अद्‌भुत नारी को देखकर सोच में पड़ गया था .. ऐसा साहस विरलों में ही मिलता है ।

जब उसने कहा, ''मुझे इस समर्पण व त्याग के जीवन से निजात पानी है शायद भगवान ने ही ऐसी को ग्रन्थि बनाई होगी...। मैं चाहती हूँ कि आप इसे खत्म करने की दवाई दें।''

कितनी संजीदगी से उसने कहा दिया....''मैं जिस चक्रव्यूह में हूँ उसकी ज़िम्मेदार मैं हूँ न कि मेरे पति।''

मैने कई बार जोर दिया कि गलती तो आपके पति की ज्यादा है जो आपकी भावनाओं व त्याग को न समझकर आपको मानसिक तौर पर प्रताड़ित करते हैं। लेकिन उसका कहना था...''त्याग, दया सहनशीलता व समर्पण के गुण मेरे हैं जो मैंने उन्हें इस जीवन में दिए और इतने गूढ़ स्तर तक दिए कि उनके जीवन में यह मात्र व्यर्थ की हवाई बातें बन कर रह गईं।

जब पुरुषोचित अहम के वशीभूत.... यह मुझे अपने इशारों पर नचाना चाहते थे तो वह कठपुतली जैसी मौन स्वीकृति मेरी ही थी, जिन्हें मैं पत्नी के कर्तव्यों व प्रेम का नाम देकर निभाती चली गई और उन्होंने इसे अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझ लिया।

जीवन हो या कैनवास.... आप जितने रंग भरते हो वे खुद की खुशी के लिए भरते हो लेकिन इतराता तो केवल चित्र ही है न? वह तुम्हें वापसी में कुछ नहीं देता।''

बड़े-बड़े मनोरोगियों का इलाज करते हुए आज महसूस हुआ कि वह मुझे एक नया पाठ पढ़ा गई।

शायद कोई भारतीय स्त्री ही थी .....

ठ 305 राजमोती 2, छरवाड़ा रोड
पो.ओ. वापी, जिला वलसाड
गुजरात-396195

शुक्र है

विजय कुमार

पॉलीथिन को लेकर चर्चा जोरों पर थी, कोई पक्ष में, तो कोई विपक्ष में बोल रहा था।

''हर चीज पॉलिथीन में, हर चीज पॉलिथीन में। यहाँ तक कि पॉलिथीन में पैक की हुई चीज को भी पॉलिथीन में डाल कर दिया जाता है। हद है यह तो...'', बत्रा जी रोष में बोले, ''कितना पॉलीथिन इकट्ठा करोगे यार।''

''सही कह रहे हो बत्रा जी,'' वर्मा जी ने भी मोर्चा खोला, ''आज हर जगह कूड़े के ढेर लगे हुए हैं। नालियाँ-नाले सभी जाम पड़े हैं। गंदा पानी गलियों और सड़कों पर इकट्ठा होता रहता है। मक्खियाँ-मच्छर पनपते हैं, लोग बीमार होते हैं। कल कहीं कोई महामारी फैल गई तो पता लग जाएगा। प्रशासन भी तभी जागेगा।''

''पर करता कौन है यह सब?'' मिसेज शर्मा बोल पड़ीं, ''हम ही लोग न। जब तक हम लोग पॉलिथीन का बहिष्कार नहीं करते, स्वयं प्रयोग करना बंद नहीं करते, तब तक कुछ नहीं होगा, और यह गंदगी बढ़ती ही चली जाएगी। फिर किसी दिन ऐसा प्रकोप होगा ही होगा, बीमारियों का जानलेवा हमला...।''

''पर पॉलिथीन जरूरी भी तो है, कई चीजों को संभाल कर रखने, उन्हें पानी या कीड़े-मकोड़ों से बचाने, सामान लाने, सफर के लिए...।'' शर्मा जी ने कहा।

''है तो, पर कोई इतना तो नहीं कि हम सारी चीजें छोड़ कर बस पॉलिथीन के पीछे ही पड़ जाएँ हाथ धोकर। जितना जरूरी है, इस्तेमाल करो, और जहाँ दूसरी चीजों से काम चल सकता है, उन विकल्पों को अपनाओ। पहले भी तो थैला लेकर सामान लेने जाते थे। कागज की थैलियों में राशन लाते थे, और दूध-दही बर्तनों में डलवा कर लाते थे। तब दिखती थी इतनी गंदगी, इतना कूड़ा कहीं?'' अरोड़ा जी भी बोल पड़े।

''सही कह रहे हो अरोड़ा जी,'' यादव जी ने समर्थन करते हुए कहा, ''और हाँ बत्रा जी, अभी आप कह रहे थे ना कि हद है। यह तो हद से भी ज्यादा हो गई है। पता नहीं आपने कभी गौर किया या नहीं, अब तो सब्जी वाले जो सब्जी, मंडी से टाट या दूसरी बोरियों में लाते थे, वह भी बड़े-बड़े पॉलिथीन के थैलों में लाने लग पड़े हैं।''

''वाकई हद्द नालों वद्ध हो गई है यह तो...।'' सरदार जी बोल पड़े।

तभी शांति बाई, जो वहाँ काम करते हुए उनकी बातें सुन रही थी, बोली, ''एक बात बताऊँ आप लोगों को, हमारे गाँव में अभी भी पॉलिथीन नहीं है। वहाँ सब्जी टोकरी में डाल कर दे देते हैं...।''

मैंने एक गहरी सांस छोड़ते हुए कहा, ''शुक्र है, कम से कम गाँव तो बचे हुए हैं...।''

सह-संपादक, शुभ तारिका (मासिक पत्रिका)
103-सी, अशोक नगर, नज़दीक शिव मंदिर,
अम्बाला छावनी- 133001
(हरियाणा)
मोबाइल - 09813130512
मेल- **urmi-klm@gmail-com**

संजीवनी

– शोभना श्याम

“गणित और विज्ञान में फिर से इतने कम नम्बर? नालायक! तुझे शर्म नहीं आती? एक आई. ए. एस. का बेटा गणित और विज्ञान में जीरो। क्या बनेगा बड़ा होकर? चपरासी? या फिर भुट्टे भूनने का इरादा है? जवाब क्यों नहीं देता?? एक बात तो पक्की है कि एक दिन मेरी नाक कटाएगा तू। दफा हो जा यहाँ से।”ह्न

यश सर झुकाए वहाँ से निकल तो गया पर उसका दु:ख और आक्रोश अपनी किताबों तथा कमरे की अन्य वस्तुओं और फर्नीचर पर निकल रहा था।

तभी उसे माँ की आवाज सुनाई दी, “ये क्या कर रहे हैं आप? गणित और विज्ञान के नीचे अपने बेटे की ज़िन्दगी को दफ़न कर देंगे? आपको इन विषयों में कम नम्बर नज़र आते हैं लेकिन अंग्रेजी, हिन्दी और अन्य विषयों में कक्षा में उच्चतम अंक नहीं देखते? बेटे की रचनात्मक प्रतिभा को अनदेखा करते हैं आप। लेकिन मैं अब अपने बेटे की इसी प्रतिभा को पुष्पित पल्लवित करुँगी। मेरा बच्चा अब ग्यारहवीं कक्षा में अपनी रुचि के विषय लेगा और देखना इन्हीं से ज़िन्दगी में सफल भी हो कर दिखायेगा। गर्व करेंगे किसी दिन आप अपने इसी बेटे पर .....”

पिता के व्यंग बाणों से आहत यश ने माँ के ये शब्द सुने तो अपने आँसू पोंछ डाले और अपने कमरे में बिखरे पड़े सामान को यथावत लगाना आरम्भ कर दिया।ह्न

–

H- 256, 11 avenue,
Gaur City - 2,
Gautambuddha Nagar UP 201301

नयी–सोच

–क्षमा सिसोदिया

बेटियाँ बचपन की देहरी को अलविदा कह जब ससुराल के लिए विदा होती हैं, तो पराए भी रो पड़ते हैं। बेटियाँ तो हर घर की जान और दो कुलों की शान होती हैं, लेकिन आज की बहुएँ तो आते ही घर में कलह शुरू कर देती हैं। ना बाबा ना हमें तो अधिक पढ़ी–लिखी बहु ना चाहिए जो...।”

“फिर.... ?”

तभी पंडिताइन चहकी – “अररररे, अब चिंता किस बात की है। अपने समाज के सम्मेलन में अपनी बराबरी की कन्या जरूर मिल जाएगी, हम तो अपने कुल की बहू वहीं तलाशेंगे।”

सम्मेलन में दोनों परिवारों का जमावड़ा लगना आरम्भ हो जाता है। वर–वधु स्टेज पर आकर अपने परिचय का लम्बा–चौड़ा चिठ्ठा वाचन करते हैं।

मिसेज शर्मा चेहरे पर इत्मीनान की मुस्कुराहट लिए अंतिम वाक्य की प्रतीक्षा कर रही हैं।

जैसे ही कन्या कहती है कि–“मुझे दहेज विरोधी ही वर चाहिए।” वैसे ही तपाक से वर ने जबाब दिया ।

“मंजूर है, लेकिन मुझे भी संस्कारी कन्या ही चाहिए।”

10/10, सैक्टर बी.,
महाकाल वाणिज्य केंद्र,
उज्जैन–456010 (म.प्र.)

धार्मिक यात्रा परम्परा: नन्दा देवी राजजात यात्रा

- नालंदा पाण्डेय

धर्म से अभिप्रेरित यात्राओं का भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व रहा है। भारतवर्ष के विभिन्न स्थानों में ध ार्मिक यात्राओं का भिन्न-भिन्न स्वरूप देखने को मिलता है क्योंकि प्रत्येक क्षेत्र की स्थानिकता वहाँ प्रचलित व्यवहारों को अनिवार्य रूप से प्रभावित करती है। नंदा देवी राजजात यात्रा उत्तराखण्ड की एक अद्‌भुत यात्रा है जिसमें पर्व तथा मेलों का विलक्षण सम्मिश्रित रूप दृष्टिगोचर होता है। यह यात्रा भारत में धार्मिक यात्राओं की समृद्ध परंपरा की शृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इस यात्रा की कई ऐसी विशेषताएँ हैं जो देवी नंदा की राजजात यात्रा को मात्र धर्मिकता की परिधि तक ही सीमित नहीं रहने देती। प्रकृति प्रेम, लोकाचार, सामाजिक सद्‌भाव तथा पर्यटन की दृष्टि से भी यह यात्रा सर्वथा अनूठी है।

शोध आलेख

हमारा भारत वर्ष अन्य राष्ट्रों से आध्यात्मिक एवं धार्मिक उत्थान के क्षेत्र में कहीं आगे हैं क्योंकि जहाँ विदेशों में स्व की प्रवृत्ति मानव मस्तिष्क पर हावी रहती है, वहीं दूसरी ओर भारतीय स्व से उपर उठकर परहित को अपना ध्येय मानते हैं। यह हमारे धर्मों की ही सीख है कि व्यक्ति धार्मिक उद्‌देश्यों की पूर्ति हेतु बड़े से बड़ा कष्ट सहने को स्वेच्छा से तत्पर रहता है। वर्तमान युग में धार्मिक यात्राओं को पूर्ण करना कठिन एवं दुष्कर नहीं प्रतीत होता है। प्राचीन काल से ही देश के कई भागों में ध ार्मिक यात्राओं को नियमित रूप से संपन्न करने की परंपरा रही है। उस समय आवागमन एवं संचार साधनों का उपयोग प्रचलन में नहीं था। एक बार ध ार्मिक यात्रा पर निकल पड़ना ही यात्रियों की उनके परिवार को अंतिम विदाई होती थी। लेकिन वह विश्वास और भावनाओं का ऐसा ज्वार होता था कि व्यक्ति परिवार घर, गाँव, शहर के मोहपाश को तोड़कर मीलों दूर की यात्रा के लिए प्रस्थान कर जाता था। यह यात्राएँ उनको वह हौसला देती थी कि मार्ग की समस्त कठिनाइयाँ उनके लिए नगण्य हो जाती थीं। मात्र उत्तर भारत की एक कुछ मुख्य यात्राएँ ही नहीं अपितु संपूर्ण भारतवर्ष की अनेकानेक धार्मिक यात्राएँ इस परंपरा को समृद्ध करती चली आ रही हैं। यूँ भी समस्त भारत में ध ार्मिक यात्राओं का आयोजन प्राचीन काल से ही विशेष सामाजिक तथा सांस्कृतिक महत्व रखता है।

वह यात्रा जो मनुष्य किसी धार्मिक एवं सामाजिक महत्व के उद्‌देश्य से करता है वह लोक यात्रा कहलाती है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि मनुष्य एक समाजिक प्राणी है । वह समाज का एक अभिन्न हिस्सा होता हैं कई बार ऐसा होता है कि जब समाज में क्रियात्मक कल्पनाशक्ति एवं भावनाओं का अभाव हो जाता है तो मनुष्य अपने प्राचीन गौरव, रीति-रिवाज, धर्म एवं आस्था को निरर्थक समझने लगता है। जब मनुष्य आस्था एवं भावना के बंधन को प्रगाढ़ बनाने के लिए लोक यात्रा करता है। इससे जनजीवन में उत्साह उत्पन्न होता है, नीरसता दूर होती है। भक्ति भावना और रोचकता का संचार होता है एवं आनन्द में वृद्धि होती है। साथ ही लोकयात्राएँ सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक आदर्शों का प्रतीक होती हैं। धर्म एवं अतीत के गौरवपूर्ण जीवन की स्मृति बनाए रखने तथा जाति, समाज एवं राष्ट्र में जीवंतता बनाए रखने में भी लोकयात्राएँ अत्यंत महत्पूर्ण भूमिका निभाती हैं। चौरासी लाख योनियों में से दुर्लभ मानव जीवन को प्राप्त करना निश्चय ही

सौभाग्य का विषय होता है। हम ईश्वर को सृष्टि का निर्माता मानते हैं एवं सभी मनुष्यों को उस ईश्वर की संतान मानते हैं। यह मानव की मनोवृत्ति ही है जो उसे सदैव ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करती है। भारतीयों का जीवन के प्रति दृष्टिकोण सदैव से कुछ अलग हट कर रहा है। जीवन को ईश्वर प्राप्ति हेतु समर्पित करना कदापि सरल बात नहीं है।

सदैव से हमारी आस्था रही है कि व्यक्ति अपने से बड़ी इकाई में स्वयं को समर्पित कर दें। इसे ही धर्म का कार्य कहा गया है। मनुष्य लोक यात्राओं द्वारा अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति करता है। वास्तव में लोकयात्राओं को संपादित करके व्यक्ति एक बड़ी इकाई से जुड़ जाता है। जो जोड़ता है वही धर्म होता है। अत: अधिकांश लोक यात्राएं धार्मिक भावना की तुष्टि का कार्य करती हैं।

लोक यात्राओं के माध्यम से मनुष्य इस बात को गहराई से महसूस करता है कि सकल चराचर विश्व में मनुष्य अकेला नहीं है, पशु-पक्षी, वनस्पति, नदियाँ, पर्वत सभी हमारे ही अंग हैं। यह सभी ईश्वर की सृष्टि है। लोक यात्राओं के माध्यम से ही मनुष्य संपूर्ण सृष्टि की ओर सम्मानपूर्वक पूज्य भावना से देखना सीखता है। हमारी भारतीय संस्कृति हमें यह शिक्षा देती है कि संपूर्ण सृष्टि माँ समान है। ''पृथ्वी हमें धारण करती है अत: वह भूमाता है। गंगा नदी केवल पानी ना होकर गंगा मैया है। तुलसी का पौधा केवल एक वनस्पति ना होकर तुलसी माता है।[1] अत: लोक यात्राओं की उत्पत्ति का कारण हमारी संस्कृति है जिसने प्रत्येक वस्तु को किसी ना किसी ईश्वर रूप से जोड़ दिया है। लोक यात्राएँ समाज की व्यवस्था एवं आस्था की प्रतीक हैं। आधुनिकता के इस दौर में लोक यात्राएँ हमें अपनी संस्कृति को आत्मसात् करने के उपक्रम में पूरी समर्पण भावना से जुट जाने को प्रेरित करती हैं।

धार्मिक यात्राओं की परंपरा से भारतीय समाज अनभिज्ञ नहीं है। हमारे भारवर्ष में जात अर्थात् यात्राओं की लम्बी परंपरा रही है। ये धार्मिक यात्राएँ सदियों से कोटि-कोटि जनता की धार्मिक आस्था एवं विश्वास की साक्षी रही हैं। देश के भिन्न-भिन्न भागों में धार्मिक यात्राओं के भिन्न-भिन्न स्वरूप स्पष्टत: दृष्टिगोचर होते है।[2]

जात शब्द यात्रा का लोक प्रचलित स्वरूप है। नंदा के सम्मान में गढ़वाल के राजसी वंश द्वारा इस यात्रा का आयोजन किए जाने के कारण इसे राजजात कहा जाता है। नंदादेवी राजजात विश्व की सवार्धिक अनूठी, विस्मयकारी साहसिक यात्रा है। इस यात्रा में उच्च हिमालय की दुर्गम व हिम मण्डित पर्वत श्रृंखलाओं, मखमली बुग्यालों का स्वप्न लोक, आलौकिक पर्वतीय उपत्यकाओं के दर्शन तो होते ही हैं, साथ ही इससे मध्य क्षेत्र की संस्कृति एवं समाज को जानने समझने का दुर्लभ अवसर भी मिलता है।

इस यात्रा का आयोजन ग्राम नौटी से होता है। 'यात्रा आयोजन की परंपरा के तहत बंसत पंचमी को काँसुवा से कुँवर, नंदादेवी के भाइयों के ग्राम नौटी आकर नंदा श्रीयंत्र की पूजा करके नंदादेवी से मायके आने का आग्रह करते हैं। नंदा को मायके से विदाई करने की मनौती स्वरूप राजजात का आयोजन करने का वचन देते है।[3] तब राजवंशीय कुँवरों की थोकदारी में कुछ निश्चित लक्षणों से मुक्त चौसिंगा मेढ़ा पैदा होता है। मेढ़े का पैदा होना इस बात का लक्षण होता है कि नंदादेवी मायके आ चुकी है। मेढ़े के पैदा होते ही राजजात की तैयारियों की हलचल शुरू हो जाती है। मेढ़े को पवित्रता के साथ रखा जाता है। स्वादिष्ट भोजन दिया जाता है। इसी बीच नंदादेवी राजजात समिति की बैठकें होती है एवं शुभ मुहूर्त निकाला जाता है। नौटी में देवी की सज्जा एवं श्रृंगार का सामान तैयार किया जाता है। संपूर्ण राजजात का आयोजन काँसुवा के कुँवर की देखरेख में सम्पन्न होता है।

राजजात की इस पंरपरा की उत्पत्ति के विषय

में अधिकार पूर्वक सटीक तथ्य देना संभव नहीं है। 'सिद्धपीठ नंदादेवी नौटी में गाए जाने वाले लोकगीतों-जागरों के आधार पर ज्ञात होता है कि नवीं शताब्दी में चाँदपुर गढ़ी के राजा शालिपाल ने अपने राजगुरू (नौटियाल) के गाँव नौटी में अपनी इष्ट देवी श्री नंदादेवी के श्रीयंत्र को एक चबूतरे में भूमिगत कर सिद्धपीठ श्री नंदादेवी की स्थापना की।[4] राजगुरू नौटियालों को पूजा का भार देते हुए राजा ने नौटी के भूमियाल देव (भूमि देवता) एवं ऊपराई देवी (अर्पण देवी) की बड़ी पूजा करने के पश्चात् नन्दादेवी को उसके ससुराल त्रिशूली भेजने की यात्रा का प्रति बारहवें वर्ष एक नियम बनाया, जिसका नाम राजजात पड़ा, जो कालांतर में अपभ्रंश होकर राजजात के नाम से विख्यात है।

राजा की इष्टदेवी होने के कारण नंदा को राजराजेश्वरी भी कहा जाता है। राजा का छोटा भाई 'काणसा' चाँदपुरगढ़ी, जो गढ़वाल राज्य की प्रथम राजधानी है, के पास ही काँसुवा गाँव में बसा था। जिनके वंशजों को राजवंशी कुँवर नाम से पुकारा एवं सम्मानित किया जाता है। इनको राजा ने अपने प्रतिनिधि के रूप में संचालन में राजगुरूओं की मदद के लिए अधिकृत किया।

राजजात समिति के उपलब्ध अभिलेखों के अनुसार 1868 से 1946 तक गढ़वाल के पवार वंशीय राजाओं का राज्य रहा। पवार वंश के प्रमुख राजा श्री कनक पाल थे, जिन्होंने 688 से 700 तक राज्य किया। सन् 1803 से 1815 तक गोरखाओं का राज्य रहा। गोरखाओं के शासनकाल में गढ़वाल क्षेत्र के ताम्रपत्र व अधिकांश लेख नष्ट कर दिये गये। इसी कारण राजजात संबंधी ऐतिहासिक लेख व ताम्रपत्र उपलब्ध नहीं हैं। राजजात का इतिहास लोककथा, लोकगीतों किवदंतियों व मौखिक रूप से संरक्षित कथाओं पर आधारित है।

नौटी से 9 किलोमीटर नीचे चाँदपुर गढ़ी है जो सन् 688 से 715 तक गढ़वाल के पालवंशीय राजाओं की राजधानी रही हैं। राजा की इष्टदेवी होने के कारण एवं श्रीयंत्र नौटी में होने के कारण राजजात का आरम्भ भी इसी ग्राम से होता है। राजा ने राजजात की व्यवस्था हेतु बारह जाति के ब्राह्मणों को तैनात किया है-

नौटियाल
नैनवाल
देवली
मलेठा
नवानी
सेमवाल
गैरोला
चमोला
डयूडी
रतूड़ी
खण्डूड़ी
थपलियाल

'इन बारह थेकों के ब्राह्मणों को सेरूला ब्राह्मण भी कहा जाता है। 5 बारह थोक के ब्राह्मणों के साथ राजा द्वारा चौदह सौंपाने अलग ग्रामों के नियुक्त किये गये थे। जिनका मुख्य कार्य भोजन व्यवस्था के लिए सामग्री जुटाना एवं यात्रा की अन्य व्यवस्थाएँ करना था। ये चौदह सौंपाने निम्न प्रकार है:-

कुरुड़ ग्राम के गौड़
देवराड़ा ग्राम के हटवाल
मैटा ग्राम के रावत
भैंटी ग्राम के रावत
थराली ग्राम के बुटोला रावत
त्रिकोट ग्राम के बुटोला रावत
आदरा ग्राम के भण्डारी
पास्तोली ग्राम के कठैत
डूंगरी बूरसोल ग्राम के फरस्वाण
ग्वालदम जौली ग्राम के गड़िया
कोठी ग्राम के रावत
मरल ग्राम के रावत
देवाल ग्राम के श्रेष्ठ
फल्दिया ग्राम के बिष्ट

नौटी ग्राम में प्राप्त नंदादेवी राजजात संबंधी अभिलेखों के अनुसार सन् 1843, 1863, 1886, 2014 1905, 1925, 1951, 1968, 1987, 2000 तथा 2014 में राजजात आयोजित की गई थी। आमतौर से नंदादेवी राजजात हर बारहवें वर्ष आयोजित की जाती है लेकिन कभी-कभी विलम्ब योग होने के कारण इस अंतराल में कुछ अंतर भी आया है किन्तु फिर भी यह यात्रा भारतवर्ष की धार्मिक यात्राओं की समृद्ध परम्परा की एक महत्वपर्ण, अविस्मरणीय, दिव्य अनुभव की अनूठी कड़ी अवश्य है। नंदादेवी राजजात यात्रा महाकुंभ की भाँति सांस्कृतिक गरिमा, महिमा और उदारता से मंडित है। नंदा देवी राजजात परम्परा उत्तराखण्ड की ही नहीं वरन् राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की अनुपम एवं बेजोड़ मिसाल है।

संदर्भ पुस्तकें-

अपनी संस्कृति: माघ व गोविन्द वैद्य, प्रभात प्रकाशन, 2002, पृ. 17

इन दी फुटस्टेप्स ऑफ गॉड, यू.पी. टूरिज्म द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ-2

स्व. देवीराम नौटियाल के अभिलेख, राजजात, पृष्ठ- 3

पं. देवीराम नौटियाल के अभिलेख, राजजात यात्रा 2000, पृष्ठ 5

बाल कृष्ण भट्ट जातिप्रकाश, पृष्ठ 51-52

सम्प्रति वैल्हम गर्ल्स स्कूल, देहरादून (हिंदी विभागाध्यक्षा,
आदि गुरू शंकराचार्य (ज्योतिर्मठ) द्वारा स्वर्ण ज्योति सम्मान से पुरस्कृत
200/1 डोभालवाला,
देहरादून (उत्तराखण्ड) 248001,
मोबाइल नं.-9412988360

समय

अंजना छलोत्रे 'सवि'

रवि को दो दिन का होते ही उसने गोद ले लिया था। आज पूरे पच्चीस वर्ष का हो गया है। उसे गोल्ड मेडल मिलना था। कॉलेज के वार्षिक समारोह में जेठ-जिठानी भी शामिल हुए।

समारोह समाप्ति पर परिचितों के बीच जेठानी ने बताया- ''रवि उनका बेटा है राधा ने तो इसे गोद लिया है।''

यह सुनकर राधा को लगा कि पच्चीस वर्ष में समय जरा भी नहीं सरका। पहले मुँह पर बाँझ कहकर प्रताड़ित किया जाता था। आज उसी प्रताड़ना का रूप बदल गया है किंतु आज जेठानी का कथन उसके ममता भरे मन को विराट रूप में बाँझ कर गया।

द्वारा श्री विजय देशमुख, माधव कालोनी,
सोडलपुर रोड, टिमरनी, जिला
हरदा-461228 (म.प्र.)
मो. 08461912125
anjana.savi@gmail.com

धार्मिक सहिष्णुता की मिसाल 'शबरीमला'

–डॉ. शीना एप्पन

दक्षिणात्य राज्य केरल धार्मिक सहिष्णुता एवं समन्वय के लिए देश भर में ही नहीं सारे संसार में विख्यात है। धर्म निरपेक्षिता की सही मिसाल के रूप में केरल के पत्तनंतिट्टा जिले में स्थित शबरीमला मंदिर को लिया जा सकता है। शबरीमला का मतलब शबरी पर्वत से है। भारत के विख्यात तीर्थस्थानों में एक है 'शबरीमला श्रीधर्मशास्ता मंदिर'। 'शास्ता' (देवता) शिव का अवतार माना जाता है। शास्ता के स्वरूप पर गहरे अध्ययन करने वाले गुरुस्वामी विश्वनाथ शर्मा के अनुसार शास्ता ने लोक कल्याण के लिए आठ बार अवतार लिया था। ये आठ अवतार इस प्रकार हैं, 'आदि महाशास्ता (अय्यनार), धर्मशास्ता (अय्यप्पन) ज्ञान शास्ता, कल्याण वरधा शास्ता, सम्मोहन शास्ता, गति प्राप्ति शास्ता, वेद शास्ता और वीर शास्ता । इनमें अय्यनार की पूजा तमिलनाडु में तथा अय्यप्पन की पूजा केरल में होती है। इन दोनों के बीच का अंतर यह है कि अय्यप्पन बाल ब्रह्मचारी हैं और अय्यप्पन गृहस्थि है। (en-m-wikipedia]org@wik) ब्रह्माण्ड पुराण में धर्मशास्ता को हरिहरसुत कहा गया है। हिन्दु पुराण में भगवान अय्यप्पा को लेकर कई कथाएँ हैं, जिनमें सबसे चर्चित है कि अय्यप्पन भगवान विष्णु के एकमात्र स्त्री अवतार मोहिनी और भगवान शिव के पुत्र हैं।

जनश्रुति के अनुसार अय्यप्पन के माता-पिता ने उन्हें गले में घंटी बांधकर पम्पा नदी के किनारे छोड़ा। पंदलम के राजा राजशेखर को भगवान बालरूप में पम्पा के किनारे मिले थे। संतानहीनता का दुख अनुभव करने वाले राजा उन्हें महल ले गए। परन्तु कुछ समय के बाद

पर एक मंदिर बनाया और हर साल दर्शन के लिए आने का वादा किया। आज भी यह प्रथा है कि हर साल मकरसंक्रांति के अवसर पर पंदलम राजमहल से अय्यप्पा के आभूषणों को संदूक में रखकर एक भव्य शोभायात्रा निकाली जाती है। जो तीन दिन में शबरीमला पहुँचती है। जिस दिन वह उधर पहुँचती है, वहाँ पहाड़ी की चोटी पर असाधारण चमक वाली ज्योति दिखायी देती है जो मकर ज्योति नाम से जानी जाती है।

रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया। अय्यप्पन के बड़े होने पर राजा ने उन्हें युवराज बनाना चाहा लेकिन रानी को यह बात मंजूर नहीं हुई। वैद्यों से कहलवाया कि शेरनी के दूध पीने से ही रानी बीमारी से मुक्त हो सकती है। माँ को बचाने के लिए अय्यप्पन घने जंगल में गए। वहाँ उन्हें राक्षसी महिषी का सामना करना पड़ा, उन्होंने उसका वध किया। कथा के अनुसार राक्षसी को वरदान मिला था कि उसकी मृत्यु हरिहर सुत के हाथों से ही होगी। शेरनी को लेकर अय्यप्पन वापस महल पहुँचे। परन्तु वे आगे उधर रहना नहीं चाहते थे, अतः महल छोड़कर चले गए। दुखी पिता उनकी खोज में गए। घने जंगल में एक जगह पर पिता और पुत्र का मिलन हुआ। अय्यप्पन के कहे अनुसार उन्होंने वहाँ

शबरीमला मंदिर अठारह पर्वतों के बीच घने जंगल में स्थित है। यह मंदिर करीब 800 सालों से अस्तित्व में है और इसका पुनर्निमाण 1705 में किया गया। ऐसा ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध है। मंदिर के प्रांगण तक पहुँचने के लिए अठारह सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। ये सीढ़ियाँ प्रतीकात्मक हैं। पहली

पाँच सीढ़ियाँ मनुष्य के इंद्रिय अनुभवों की प्रतीक हैं, आगे की सीढ़ियाँ आठ रागों की प्रतीक हैं, आगे की तीन सीढ़ियाँ मानवीय गुणों की प्रतीक हैं और अंतिम दो अज्ञान और ज्ञान की प्रतीक हैं। इसके अलावा ऐसा भी विश्वास है कि ये अठारह सीढ़ियाँ अठारह पर्वतों की सूचना भी देती हैं। जैसे कि पोन्नंपलमेड्, गौडनमला, नागमला, सुदंरमला, चिट्टम्पलमला, खलगिमला, मातंगमला, श्रीपादमला, देवरमला, निलक्कलमला, तलप्पारमला, मैलाडुंप्पेट्टा, नीलिमला, करिमला, पुतुश्शेरिमला, कालेकहट्टिमला, इंचीप्पारमला, शबरीमला ।

शैव और वैष्णवों के बीच की अद्भुत कड़ी के रूप में शबरीमला की अपनी विशेषता है। जनश्रुति के अनुसार शैवों और वैष्णवों के बीच की दूरियों को कम करने के लिए ही श्री अय्यप्पन की परिकल्पना की गयी है। जो भी हो यह मंदिर सर्वधर्म सद्भाव का प्रतीक भी माना जाता है। मतलब इस मंदिर में किसी भी जाति, धर्म के लोग, इधर के आचारों का पालन करते हुए भगवान अय्यप्पन का दर्शन कर सकते हैं। सर्वधर्म समभाव का और एक विशेष उदाहरण शबरीमला पर्व के समय इधर आनेवाले भक्त देख सकते हैं। शबरीमला का प्रवेश द्वार है एरुमेली नामक जगह। वहाँ पर एक जुमा मस्जिद है जो वावर पल्ली (मस्जिद) नाम से जानी जाती है। कहा जाता है कि वावर अय्यप्पन के सहयोगी थे। जहाँ इस वावर का मकबरा है उधर ही मस्जिद है। वहाँ मत्था टेके बिना शबरीमला की यात्रा पूर्ण नहीं मानी जाती। इस मस्जिद में प्रवेश करने वाले सभी तीर्थ यात्रियों को मस्जिदवाले माने इस्लामधर्म के भाई लोग सभी प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करते हैं। यह वर्षों से चली आने वाली प्रथा है, जो आज भी बिना किसी रुकावट के वैसे ही पाली जाती है। इसी तरह अय्यप्पन के दूसरे सहयोगी माने जाते हैं अरतुंगल गिरजाघर के पुरोहित। अरतुंगल गिरजाघर तो आलप्पुषा जिले में है। शबरीमला तीर्थ स्थान से वापस जानेवाले भक्त इधर आकर व्रत लेने के लिए पहने रुद्राक्ष माला हटाते हैं। ये गिरजाघर वाले भी उधर के तालाब को शबरीमला तीर्थयात्रा के पहले साफ करते हैं और तीर्थयात्रियों के लिए सभी प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करते हैं। वैसे हिन्दू, मुसलमान और इसाइयों के बीच का यह सांप्रदायिक सद्भाव केरल की सांस्कृतिक विरासत की खासियत है। एरुमेली से जोते ही शबरीमला की ओर तीर्थयात्री जाते हैं। पहाड़ी प्रदेश में चढ़ने के पहले वावर के मस्जिद के चारों ओर भ्रमण करते हुए पैसे अर्पित करते हैं और नारियल को भी फोड़ते हैं। मस्जिद के अंदर मुसलमान नमाज पढ़ते हैं तब बाहर हिन्दू भाई अपने विश्वास के आधार पर प्रार्थना करते हैं, सांप्रदायिक सद्भाव का यह अनूठा नमूना केरल की अपनी विशेषता है।

हर साल नवम्बर महीने के सत्रहवीं तारीख से

प्रतीक है, 'र' ज्ञान को जाग्रत करता है और 'ण' शान्ति प्रदान करता है। मन एवं तन को काबू में करने के लिए शरणमंत्र का अपना महत्व है। छान्दोग्योपनिषद् में प्रतिपादित 'तत्वमसि' (वह तुम ही हो) वाली उक्ति शबरीमला में पूर्णरूपेण सार्थक बनती है। इक्तालीस दिन के व्रत लेने के पहले जब भक्त रुद्राक्ष माला लेकर जनवरी महीने के चौहदवीं तारीख तक शबरीमला मंदिर के पर्व का समय माना जाता है। तब दुनिया भर के लोग शबरीमला अय्यप्पन के दर्शन के लिए आते हैं। भगवान अय्यप्पन के दर्शन के लिए इकतालीस दिनों का व्रत लेना पड़ता है। इसको 'मंडल' व्रत कहा जाता है। इस समय भक्तों को रोजाना दो बार नहाना पड़ता है, पूजादि कर्म करना पड़ता है। माँस खाना, स्त्रियों के संपर्क में आना, अपशब्द बोलना सब मना है। सिर्फ शाकाहारी होकर रहना पड़ता है। काले, नीले या गेरुए रंग के कपड़े पहनने पड़ते हैं। दाढ़ी, बाल, नाखून नही कटा सकते, शादी, जन्मदिन जैसे आयोजनों में शरीक नहीं हो सकते। तुलसी या रुद्राक्ष माला पहनते ही तैयारियाँ शुरू होती हैं। माला धारण करने पर भक्त स्वामी (भगवान) कहलाने लगता है। वैसे माला पहनकर, व्रत लेकर, सिर पर नैवेद से भरी पोटली (इरुमुडी) लेकर जो शबरीमला पहुँचता है, विश्वास के अनुसार उसकी मनोकामना पूरी होती है। शबरीमला में उत्सव के दौरान अय्यप्पन का घी से अभिषेक किया जाता है। शरण मंत्रों का उच्चारण होता है। पूजा अर्चना के बाद सबको चावल, गुड़ और घी से बना प्रसाद 'अरावणा' बांटा जाता है। अय्यप्पन के दर्शन की यात्रा में शरणमंत्र ही भक्त का साथ देता है। इस मंत्र का 'श' शत्रु संहार का पहनता है, तब से वह स्वामी या भगवान कहलाने लगता है। आत्मा और परमात्मा की एकता का प्रतीकात्मक दर्शन शबरीमला में प्राप्त होता है। सभी प्रकार के समभाव के लिए ख्याति प्राप्त इस मंदिर में दस साल से लेकर पचास साल तक की आयुवाली स्त्रियों को अय्यप्पा दर्शन वर्जित है क्योंकि अय्यप्पन बाल ब्रह्मचारी माने जाते हैं। अतः रजस्वला स्त्रियों को मंदिर में प्रवेश निषिद्ध है।

House No. -2, Alphonsa Meadows Thekkemala, P.o.Kozhecherry, Pathanamthitta, Kerala-689654
मोबाइल 9249932945
E-mail ; drsheenaeapen@gmail-com

औरंगजेब के सपने और छत्रपति संभाजी का बलिदान

डॉ उमेश प्रताप वत्स

दिल्ली के दरबार में तत्कालीन धर्मांध, साम्राज्यवादी, अत्याचारी एवं क्रूर शासक औरंगजेब की सत्ता थी जो तलवार के बल पर पूरे हिन्दुस्थान को मुगलिस्तान बनाने का ना केवल सपना देख रहा था अपितु सपने को पूरा करने के लिए हिन्दुओं पर कहर बनकर टूट रहा था। सत्ता का ऐसा नशा चढ़ा था कि अपने वालिद शहंशाह शाहजहाँ को ताउम्र अंधेर काल कोठरी में डलवा दिया और सगे भाई को फांसी देकर मौत के घाट उतार दिया था। फिर ऐसे सत्ता लोभी शासक से हिन्दू समाज सिवाय दमन के और क्या उम्मीद लगा सकता था। इतिहास गवाह है कि हर युग में भारत में हिन्दू धर्म की रक्षार्थ अनेक वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी है। छत्रपति शिवाजी के बड़े पुत्र सम्भाजी भी इस ऐतिहासिक विरासत के एक गौरवपूर्ण स्वर्ण हस्ताक्षर हैं।

मराठा साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज के सबसे बड़े पुत्र संभाजी महाराज स्वराज्य के पहले राजकुमार थे, जो मराठा साम्राज्य के दूसरे छत्रपति बने।

संभाजी का जन्म 14 मई सन् 1657 को पुरन्दर किले में माँ सई बाई की कोख से हुआ था। लेकिन सम्भाजी के 2 वर्ष के होने तक माता सई बाई का देहान्त हो गया था, इसीलिए बालक सम्भाजी का पालन-पोषण शिवाजी की माँ जीजाबाई ने किया था। सम्भाजी महाराज परिवार में छवा के नाम से जाने जाते थे, जिसका मराठी में अर्थ होता है शावक अर्थात शेर का बच्चा। सम्भाजी महाराज परमवीर होने के साथ-साथ प्रकांड पंडित, संस्कृत और आठ अन्य भाषाओं के ज्ञाता थे।

एक बच्चे के रूप में अपनी माँ का साया उठ जाने के बाद, राजमाता जीजाबाई ने शिवा की तरह ही सम्भाजी को भी संस्कारवान, चरित्रवान जैसे गुणों से तराश कर एक महान योद्धा बनाया।

शिवाजी महाराज की मृत्यु के बाद संभाजी महाराज ने स्वराज्य की बागडोर संभाली। रायगढ़ किले में संभाजी राजा का पूर्ण राज्याभिषेक 16 जनवरी 1681 में हुआ। हिन्दुस्थान में हिन्दवी स्वराज एवं हिन्दू पातशाही की गौरवपूर्ण स्थापना करने वाले छत्रपति शिवाजी महाराज के पुत्र छत्रपति संभाजी महाराज के जीवन को यदि चार पंक्तियों में संजोया जाए तो यही कहा जाएगा कि 'महा पराक्रमी परम प्रतापी, एक ही शंभू राजा था।'

संभाजी महाराज ने अपने पराक्रम के बल पर थोड़े समय में मराठा साम्राज्य का संगठन एवं विस्तार किया। संभाजी महाराज ने एक तरफ मुगल साम्राज्य के खिलाफ लड़ाई लड़ी जो मराठा साम्राज्य से 15 गुना ज्यादा थे। संभाजी राजे ने अपने कार्यकाल में सैकड़ों युद्ध लड़े। महत्वपूर्ण बात यह है कि संभाजी महाराज एक भी युद्ध नहीं हारे। ऐसा इतिहास रचने वाले एकमात्र योद्धा संभाजी महाराज ही थे। संभाजी महाराज ने गोवा के पुर्तगालियों, जंजिरिया के सिद्दीकी और मैसूर के चिक्कादेवराय के दुश्मनों को ऐसा सबक सिखाया कि उन्होंने संभाजी के खिलाफ औरंगजेब की मदद करने की हिम्मत नहीं की। साथ ही उनमें से कोई भी उनके

विरुद्ध नहीं हो सका। संभाजी राजा के नेतृत्व में मराठों ने एक तरफ सभी दुश्मनों से लड़ाई लड़ी।

औरंगजेब ने सोचा था कि शिवाजी महाराज की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का विस्तार पूरे हिन्दुस्थान में बढ़ेगा किन्तु मराठा साम्राज्य पर प्रचंड जीत की उम्मीद लगाए औरंगजेब संभाजी के रहते वर्षों तक एक भी जीत हासिल नहीं कर पाया। जिस कारण वह किसी भी हद तक जाकर मराठों को पराजित करना चाहता था। जिसके लिए सबसे बड़ी रुकावट संभाजी महाराज बने हुए थे।

सम्भाजी महाराज ने 9 वर्ष के शासन एवं अपने छोटे से जीवन काल में हिन्दू समाज के हित में बहुत बड़ी-बड़ी उपलब्धियाँ हासिल की थीं, जिसका प्रत्येक हिन्दू आभारी है। उन्होंने औरंगजेब की आठ लाख की सेना का सामना किया और कई युद्धों में मुगलों को पराजित भी किया। औरंगजेब जब महाराष्ट्र में यु द्धों में व्यस्त था, तब उत्तर भारत में हिन्दू शासकों को अपना राज्य पुन: प्राप्त करने और शांति स्थापित करने के लिए काफी समय मिल गया। इस कारण ही वीर मराठों के लिए सिर्फ दक्षिण ही नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र के हिन्दू उनके ऋणी हैं। क्योंकि उस समय यदि संभाजी औरंगजेब के सामने समर्पण कर लेते या कोई संधि कर लेते, तो औरगंजेब अगले 2-3 वर्षों में उत्तर भारत के राज्यों को वापिस हासिल कर लेता और वहाँ की आम प्रजा और राजाओं की समस्या बढ़ जाती है, यह संभाजी के सबसे बड़ी उपलब्धियों में गिना जा सकता है। जबकि केवल संभाजी ही नहीं अन्य राजाओं के कारण भी औरगंजेब दक्षिण में 25 सालों तक विभिन्न लड़ाईयों में उलझा रहा जिस कारण उत्तरभारत धीरे-धीरे उसके हाथ से निकलता रहा।

3 अप्रैल 1680 को रायगढ़ में शिवाजी महाराज की मृत्यु हो जाने पर मुगलों द्वारा संभाजी राजे को पन्हाला के पास कैद कर लिया गया था। संभाजी के कैद हो जाने पर रायगढ़ में षडयंत्रकारियों अन्नाजी दत्तो, मोरोजी पिंगले, बालाजी चिटनिस ने सोयाराबाई को अपने साथी के रूप में लिया और छोटे राजाराम महाराज को सिंहासन पर बैठाने की साजिश रची। दोनों ने मिलकर राजाराम महाराज को गद्दी पर बैठाया। संभाजी महाराज को पकड़ने के लिए हम्बीराव मोहिते को भेजा गया था। लेकिन सोयराबाई के भाई हम्बीराव मोहिते ने राजाराम का मामा होते हुए भी अपना राजधर्म निभाते हुए संभाजी महाराज को पन्हालगढ़ से छुड़ा लिया और तख्तापलट के खेल का पटाक्षेप कर दिया।

संभाजी महाराज ने रायगढ़ पर कब्जा कर लिया और स्वराज्य द्रोह का खेल खेलने वाले शासकों को कैद कर लिया। संभाजी महाराज को ताज पहनाया गया और वे शंभू राजे रियासत के दूसरे छत्रपति बने। संभाजी महाराज ने स्वराज्य के विरुद्ध षडयंत्र करने वाले शासकों को उदारतापूर्वक क्षमा कर दिया। 1681 में सोयाराबा की मृत्यु हो ग । उनका अंतिम संस्कार स्वयं संभाजी महाराज ने किया था। संभाजी महाराज ने अन्नाजी दत्तो को पेशवा के रूप में बहाल किया। बाद में संभाजी महाराज उन्हें बुरहानपुर ले गए, लेकिन अन्नाजी दत्तो ने साजिश करना बंद नहीं किया। जब 1681 में ही औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर ने दक्षिण भाग कर छत्रपति संभाजी महाराज का आश्रय ग्रहण किया तो अन्नाजी दत्तो ने औरंगजेब के शहजादे को भड़काकर उसे बहकाने की कोशिश की। लेकिन छत्रपति संभाजी महाराज की शरण में आए अकबर ने महाराज को इन सब तथ्यों से अवगत करा दिया। इसी तरह के घोटालों से तंग आकर संभाजी महाराज ने अन्नाजी दत्तो और उनके साथियों को मृत्युदंड दे दिया।

संभाजी ने हम्बीराव मोहिते की राज्यनिष्ठा को

देखते हुए उसे कमांडर -इन-चीफ नियुक्त किया।

उन्होंने अपनी आयु के केवल 14 वर्ष में बुध भूषण, नखशिख, नायिकाभेद तथा सातशतक यह तीन संस्कृत ग्रन्थ लिखे थे। संभाजी अकेले मुग़ल, पुर्तगाली, अंग्रेज़ तथा अन्य शत्रुओं के साथ लड़ते रहे और साथ ही उन्हें आंतरिक शत्रुओं से भी लड़ना पड़ा। संभाजी महाराज का जीवन एवं उनकी वीरता ऐसी थी कि उनका नाम लेते ही औरंगजेब के साथ तमाम मुगल सेना थर्राने लगती थी। कहा जाता है कि संभाजी के घोड़े की टाप सुनते ही मुगल सैनिकों के हाथों से अस्त्र-शस्त्र छूटकर गिरने लगते थे। यही कारण था कि छत्रपति शिवाजी महाराज की मृत्यु के बाद भी संभाजी महाराज ने हिन्दवी स्वराज को अक्षुण्ण बनाये रखा था।

वैसे शूरता-वीरता के साथ निडरता का वरदान भी संभाजी को अपने पिता शिवाजी महाराज से मानों विरासत में प्राप्त हुआ था। मराठों ने अत्याचारी, क्रूर, हैवान, दानव मुगल औरंगजेब की नाक में दम कर रखा था। वहीं औरंगजेब की गैर-मुस्लिमों के साथ बर्बरता चरम पर थी। स्वयं मराठों ने राजद्रोह कर संभाजी को औरंगजेब का बंदी बनने पर मजबूर किया और औरंगजेब ने ये कहते हुए कि ''अगर एक भी मुग़ल शहजादा संभाजी की तरह होता तो आज मुगलों का परचम पूरी दुनिया में लहराता।"

सम्भाजी अपनी शौर्यता के लिये बहुत प्रसिद्ध थे। उनके पराक्रम की वजह से परेशान होकर दिल्ली के बादशाह औरंगजेब ने कसम खायी थी कि जब तक छत्रपती संभाजी पकड़े नहीं जायेंगे, वो अपना मुकुट सर पर धारण नहीं करेगा।

संभाजी महाराज 1683 में पुर्तगालियों को पराजित कर किसी राजकीय कारण से संगमेश्वर में रहे थे। जिस दिन वे रायगढ़ के लिए प्रस्थान करने वाले थे उसी दिन कुछ ग्रामीणों ने अपनी समस्या बतायी जिसके चलते छत्रपति संभाजी महाराज ने अपने साथ केवल 200 सैनिक रख बाकी सेना को रायगढ़ भेज दिया। उसी समय उनके साले गनोजी शिर्के, ने गद्दारी कर मुग़ल सरदार मुकरब खान के साथ गुप्त रास्ते से 5,000 के फ़ौज के साथ संभाजी पर हमला कर दिया, यह वह रास्ता था जो केवल मराठों को पता था। इसलिए संभाजी महाराज को कभी नहीं लगा था कि शत्रु इस ओर से आ सकेगा। उन्होंने लड़ने का प्रयास किया किन्तु इतनी बड़ी फ़ौज के सामने 200 सैनिकों का साहस काम कर न पाया और अपने मित्र तथा एकमात्र सलाहकार कवि कलश के साथ वह बंदी बना लिए गये।

संभाजी से बुरी तरह खफा औरंगजेब ने उन्हें अपने कब्जे में पाकर क्रूरता और अमानवीयता की सारी हदें पार कर दी। लगभग 40 दिनों तक असहनीय यातना सहने के बावजूद, संभाजी राजा ने स्वराज्य और धर्मनिष्ठा के प्रति अपनी निष्ठा नहीं छोड़ी तो उनकी जुबान कटवा दी, आँखें निकाल दी। उन पर मुस्लिम धर्म को ग्रहण करने का दबाव डाला गया। बदले में औरंगजेब ने उन्हें जान बख्शने का भी वचन दिया। औरंगजेब का जो हरकारा ये प्रस्ताव ले कर संभाजी के पास आया उन्होंने उसके मुँह पर थूक दिया। 11 मार्च 1689 को औरंगजेब ने संभाजी और उनके साथी के शरीर के टुकडे-टुकड़े करवा दिए। हत्या से पूर्व औरंगजेब ने छत्रपति संभाजी महाराज से कहा के मेरे चार बेटों में से एक भी तुम्हारे जैसा होता तो सारा हिन्दुस्थान कब का मुग़ल सल्तनत में समाया होता।

जब छत्रपति संभाजी महाराज के टुकड़े तुलापुर की नदी में फेंकें गए तो उस किनारे रहने वाले शिवले लोगों ने शव के टुकड़ों को इकठ्ठा कर के सिलाई करके जोड़ दिया। शरीर के सभी अंगों को आपस में जोड़े जाने के बाद उनका विधिपूर्वक अंतिम संस्कार किया गया। स्वराज्य के स्वामी अनंत में विलीन हो गए। इतने अत्याचारों के बाद भी मराठों के राजा नहीं झुके। औरंगजेब के विरुद्ध युद्ध जारी रहा।

संभाजी महाराज की मृत्यु के बाद, राजाराम महाराज का राज्याभिषेक हुआ। शिवाजी महाराज और संभाजी महाराज द्वारा फैलाए गए स्वराज्य की शिक्षाओं को मराठों ने आगे बढ़ाया। धर्म के नाम पर देश मिटने के लिए आतुर था।

औरंगजेब ने सोचा था कि मराठी साम्राज्य छत्रपति संभाजी महाराज के मृत्यु के बाद समाप्त हो जाएगा किन्तु छत्रपति संभाजी महाराज की हत्या की वजह से सारे मराठा एक साथ आकर औरंगजेब से लड़ने लगे। अत: औरंगजेब को दक्खन में ही प्राण त्याग करने पड़े। उसका दक्खन जीतने का सपना इसी भूमि में दफन हो गया।

बड़े ही आश्चर्य की बात है कि आज भी उस हत्यारे, लुटेरे, पिशाच रूपी औरंगज़ेब के नाम पर भारत की तथाकथित सेकुलर राजनीति ने औरंगाबाद जैसे शहर बसा रखे हैं। आज भी देश के भटके हुए लोग उसकी इबादत करते हैं।

umeshpvats@gmail-com
यमुनानगर, हरियाणा
9416966424

बारिश में भीगते हुए सुना था नीरज जी को

-श्री कृष्ण शुक्ल

बात 1979-80 की है. उन दिनों कलैक्ट्रेट के ग्राउंड में 26 जनवरी के आस पास कवि सम्मेलन और मुशायरे का आयोजन होता था। मैं छात्र जीवन से ही इस कार्यक्रम में अवश्य जाता था। उस वर्ष भी गया। कार्यक्रम लगभग रात्रि आठ बजे प्रारंभ हुआ था। अध्यक्षता नीरज जी कर रहे थे, तथा मंच पर तत्कालीन जिलाधिकारी (नाम याद नहीं रहा) भी विराजमान थे। कुछ कवियों के काव्य पाठ के बाद लगभग दस बजे संचालक ने सुरेंद्र मोहन मिश्र जी को आमंत्रित किया। मिश्र जी माइक तक आए ही थे कि जिलाधिकारी ने रोक दिया तथा किसी अन्य कवि को बुलाने को कहा। संचालक बहुत समझदार थे, उन्होंने नीरज जी को आमंत्रित कर लिया. नीरज जी ने आते ही जिलाधिकारी से कहा कवि तो सम्मान का भूखा होता है, मिश्र जी तो बहुत सरल, सहज कवि हैं। इस तरह कविता और कवि का अपमान नहीं होना चाहिए। यह कहकर उन्होंने पुन: मिश्र जी को आमंत्रित किया और मिश्र जी ने रचनापाठ किया.

कहना न होगा कि जिलाधिकारी महोदय फिर थोड़ी ही देर में मंच से उठकर चले गए। फिर देर रात तक तमाम कवियों और शायरों की रचनाएँ होती रहीं। लगभग 12 बजे केवल खुमार बाराबंकवी तथा नीरज जी काव्य पाठ के लिए शेष थे कि बूंदें पड़ने लगीं जो धीरे धीरे तेज हो रहीं थी।

संचालक ने खुमार बाराबंकवी को आमंत्रित किया. उन्होंने केवल दो ही शेर पढ़े थे कि बारिश तेज होने लगी. लोग इधर उधर आड़ ढूँढने लगे. मैं मंच के बिल्कुल करीब जाकर खड़ा हो गया। वक्त की नजाकत को देखते हुए खुमार साहब ने अपना कलाम वहीं खत्म किया। तुरंत नीरज जी को आमंत्रित किया गया।

उन्होंने माइक पकड़ते ही कहा ये बूँदें नहीं स्वर बरस रहे हैं गीत बरस रहे हैं.बारिश तेजी पकड़ रही थी और उसी बारिश में हमने नीरज जी को सुना। लगभग पाँच मिनट नीरज जी ने कुछ रचनाएँ सुनाईं कारवाँ गुजर गया के भी कुछ अंश सुनाए, और जनवरी की उस ठंड में बारिश में भीगे हुए हम नीरज जी की पंक्तियों को गुनगुनाते हुए घर वापस आए।

नीरज जी को बाद में न जाने कितनी बार सुना। कवि सम्मेलन में उनके साथ काव्य पाठ का भी अवसर मिला। कई बार उनसे संवाद हुआ, लेकिन जनवरी की बारिश में उनको सुनने की वह स्मृति अविस्मरणीय है।

गीत ऋषि नीरज जी को शत् शत् नमन।

-मुरादाबाद

एक केरलीय कवयित्री का स्वर

समीक्षा : डॉ. आरसु

कृति : केरल प्रसून
कृतिकार : टी.एस. पोन्नम्मा
प्रकाशक: केरल साहित्य अकेडमी, लक्ष्मी नगर, पट्टोम, त्रिवेंद्रम-695004

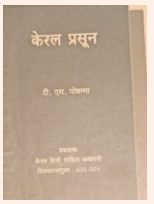

हिन्दी साहित्य के लिए केरलीयों का अवदान यह आज अद्यतन एक अलग विषय बन रहा है। कुछ गवेषकों का ध्यान इस विषय पर पड़ने लगा है। महिला लेखन का केरलीय संदर्भ एक उपजाऊ अध्ययन क्षेत्र है। केरल की कुछ कवयित्रियों के काव्य संकलन मेरे ध्यान में पड़े हैं। टी. एस. पोन्नम्मा, कौसल्या अम्माल, उमाकुमारी, सुवर्णलता आदि कवयित्रियों की रचनाएँ इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। उनके काव्य संकलनों पर केन्द्रित आलोचनात्मक अध्ययन भी आज आवश्यक लगता है।

टी. एस. पोन्नम्मा (जन्म 1928) जिला पत्तनमतिट्टा के कोषंचेरी गाँव में रहती हैं। तिरुवनन्तपुरम के हिन्दी प्रशिक्षण केन्द्र में वे अध्यापिका थीं। सेवा निवृत्ति के बाद वे सपरिवार अपने गाँव में ही रहती हैं। कालिकट की भाषा समन्वय वेदी हर साल हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर बुजुर्ग पीढ़ी के हिन्दी सेवियों का सम्मान करती हैं। मेरी एक प्रिय छात्रा डॉ. शीना एप्पन सेंट थॉमस कॉलेज के हिन्दी विभाग में सेवारत थी। उसने मुझे टी. एस. पोन्नम्मा की हिन्दी सेवा की जानकारी दी थी। वर्ष 2000 के समारोह में उनको सम्मान देने का निर्णय कालिकट की समिति ने लिया था। पोन्नम्मा के स्वास्थ्य की स्थिति को ध्यान में रखकर उनके घर जाकर पुरस्कार देने का निर्णय लेना पड़ा था ।

तब मुझे काफी आश्चर्य हुआ। उधर की पंचायत समिति के नेतृत्व में विराट आयोजन हुआ था। गाँव के लिए वह पुरस्कार समारोह एक बड़ा त्योहार बन गया था। पास-पड़ोस के लोगों ने बड़ी खुशी से उस समारोह में भाग लिया था। युवा प्राध्यापिका शीना ने पोन्नम्मा का विस्तृत परिचय दिया। अपनी हिन्दी सेवा को मिले अंगीकार पर पोन्नम्मा बड़ी प्रसन्न हुई थीं। समारोह के बाद उन्होंने अपना काव्य संकलन 'केरल प्रसून' की एक प्रति भेंट की थी। केरल हिन्दी साहित्य अकादमी ने 1998 में इसका प्रकाशन किया था। पचास कविताएँ इसमें संकलित हैं। मैंने डायरी में कुछ कविताओं की पंक्तियाँ चुनकर नोट कर ली थीं। फिर समय मिला तो एक आस्वादन लिखूँगा ऐसा सोचा था। केरलीयता की छवियाँ कई कविताओं में उभर आई हैं। केरल में रहकर हिन्दी में लिखते समय ऐसे प्रसंग आना अनिवार्य भी हैं। उत्तर भारत के कवियों के लिए गंगा पुलक और प्रेरणा का स्रोत है। पोन्नम्माजी की प्रथम कविता का शीर्षक पंपा नदी है। जननी-जग जननी, वासंत श्री जैसे विशेषणों से कवयित्री ने पंपा को निभूषित किया है। केरलीयता के पहचान चिह्न नारियल, धान, जल, मेला आदि का उल्लेख कविता की सहजता को बढ़ाते हैं। संध्या, वर्षा ऋतु, तिरुओणम आदि के वर्णन में केरलीयता की अविस्मरणीय छवियाँ देख सकते हैं ।

''आरनमुला का मणिमय मंदिर
शबरीमला जग विश्रुत मुक्तिधाम
देवालय हैं पंपा लालित
पाते मुक्तिपद भक्त निष्काम।"

ये पंक्तियाँ कवयित्री के उस प्रदेश से सामाजिक लगाव के निशान हैं। प्रकृति की सुन्दरता की कामना करने वालों के मन में आज कुछ आशंकाएँ भी भर जाती हैं। प्रकृति प्रदूषित होती जा रही है। कविता की अंतिम पंक्तियाँ हैं

''गंदगी तुझमें भरने लगी है

सुधा में ज़हर का सान्निद्य हुआ है
तो भी रोगग्रस्त केरल प्रकृति की
मृतसंजीवनी है तू प्रिय तरंगिणी!"

केरल में हुए नवोत्थान को कई आचार्यों का प्रज्ञाबल मिला था। श्री नारायण गुरु, विद्याधिराज और वाग्भटानंद उनमें प्रमुख थे। अनाचार और अंधविश्वास के तिमिर से केरलीयों के मानस को मुक्ति देने के लिए उनके आदर्श प्रेरक बने थे। पूजा अर्चना और आद्यात्मिकता के संसार से जुड़े रहकर उन्होंने सामाजिक जीर्णताओं को मिटाने के लिए अथक परिश्रम किया था। ऐसे आचार्यों की स्मृति को तरोताजा बनाना भी कवयित्री अपना काव्यधर्म समझ लेती है। अनंतपुरी के कोल्लूंर गाँव में जन्म विद्याधिराज ने ज्ञान और धर्म का सही सबक अपने समाज को दिया था। 'तीर्थपाद विद्याधिराज' में इस साधक सुधारक मनीषी का कार्यक्षेत्र चर्चित हुआ है। उनकी विशेषताएँ हैं

'अंधकार मिटाया मन का
जलाया दीप आत्मज्ञान का
तू है अभिनव युग निर्माता
तू है पावन प्रेम देवता ।"

दुर्गापूजा, दीपावली, उगधि, बिहु, गणगौर मेला, बैसाखी, पोंगल, दशहरा जैसे कई त्योहार भारत के भिन्न भागों में लोग मनाते हैं। इन त्योहारों से जुटकर कुछ दंतकथाएँ और जनश्रुतियाँ फेली हैं। कुछ जीवनादर्श और मूल्यों पर वे त्योहार बल देते हैं। केरल के संदर्भ में उनके टक्कर का त्योहार है ओणम । यह श्रावण को ध्वनित करता है। महाभारत में इसकी कहानी का बीज मिलता है। महाबली, वामन, विष्णु इस कथा के पात्र हैं। प्रतिज्ञा पालन के लिए प्रतिबद्ध होने की स्थिति में प्रजावत्सल असुरराज महाबली को पाताल जाना पड़ता है। साल में एक बार प्रिय जनता को साक्षात देखने की कामना महाबली, महादंड भोगते समय प्रकट करते हैं। उस अनुरोध को अनुमति मिली। इसकी स्मृति में केंद्रीय जनता ओणम मनाती है। पोन्नम्मा की कविता 'ओणम महोत्सव' में उस जमाने का पूरा वर्णन है।कथा के रेशे-रेशे को महीन बुनने की उनकी कोशिश सराहनीय है। लोग पूर्व महाराजा के स्वागत में, महाबली की पुण्य स्मृति में मनाते आए ओणम की सहजता पर आज लांछन पड़ता है। बनावटी समृद्धि चैनलों पर अधिक ध्यान, आम्फर का प्रलोभन आदि इसके कारण हैं। ऐसे दोषों की ओर भी कवयित्री ने व्यंग्य बाण छोडा है।

'रामायण पारायण' एक अनूठी कविता है ।केरल में एक अनोखी परंपरा कायम है। गरीबी और कठिना का महीना है कर्कटकम है। मलयालम के रामायणकार एषुत्तच्छन कृत अध्यात्म रामायण का परायण पूरे महीने में होता है। मंदिरों में भी यह प्रथा प्रचलित है। इस प्रथा का विवरण रामायण पारायण कविता में पाठकों को मिलता है। मन को भव्य परिणाम मिले का संकेत करते हुए कविता का आरंभ हुआ है ।

'नौका में रामायण की
पार किया दु:ख सागर भक्तों ने
फैल गई रोशनी भीतर
निखर उठा कर्तव्य मार्ग अन्दर
तमोगुण दिल का हो गया दूर ।"

केरलीय जनमानस की खबी को समेटनेवाली यह कविता बहुत प्रभावशाली है। शबरीमला का अय्यप्पमंदिर केरल का एक मशहूर तीर्थस्थान है। इधर मकरज्योति देखने के लिए भारत के कोनो-कोने से भक्त आते हैं। एरूमेलि का यह देवालय धार्मिक एकता के लिए प्रसिद्ध है। अय्यप्प शरणम, स्वामीशरणम का कीर्तन आलापते हुए यहाँ भक्त आते हैं। इक्तालीस दिनों का व्रत रखकर भक्त तन-मन, प्राण से पवित्र बनते हैं। अठारह सीढ़ियाँ चढ़कर भक्त सन्निधानम में पहुँचते हैं। ऐसे भक्तों के तीर्थस्थान का वर्णन 'मानव महासंगम' कविता में मिलता है। युक्ति से नहीं भक्ति से इसका महत्व अनुभव कर सकते हैं। इस मंदिर से जुड़ी कहानियाँ 'धागा' कविता में मिलता है। अय्यप्पमंदिर के बारे में कवयित्री का निरीक्षण इस प्रकार है

'नित्य वसंत सुशोभित उपवन
अष्टादश हैं मुनि मन मोहन

अष्टादश हैं कांचन सोपान
सब पार करके आते हैं जनगण।'

रामायण, महाभारत जैसे पावन ग्रन्थों के कुछ प्रकरण परवर्ती युग के कवियों को भी प्रेरणा देते आए हैं। वह धारा आज भी अनुस्यूत है। पोन्नम्माजी की कविता रामायण पारायण केरल में प्रचलित उस सात्विक परंपरा का परिचय देती है। लेकिन वामन और महाबली का प्रसंग इसके अंत में रखना उचित नहीं लगता ।

ययाति और गाँधारी जैसे पुराण पात्रों के लिए अर्पित कविताएँ भी उल्लेखनीय हैं। यौवन दान का प्रसंग 'ययाति' में आया है। काम-इतिहास का अद्वितीय नायक कहकर कविता समाप्त होती है। 'नेत्र त्याग' गांधारी पर केन्द्रित कविता है। अंधेपन को गांधारी ने क्यों स्वीकार किया इस पर कई संदेह कवयित्री प्रकट करती हैं।

'पति सेवा है क्या?
ऐसा किया तूने क्यों?
पति की शंका निवृत्ति के लिए?
या समाज की असूया निवृत्ति के लिए?
क्या बताएगा भविष्य?'

देश की स्वतंत्रता की अर्थवत्ता आज जनता खो बैठी है। राजघट की समाधि पर खड़ी होकर कवयित्री आज की दुरवस्था पर सोचती है। उनकी कामना है कि महात्मा गाँधी के पुनरावतार से ही इससे मुक्ति संभव होगी। आज की हालत है

'असत्य हिंसा हथियार हैं हमारे
अब अनीति, अत्याचार, धोखेबाजी का राज है
हरिजन, नारी और पीड़ित पर अत्याचार है।'

'समन्वय' और 'भारत एक हम एक' राष्ट्रप्रेम की कविताएँ हैं। 'उत्तिष्ठत: जाग्रता' में स्त्री की मुक्ति चेतना का आह्वान है। चलो हिमालय, चीनी आक्रमण के अवसर की कविता है। फूल का संदेश, कभी न देखो, आम का पेड़ सागर तट पर आदि कविताओं में इतिवृत्त का बोझ नहीं है। वे हल्की और आनन्ददायक हैं। आत्मनिष्ठता के कारण अनुभूतियों की फुलझडियाँ इसमें अधिक चमक उठती हैं।

केरल प्रसून की अधिकांश कविताएँ कोमल भावनाओं की मंजूषा हैं। इतिहास और पुराण प्रसंगों को समेटने वाली कविताओं में बौद्धिक अभ्यास के अंश भी जाए हैं। इधर अपनी जीवन दृष्टि के परागकण कवयित्री अधिक प्रकट नहीं कर पाई हैं। आशा और प्रसाद के वातावरण का सान्निध्य इन कविताओं को आस्वाद्य बना देता है। केरल की संस्कृति की दीप्ति का समावेश सराहनीय है।

आज की हिन्दी कविता यानि हिन्दी भाषी कवियों की मुख्य धारा में 'केरल प्रसून' की कविताओं को उधर के पाठक, लेखक स्थान नहीं दे पायेंगे। गगन गिल, सुनीता जैन, कात्यायनी, सुमन वशिष्ठ जैसी कवयित्रियों की कविताओं से ये रचनाएँ तालमेल नहीं रख पाएँगी। 'कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगुआ तेली' वाली बात होगी। हिन्दी कविता को भारतीय कविता के रूप में विकसित करना है। हिन्दीतर भाषी कवियों की रचनाओं का भी तहे दिल से स्वागत करना है। नदियाँ बहकर सागर में विलीन हो जाती हैं। भिन्न प्रांतीय भाषाओं की संस्कृति और अभिव्यक्ति के रूपों का भी ख्याल करने से ही भारतीय साहित्य का विकास संभव होगा। अकेला स्नेह भरा दीप हमेशा ऐसा न रहेगा। मुद्रण की साज सज्जा ले आउट भी पठनीयता की दृष्टि से वांछनीय है। 'केरल प्रसून' में बाहरी तौर पर ऐसी चमक दमक नहीं है। लेकिन संवेदना, काव्यविवेक और सांस्कृतिक उदात्तता की दृष्टि अधिक महत्वपूर्ण है। यह संकलन अंर्तदृष्टि और काव्य उदात्तता की दृष्टि से चर्चित हो जाना चाहिए।

डॉ. आरसु (विज़िटिंग प्रोफेसर, गाँधी चेयर,
कलिकट विश्वविद्यालय)
साकेत, चेलेम्ब्रा पी.ओ.,
मलप्पुरम, केरल-673634

हिन्दी पत्रिका रचना उत्सव के केरल अंक का विमोचन करते केरल के राज्यपाल महामहिम आरिफ मोहम्मद खान

साहित्य मण्डल, श्रीनाथद्वारा राजस्थान द्वारा पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह 2022 के अवसर पर.. "हिन्दी साहित्य मनीषी " की मानद उपाधी से विभूषित किया गया...

पत्रिका पंजीकरण संख्या – TELHIN/2008/30044